



अहिंसक-नैतिक चेतना का अग्रदूत पाक्षिक

अणुव्रत

वर्ष : 55 ■ अंक : 7 ■ 1-15 फरवरी, 2010

संपादक : डॉ. महेन्द्र कर्णावट
सहयोगी संपादक : निर्मल एम. रांका

अणुव्रत में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक/प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है।

□ सदस्यता शुल्क :

- ◆ एक प्रति : बारह रु.
- ◆ वार्षिक : 300 रु.
- ◆ त्रैवार्षिक : 700 रु.
- ◆ दस वर्षीय : 2000 रु.

□ विज्ञापन सहयोग :

- ◆ द्वितीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- ◆ तृतीय मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- ◆ चतुर्थ मुख पृष्ठ 'रंगीन' : 10,000 रु.
- ◆ साधारण पृष्ठ 'पूरा' : 3,000 रु.
- ◆ साधारण पृष्ठ 'आधा' : 2,000 रु.

□ सम्पर्क सूत्र :

अणुव्रत महासमिति
210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग,
नई दिल्ली 110002

दूरभाष : (011) 23233345

फैक्स : (011) 23239963

E-mail: anuvrat_mahasamiti@yahoo.com

Website: anuvratinfo.org

इस अंक में

◆ भाषा है व्यक्तित्व का आईना	आचार्य तुलसी	3
◆ धर्म की गहराई को समझें	आचार्य महाप्रज्ञ	5
◆ धुएं का गहराता खतरा	नरेन्द्र देवांगन	8
◆ कैसे मिले सुख, शांति आनन्द	नीना राठौड़	10
◆ शासकीय कार्यालयों में मुस्कान की शर्त	सत्यनारायण भटनागर	12
◆ खूनी होते खून के रिश्ते	द्वारकेश भारद्वाज	14
◆ विवाह है या आडम्बर	भूरचंद जैन	15
◆ टी.वी. के शिकंजे में फंसते मासूम बच्चे	अनिल कुमार	17
◆ नशे की दुनिया	चुन्नीलाल बंसल	18
◆ स्वस्थ जीवन और प्राणायाम संतुलन	मुनि किशनलाल	20
◆ जीवन को जीने का दिशाबोध	पी.डी. सिंह	24
◆ बस चुप रहता हूँ	जसविन्दर शर्मा	26
◆ सभ्य समाज में कलंक	हीरालाल छाजेड़	27
◆ किसान का सच	डॉ. रामसिंह यादव	28
◆ विकास के नए मापदण्ड	डॉ. रामप्रताप गुप्ता	30
■ स्तंभ		
◆ संपादकीय		2
◆ राष्ट्र चिंतन		7
◆ कविता		11, 19, 22, 23,
◆ झाँकी है हिन्दुस्तान की		25
◆ अणुव्रत आंदोलन		33-39
◆ पाठकों के स्वर		39
◆ कृति		40

सामाजिक व्यवस्थाएं सादगीयुक्त हों

व्यक्तियों का वह समूह जिसकी समान विचारधारा हो, समान उद्देश्य हो और एक नेतृत्व में बंधा हुआ हो वह समाज कहलाता है। इसी परिभाषा को स्वीकारते हुए भारतीय समाज विभिन्न वर्गों में बंटा जिसका आधार धर्म, सम्प्रदाय, जाति रहा। आजादी के बाद समाज-व्यवस्था भी टूट रही है। शिक्षा एवं स्वतंत्रता के परिपार्श्व में हमने स्वस्थ सामाजिक मूल्यों को भुलाकर आयातित सांस्कृतिक मूल्यों को महत्व दिया जिसके कारण क्या नगर, क्या गांव सभी जगहों पर स्वच्छंदता बढ़ी और परिवार-समाज टूटन के कगार पर पहुंच गया।

गांवों एवं नगरों में सामाजिक मर्यादाओं का जो हथुआ हुआ है हो रहा है, उससे विषमताओं की विषबेल तेजी से अपने पाँव पसार रही है और जाने-अनजाने समूचा भारतीय समाज वर्ग संघर्ष की ओर तेजी से बढ़ रहा है। जन्म-विवाह एवं मृत्यु पर होने वाले सामाजिक समारोह में जिस तरह से बदलाव आया है उससे समाज का अस्तित्व ही दाँव पर लग गया है। तीन दशक पूर्व अर्थात् 1980 तक सामाजिक समारोह भाईचारा, प्रेम, आपसी सौहार्द के प्रतीक होते थे पर आज स्थितियां बदल गई हैं। अब ये आयोजन झूठी मान-मर्यादा और प्रतिष्ठा के प्रतीक बन चले हैं।

सामाजिक अवसरों पर हर व्यक्ति अपने अहं को प्रदर्शित कर रहा है व्यवस्था के नाम पर, व्यंजनों के नाम पर और लेन-देन के नाम पर। प्रदर्शन और आडम्बर की यह बीमारी एक-एक हो अब महामारी के रूप में फैलती जा रही है।, जिसकी चपेट में हर धर्म-सम्प्रदाय और जाति आ चुकी है। बढ़ता आतिशबाजी का शौक, महंगे होटलों में आयोजन करने की मारामारी, व्यंजनों की बढ़ती कतार, मायरे देहेज से वजनी होते स्वर्णायुक्त सूटकेस, व्यसनयुक्त होते समारोह, फूहड़-भौंडे नृत्य-गीतों की बहार किसी एक जाति विशेष में ही नहीं वरन् सभी जातियों में पांव पसार चुकी है और इस तरह जन्म व वैवाहिक अवसरों पर होने वाले भव्य सामाजिक आयोजन आडम्बर के प्रतीक बनते जा रहे हैं।

इन बढ़ते सामाजिक आडम्बरों को देख इस बात पर सहसा विश्वास नहीं होता कि भारत में रहने वाला हर तीसरा व्यक्ति गरीबी रेखा के नीचे जीवन व्यतीत कर रहा है और परिवार के किसी एक सदस्य की मासिक आमदनी दस हजार रु. से कम है। आज भी देश के करोड़ों बच्चों को दो जून की रोटी नसीब नहीं होती और देश की एक चौथाई आबादी भूखमरी की चपेट में है। एक तरफ भूखमरी-बेरोजगारी का यह करुणामय दृश्य और दूसरी तरफ झूठी मान-मर्यादा और प्रतिष्ठा के आडम्बरयुक्त काले दृश्य हमारी समाज व्यवस्था को ही झुठला रहे हैं जिसके मूल में है अर्थ। अर्थ-सम्पन्न व्यक्तियों की सरलता एवं सहजता स्वस्थ समाज का निर्माण करती है और उनका अहं समाज में वर्ग संघर्ष की स्थितियां पैदा करता है।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ का नववर्ष पर प्रदत्त यह संदेश हमारा मार्ग दर्शन कर रहा है गरीबी, बेरोजगारी और भूखमरी ये तीन समस्याएं मानवता का उपहास कर रही हैं। इनके अनेक कारण हो सकते हैं पर मेरी दृष्टि में इन समस्याओं का मूल कारण है करुणा और संवेदनशीलता का अभाव। यदि करुणा का विकास हो तो ऐसा हो नहीं सकता।

मानवीय संवेदनाओं एवं करुणा की सूखती गंगोत्री को पुनःप्रवाहित कर सामाजिक मूल्यों को बचा, हम स्वस्थ समाज के सपने को आकार दे सकते हैं। मूल्यवान समाज व्यवस्था को बनाये रखने के लिए आवश्यक है कि अर्थ का वर्चस्व टूटे और व्यक्ति वर्चस्व बढ़े। **मोड़ एवं मरोड़ में करोड़ों व्यक्ति अकाल मृत्यु की गोद में समा गये, इस सच्चाई को हम समझने का प्रयास करें। सामाजिक व्यवस्थाओं का सरलीकरण एवं सादगी ही टूटते समाज को बचा पायेगी।**



■ डॉ. महेन्द्र कर्णावट

भाषा व्यक्तित्व का आईना है। कौन व्यक्ति किस भाषा में बोलता है, इसके आधार पर उसके व्यक्तित्व का अंकन किया जाता है। मितभाषिता व्यक्तित्व का एक गुण है। कम शब्दों में अधिक बात कहने की कला विरले व्यक्तियों में होती है। जो व्यक्ति इस कला में निष्णात होते हैं, वे अपनी ऊर्जा का व्यय किए बिना काम करते रहते हैं।

भाषा है व्यक्तित्व का आईना

आचार्य तुलसी

मनुष्य के पास भावों की अभिव्यक्ति के जितने साधन हैं, भाषा उनमें बहुत सशक्त साधन है। बोलने की क्षमता दो इन्द्रियों वाले प्राणियों को प्राप्त हो जाती है। किन्तु द्वीन्द्रिय से लेकर पंचेन्द्रिय तक के प्राणियों में मनुष्य की तरह सोचने वाला दूसरा कोई प्राणी नहीं है। मनुष्य के मस्तिष्क में कुछ ऐसे तत्त्व या रसायन हैं, जिनके कारण उसकी स्मरण शक्ति और कल्पना शक्ति का विकास संभव है। अन्य प्राणियों में वैसी क्षमता नहीं होती। इसलिए उनकी सोच का दायरा बहुत सीमित होता है। सामान्यतः चिंतन स्व तक रहता है, जबकि भाषा का उपयोग दूसरों के लिए होता है।

भाषा एक उपलब्धि है। इसका सदुपयोग भी हो सकता है और दुरुपयोग भी। सदुपयोग करने वाले लोग कम होते हैं। दुरुपयोग करने वालों की संख्या एकत्र करना कठिन है। वे लोग इतना बोलते हैं कि बोलते ही जाते हैं। बोलने की अपेक्षा है या नहीं, इस बिन्दु पर विचार किए बिना निरन्तर बोलते जाना शक्ति का सदुपयोग कैसे हो सकता है?

भगवान महावीर सत्य के द्रष्टा ही नहीं, प्रवक्ता थे। उन्होंने साधक के लिए भाषा का पूरा विवेक दिया। कब बोलना चाहिए? कैसी भाषा बोलनी चाहिए? इस संदर्भ में उनका निर्देश था “बिना पूछे कुछ भी न बोले। कोई पूछे, जिज्ञासा करे तो असत्य न बोले। कही हुई बात कोई न माने तो उस पर

आवेश न हो। आवेश उत्पन्न हो जाए तो उसे विफल कर दिया जाए। प्रिय या अप्रिय जो भी प्रसंग उपस्थित हो, उसे सहन किया जाए।”

भगवती आराधना में उक्त पद्य की व्याख्या इस प्रकार की है साधक जब तक अपुष्ट हो, अपरिपक्व हो, तब तक उपदेश न दे। परिपक्वता के बाद उपदेश देने का प्रसंग आए तो असत्य का संभाषण न करे। सत्य बात कहेंगे पर कोई गुस्सा करे तो उसको सफल न करे। प्रिय-अप्रिय परिस्थितियों को शांति से सहन करे।

क्रोध व्यक्ति के विवेक चक्षु को बन्द कर देता है। क्रोध की स्थिति में न तो वह शांति से सोच पाता है और न बोलने का विवेक रख पाता है। माँ अपने पुत्र को कितना प्यार करती है, किन्तु वही जब क्रोधाविष्ट होती है, उसे गाली दे देती है। एक बालक उत्पात मचा रहा था। उसकी माँ परेशान हो गई। कुछ और भी कारण थे। वह आग-बबूला हो उठी। उसी समय उसका पुत्र उसके पास आ गया। उसने गुस्से में उसके दो चपत जड़ दिये और कहा ‘इसे मौत भी नहीं आती। मर जाए तो मेरा पिण्ड छूटे।’

दूसरे दिन बालक अच्छा काम करके आया। माँ ने उसको आशीर्वाद देते हुए कहा ‘बेटा! चिरजीवी बनो।’ बालक समझदार था। उसने अपनी माँ से पूछा ‘माँ कल तुम कह रही थीं कि मैं मर जाऊँ तो ठीक रहे और आज तुम

मुझे दीर्घजीवी होने का आशीर्वाद दे रही हो। वह क्या है?’ माँ को अपनी भूल का अहसास हो गया। वह बोली ‘बेटा! कल तेरी माँ नहीं बोल रही थी। उसके भीतर चाण्डाल बोल रहा था।’

व्यक्ति सफलता की आकांक्षा रखता है। पर ऐसे प्रसंगों में क्रोध को सफल बनाना श्रेयस्कर नहीं हो सकता। इसी दृष्टि से कहा गया है कि क्रोध को असफल करो।

किसी के साथ वार्तालाप करना हो, किसी को प्रतिबोध देना हो अथवा किसी की आलोचना करनी हो, शब्दों का प्रयोग बहुत सोच-समझकर करना चाहिए अन्यथा व्यक्ति अपने ही शब्दजाल में ऐसे फंसता है कि उसके सामने मुसीबत खड़ी हो जाती है।

दो पंडित साथ-साथ पढ़े और साथ-साथ ही एक सेठ के घर भोजन के लिए आमंत्रित हुए। वे वर्षों तक साथ रहने पर भी एक-दूसरे से ईर्ष्या करते थे। सेठ के घर पहुँचकर दोनों ने थोड़ी देर विश्राम किया। उनके साथ थोड़े से संपर्क से सेठ उनके स्वभाव को पहचान गया। अपनी समझ को प्रमाणित करने के लिए उसने दोनों पंडितों के साथ अलग-अलग बात करने का निर्णय लिया।

भोजन का समय होने वाला था। एक पंडित स्नान करने गया। सेठ ने दूसरे पंडित से कहा ‘पंडितजी! आप विद्वान् हैं। आपके बारे में मैंने बहुत

सुना है आपके साथ जो पंडित आए हैं, वे कैसे हैं?’

पंडित अपनी प्रशंसा सुनकर पुलक उठा। वह बोला ‘सेठ साहब! उसके बारे में आपको क्या बताऊँ? वह तो बना-बनाया बैल है। कुछ नहीं जानता। रास्ते में साथ हो गया इसलिए खाने-पीने की व्यवस्था हो गयी। अन्यथा इसे कौन पूछता है?’ यजमान ने कहा ‘पंडितजी! आपका आभार मानता हूँ। आपने मुझे सही-सही जानकारी दे दी। मैं तो कुछ जानता ही नहीं हूँ।’

कुछ समय बाद पंडित स्नान कर आ गया। उसके आने पर दूसरा स्नान करने गया। यजमान बोला ‘पंडितजी! मैं बहुत भाग्यशाली हूँ। आप जैसे महान् पंडित के चरण मेरी झोपड़ी में टिके। आपके दर्शन कर मैं कृतार्थ हो गया। आपके साथ जो एक और पंडित आए हैं, उनका क्या परिचय है?’ पंडित ने सोचा ‘यजमान भोला है। दोनों को बराबर समझेगा तो एक समान दान-दक्षिणा देगा। इसे जो कुछ देना है, सब मुझे मिल जाए, ऐसा उपाय करना है। अपनी सोच के अनुसार योजना बनाकर उसने कहा ‘सेठ साहब! वह पंडित क्या है, बना-बनाया गधा है। न तो वह कुछ जानता है और न उसमें कुछ क्षमता है। वह तो केवल माल उड़ाना जानता है।’

सेठ ने दो काष्ठ पट्टे बिछाए। उस पर दो गद्दे बिछाए। दोनों पंडितों को भोजन के लिए बिठाया। चांदी के थाल लगवाए। पर उसने उनमें परोसा क्या? एक में भूसा और एक में घास। पंडित अपने भोजन में भूसा और घास देख स्तब्ध रह गए और वे बोले ‘सेठ साहब! यह कैसी मजाक है?’ सेठ ने कहा ‘पंडितों के साथ मजाक करने की धृष्टता में कैसे कर सकता हूँ?’ पंडित बोले ‘हमको क्या परोसा है?’ सेठ ने कहा ‘मैं तो आपको पहचानता नहीं। आप दोनों ने एक-दूसरे का जो परिचय दिया, उसी के अनुसार खाने की व्यवस्था की गयी है। बैल का

भोजन भूसा है और गधे का भोजन घास है।’

दोनों पंडितों के सिर शर्म से झुक गए। अब वे कहीं तो क्या कहें? हाथ कमाया कामणा, किणनै दीजे दोष? दोनों को एक साथ जीवन का नया बोधपाठ मिल गया। दूसरों को बुरा बताने वाला स्वयं अपनी बुराई प्रकट करता है। दूसरे के बारे में ऐसे अभद्र शब्दों का प्रयोग करने वाला अपनी अभद्रता को प्रकट करता है। दोनों पंडितों ने क्षमा मांग वहां से विदा ली। दोषपूर्ण भाषा का प्रयोग करने के कारण उन्हें कठिनाई का सामना करना पड़ा।

भाषा गुणात्मक भी होती है और दोषपूर्ण भी होती है। किस भाषा का क्या प्रभाव पड़ेगा, इसे समझे बिना बोलने वाला अनर्थ कर बैठता है। इसलिए भगवान् ने कहा है “भाषा के गुणों और दोषों को जानकर दोषपूर्ण भाषा का सदा वर्जन करने वाला प्रबुद्ध हितकर और अनुकूल वचन बोले।”

भाषा व्यक्तित्व का आईना है। कौन व्यक्ति किस भाषा में बोलता है, इसके आधार पर उसके व्यक्तित्व का अंकन किया जाता है। मितभाषिता व्यक्तित्व का एक गुण है। कम शब्दों में अधिक बात कहने की कला विरले व्यक्तियों में होती है। जो व्यक्ति इस कला में निष्णात होते हैं, वे अपनी ऊर्जा का व्यय किए बिना काम करते रहते हैं। अधिक बोलने की आदत साधना की दृष्टि से उचित नहीं है, शिष्टता भी इसे ठीक नहीं मानती। सत्य सीमित और हितकर भाषा का मूल्य हर परिस्थिति में सुरक्षित रहता है।

अधिक बोलने वाले व्यक्ति की बात पर कम ध्यान दिया जाता है। वह कोई महत्वपूर्ण सूचना देता है, उसके प्रति भी उपेक्षा बरती जाती है। कुछ लोग तो यहां तक कह देते हैं ‘अधिक बोलने वाले, अधिक पुत्रियों के पिता और दो गांवों में घर बसाने वाले व्यक्ति पर मुसीबतों का पहाड़ टूट पड़ता है।

ऐसे व्यक्तियों को कोई क्या मारेगा? उन्हें तो स्वयं भगवान् (कुदरत) ही मार देते हैं।’

भाषा का संबंध वाणी और लेखनी दोनों के साथ है। भाषा वह सेतु है, जो व्यक्ति को समाज के साथ जोड़ता है। भाषा न हो तो एक-दूसरे के भावों को समझने के लिए केवल संकेत ही बचा रहता है। भाषा की तुलना में संकेत बहुत दुर्बल रह जाता है। भाषा के साथ संकेत का उपयोग होने से अभिव्यक्ति और अधिक सशक्त बन जाती है।

भाषा के चार प्रकार हैं सत्य, असत्य, मिश्र और व्यवहार। जो तत्त्व जैसा है, उसको वैसा ही समझना और उसी रूप से प्रतिपादित करना सत्य भाषा है। यथार्थ निरूपण का नाम असत्य भाषा है। मिश्र भाषा वह है, जिसमें सत्य और असत्य दोनों का मिश्रण होता है। जो भाषा न सत्य हो और न असत्य हो, वह व्यवहार भाषा है। आदेश, उपदेश आदि देना व्यवहार भाषा का प्रयोग है। इसके अनेक प्रकार हैं यह काम करो, अमुक वस्तु लाओ, क्या सूर्योदय हो गया है, जीव-अजीव आदि नौ तत्त्व हैं, क्रोध नहीं करना चाहिए।

असत्य और मिश्र भाषा के प्रयोग से पाप कर्म का बंधन होता है। मुनि के लिए इन भाषाओं का प्रयोग निषिद्ध है। सत्य और व्यवहार भाषा का प्रयोग विहित है। पर उसमें भी विवेक आवश्यक है। अप्रिय या मर्म को प्रकट करने वाले सत्य का प्रयोग सम्मत नहीं है। इस प्रकार की सत्य भाषा भी हितों को विघटित कर सकती है।

मौन अच्छा है, बोलना भी अच्छा है। विवेकरहित मौन और संभाषण दोनों ही अच्छे नहीं होते। इसलिए बोलने से पहले और बोलते समय सूक्ष्म बृद्धि से काम लेना जरूरी है। जो व्यक्ति बोलने में विवेक रखता है, भाषा संबंधी विधि-निषेधों के प्रति जागरूक रहता है, वह अनेक स्थानों पर अवसाद से बच सकता है।

धर्म की गहराई को समझें

आचार्य महाप्रज्ञ

दुनिया में बहुत सारे वाद और विवाद चल रहे हैं। सत्य को पाने के लिए वाद-विवाद प्रयत्नशील हैं। परन्तु क्या किसी ने सत्य को प्राप्त किया? कोल्हू का बैल कोल्हू के इर्द-गिर्द घूमता रहता है। घंटों तक गतिशील रहने पर भी वह आगे नहीं बढ़ पाता। ठीक यही दशा वादों और विवादों की है। वादों और विवादों के द्वारा किसी ने भी सत्य नहीं पाया। तब प्रश्न आया क्या करना चाहिए? सत्य के लिए वादों के अखाड़े को छोड़ दो, यादों के संघर्ष को छोड़ दो और अध्यात्म का अनुचिंतन करो।

अध्यात्म कोई वाद नहीं है। अध्यात्म सबसे अलग रहने वाली वस्तु नहीं है। अध्यात्म किसी पाताल-लोक में बसने वाली वस्तु भी नहीं है। किसी भी वस्तु की गहराई में चले जाइए। वहां सहज ही अध्यात्म का स्पर्श हो जाएगा। समुद्र को सामने से देखते हैं तो पानी दिखाई देता है। आस-पास से कुछ छोटे-मोटे केकड़े आदि जानवर दिखाई देते हैं। मछलियां भी तैरती दिखाई देंगी। शंख, सीप आदि भी मिल जाते हैं। क्या समुद्र यही है? यह तो समुद्र का दीखने वाला बाहरी रूप है। समुद्र की गहराई में जाने पर अनेक मूल्यवान चीजें उपलब्ध होती हैं। बाहरी रूप को देखने वाला व्यक्ति समुद्र में छिपे रत्नों से परिचित नहीं हो सकता। सामान्यतः लोगों की दृष्टि वस्तु के बाहरी आकार को ही देखती है धार्मिक लोगों के जीवन में जो परिवर्तन नहीं आता, उसका मूल कारण यही है कि वे धर्म के बाहरी तल का स्पर्श करते हैं, उसकी गहराई तक नहीं जा पाते। आज वैज्ञानिकों ने चन्द्रलोक में मनुष्य को उतार दिया। कैसे उतारा? इसलिए कि वे अध्यात्म तक पहुँचे, उस चीज की गहराई तक पहुँचे।

अध्यात्म का अर्थ होता है भीतर में होने वाला इस भूमि के भीतर होने वाला, हमारे शरीर के भीतर में होने वाला। किसी भी वस्तु के भीतर में होने वाला जो है, वह अध्यात्म है।

धर्म की गहराई में कौन जाता है? व्यक्ति मानता कुछ है और करता कुछ है। एक और मान्यता है और एक ओर सारा व्यवहार है। व्यक्ति की कुछ मनोवृत्तियां होती हैं, जो उसके शरीर के साथ, मन और भावनाओं के साथ जुड़ी हुई हैं। वे मौलिक वृत्तियां एक ओर हैं और दूसरी ओर उसकी मानी हुई या जानी हुई बातें हैं। एक आदमी दूसरे आदमी के समान है, यह हम मानते हैं किन्तु क्या इसकी अनुभूति हमें है? यदि इस बात की अनुभूति हो जाए कि हर आदमी एक-दूसरे के समान है, आत्मतुल्य है, 'प्रत्येक आत्मा दूसरी आत्मा के समान है, तो फिर कोई आदमी किसी को नहीं सता सकता, किसी का शोषण नहीं कर सकता, किसी को हीन और दीन नहीं मान सकता, किसी को नीच और उच्च नहीं मान सकता। ऐसी आध्यात्मिक अनुभूति है ही कहां? केवल रटी-रटाई बातें दुहराई जाती हैं।

आध्यात्मिक लोगों को देखिए और

उनसे पूछिए कि एक आदमी दूसरे आदमी के समान है, इसका प्रमाण क्या है? कोई कहेगा, गीता में ऐसा लिखा है। जैन कहेगा, उत्तराध्ययन सूत्र में लिखा है। बौद्ध कहेगा, धम्मपद में लिखा है। कोई बाइबिल की दुहाई देगा और कोई कुरान की दुहाई देगा। न जाने किस-किस ग्रंथ की दुहाई आयेगी। सबका एक ही उत्तर होगा 'शास्त्रों में लिखा है, इसलिए मान रहे हैं, हमारा कोई ऐसा अनुभव नहीं है।' जब तक हम दूसरे का भार सिर पर ढोएंगे, केवल शब्दों का भार ढोते रहेंगे तो यह दंड कभी मिटने वाला नहीं है। यह दंड रहेगा कि हम मानते कुछ चले जाएंगे, कहते कुछ चले जाएंगे और करते कुछ चले जाएंगे। हमारी क्रिया में और हमारे सिद्धांत में अद्वैत तभी आएगा जब वह सत्य हमारे जीवन में अनुभूत हो जाए।

धर्म वास्तव में प्रयोग की वस्तु थी, अभ्यास की वस्तु थी। आज धर्म का प्रयोग कहां है? धर्म तो इतना रूढ़ हो गया और शास्त्रों की वासना में इतना जकड़ दिया गया कि सचमुच धर्म के लिए जीवन में कोई अवकाश नहीं है।

धर्म शाश्वत है। वह हमारे श्वास की तरह है, जो निरन्तर होना चाहिए। दो घंटा तो मैं प्रामाणिक हूँ शेष घंटा प्रामाणिक नहीं। मंदिर में जाता, साधुओं के स्थान पर आता हूँ तो प्रामाणिक हूँ और जब मैं दुकान पर जाता हूँ तब धार्मिक भी नहीं हूँ और प्रामाणिक भी नहीं हूँ। यह धर्म की सबसे बड़ी हत्या और सबसे बड़ा मखौल है। ऐसा क्यों हुआ? इसीलिए कि हमने उपासना को ही धर्म मान लिया। आचरण को धर्म नहीं माना और शाश्वत धर्म को नहीं पहचाना। यही कारण है कि आज धर्म के द्वारा भी जो होना चाहिए, वह नहीं हो रहा है। यदि ऐसा हो जाए हमारे जीवन का मूल धर्म बने और नियम-उपासना हमारे जीवन का गौण धर्म बने तो जीवन की सही प्रतिष्ठा हो सकती है।

शंकराचार्य ने ठीक ही लिखा है बहुत सारी वासनाएं होती हैं, किन्तु सबसे भयंकर वासना है शास्त्रों की। एक बहुत बड़े जैनाचार्य पूज्यपाद हुए हैं, उन्होंने लिखा है कि जो संसारी लोग होते हैं उनमें पुत्र की वासना, पत्नी की वासना, परिवार की वासना होती है, धन की वासना होती है जो पंडित बन जाते हैं उनमें शास्त्रों की वासना हो जाती है। उनका घर संसार होता है, पंडितों का शास्त्र संसार होता है। दोनों अपने-अपने संसार की सृष्टि कर लेते हैं। मुक्त होने वाला कोई नहीं है। ऐसी स्थिति में हम कैसे आशा करें कि मनुष्य की समझ में धर्म आ जाए?

आवश्यकता है अनुभूति की और प्रयोग की। जो प्रयोग की प्रक्रिया चले, उससे हम यह जानने का प्रयत्न करें कि यह क्या है? एक धार्मिक व्यक्ति एक सिद्धांत को दस-बारह वर्ष की उम्र से दोहराना शुरू करता है और दोहराते-दोहराते मर जाता है पर वह अनुभव नहीं करता। शास्त्रों के प्रति हम न्याय तब कर सकते हैं जब शास्त्र हमारे लिए एक पूर्व-मान्यता के रूप में आए। जैसे एक वैज्ञानिक पूर्व-मान्यता को लेता है। न्यूटन ने देखा कि सेव गिर रहा है, उसके लिए सेव का गिरना एक शास्त्र बन गया। किन्तु क्या सेव गिर रहा है इतने मात्र से उसे ज्ञान हो गया? उसने प्रयोग किया, उसका परीक्षण करके सिद्धांत की स्थापना की कि पृथ्वी में गुरुत्वाकर्षण है। उस सेव का गिरना उसके लिए शास्त्र था, पूर्व मान्यता थी। वैसे ही अहिंसा अच्छी है, ब्रह्मचर्य अच्छा है, यह हमारी पूर्व मान्यता है। हम शास्त्रों में पढ़ लेते हैं और उन्हें स्वीकार कर लेते हैं।

क्या अपरिग्रह को अच्छा माननेवाले परिग्रह से मुक्त होने का प्रयत्न करते हैं। शायद कभी नहीं करते। उनकी लालसा तो परिग्रह की ओर रहती है। आज अगर दस लाख पास में है तो

अगले वर्ष बीस लाख हो जाएं। वह भी दूसरों के लिए नहीं केवल अपने स्वार्थ के लिए और अपने भोग के लिए। उनकी अभिमुखता परिग्रह की ओर है और वे अपरिग्रह के सिद्धांत की रटन लगाते रहते हैं। अहिंसा की बातें करने वाले बहुत लोग मिलते हैं किन्तु क्या उन्होंने अहिंसा को ठीक समझा है? अगर आज कोई यह प्रमाणित कर दे कि गीता में, उत्तराध्ययन में यह लिखा है कि हिंसा करना भी धर्म है, संभवतः वे मान लेंगे। उनके लिए अहिंसा धर्म है या हिंसा करना भी धर्म है, इसमें कोई

धर्म वास्तव में प्रयोग की वस्तु थी, अभ्यास की वस्तु थी। आज धर्म का प्रयोग कहां है? धर्म तो इतना रूढ़ हो गया और शास्त्रों की वासना में इतना जकड़ दिया गया कि सचमुच धर्म के लिए जीवन में कोई अवकाश नहीं है।

फर्क नहीं है। यदि कोई शास्त्रों से प्रमाणित कर देता है तो वह बात उन्हें मान्य है। अस्पृश्यता सैकड़ों वर्षों से, हजारों वर्षों से चली आ रही थी किन्तु इन पचास वर्षों से बहुत वाद-विवाद से गुजरी। क्यों गुजरी? इसलिए कि बहुत लोग यह जानते थे अछूतता, अस्पृश्यता तो शास्त्रों के द्वारा सम्मत चीजें हैं।

हिन्दुस्तान में गरीबी क्यों पल रही है? बहुत सारे लोगों के दिमाग में यह घुसा हुआ है, जो गरीब हैं उनके दिमाग में भी

और जो उच्चवर्ग के हैं उनके दिमाग में भी-धनवान अपने भाग्य का फल भोगता है, अपने कर्मों का फल भोगता है। ईश्वर की सृष्टि ही ऐसी है। भला उसे कौन अन्यथा कर सकता है! यदि यह मिथ्या धारणा न होती तो गरीबी को मिटाने में और अधिक त्वरता आती।

आज भी इस भाग्यवादी और कर्मवादी धारणा के द्वारा पुरुषार्थ की आग पर राख सी आयी हुई है। वह जलती चली जा रही है। देखते भी हैं और सुनते भी है, बहुत साधारण लोगों को ऐसा कहते हुए “क्या करें? हमारे भाग्य में ऐसा ही लिखा था, दूसरा कोई क्या करे?” स्वयं की प्रेरणा नहीं है। उसके पीछे एक मान्यता बोल रही है। दूसरे में शास्त्रीय वाक्यों का आवरण है। व्यक्ति को जहां धर्म की गहराई तक, अध्यात्म तक पहुँचना चाहिए था नहीं पहुँच रहा है और इसीलिए परिवर्तन नहीं आ रहा है। यदि आध्यात्मिकता आ जाए तो शायद ऐसा नहीं होगा।

विनोबा बहुत बार कहते अब धर्म की जरूरत नहीं है। एक विज्ञान रहेगा और एक अध्यात्म रहेगा। दो ही चीजें रहनी चाहिए। इसमें बहुत सचाई है, क्योंकि धर्म क्रियाकांडों का जमघट-सा हो गया है। अन्ना साहब आचार्य तुलसी के पास आये। उन्होंने कुछेक प्रश्न रखे। उन्होंने कहा धर्म के विषय में आज की धारणा ऐसी बन गई है कि उसमें परिवर्तन लाने की बात नहीं रह गई है। आचार्य तुलसी ने कहा “मैं इसे स्वीकार करता हूँ, क्योंकि धर्म इतना रूढ़ हो गया है कि अब उसमें अवकाश नहीं रहा है कि कुछ किया जा सके। धर्म था सत्य की शोध के लिए परन्तु असत्य का पोषण करने में आज की धर्मवादी धारणा का बहुत बड़ा हाथ है अन्यथा ‘ये राजनैतिक’ और ‘ये समाज नैतिक’ यह अलगाव नहीं होता। आज एक राजनैतिक व्यक्ति अपने को

धार्मिक क्यों नहीं मानता? और एक धार्मिक व्यक्ति राजनीति और समाज नीति से सर्वथा अछूत कैसे रह सकता है? इनकी सम्बद्धता है। मनुष्य के एक ही व्यक्तित्व में धर्म, अर्थ, समाज आदि सारी चीजें एकरस होकर गुजरती हैं।

उनका प्रश्न था 'आज आदमी दो घंटा उपासना कर लेता है और फिर वह छुट्टी पा लेता है। वह समझता है अब तो सारा दिन काम करने के लिए है।'

मैंने कहा 'गुरुदेव ने बहुत मार्मिक शब्दों में इस पर लिखा है। उसका आशय है कि एक ही आदमी एक घंटा तो भक्त प्रह्लाद बन जाता है और दूसरे घंटे में हिरण्यकश्यप बन जाता है। देखने वाला समझ नहीं पाता कि जब उसे पूजा के स्थान में, मंदिर में, धर्मस्थान में साधुओं के पास देखता है तो कल्पना करता है कि शायद प्रह्लाद भी ऐसा भक्त हुआ था या नहीं। उसी व्यक्ति को जब ऑफिस में, कार्यालय में, दूकान में देखता है तो कल्पना करता है कि शायद हिरण्यकश्यप भी इतना क्रूर हुआ या नहीं। एक ही व्यक्ति में एक ही दिन में जो इतना द्वेष मिलता है उसके जीवन में धर्म कहां है? गुरुदेव इस विषय में कहा करते हैं एक होता है श्वास और एक होता है भोजन। हम समूचे दिन भोजन नहीं करते। दिन में दो बार खाते होंगे। कोई चार बार भी खा लेता होगा। चाय-कॉफी पीने वाले पाँच-सात बार खा-पी लेते होंगे। आखिर यह तो नहीं है कि निरन्तर खाते ही रहते हैं। यदि निरन्तर खाते ही रहें तो बीमार पड़ जायेंगे। किन्तु क्या सांस लिए बिना रह सकते हैं। कहा जाए पाँच मिनट सांस मत लो तो शायद नहीं रह सकेंगे। दो मिनट रहना भी बड़ा कठिन है।

धर्म शाश्वत है। वह हमारे श्वास की तरह है, जो निरन्तर होना चाहिए। दो घंटा तो मैं प्रामाणिक हूँ शेष घंटा प्रामाणिक नहीं। मंदिर में जाता, साधुओं के स्थान पर आता हूँ तो प्रामाणिक हूँ और जब मैं दुकान पर जाता हूँ तब धार्मिक भी नहीं हूँ और प्रामाणिक भी नहीं हूँ। यह धर्म की सबसे बड़ी हत्या और सबसे बड़ा मखौल है। ऐसा क्यों हुआ? इसीलिए कि हमने उपासना को ही धर्म मान लिया। आचरण को धर्म नहीं माना और शाश्वत धर्म को नहीं पहचाना। उसी का ही यह परिणाम है, अन्यथा होना यह चाहिए कि कोई व्यक्ति उपासना कर सके या न कर सके किन्तु कम-से-कम श्वास तो लेता रहे, जिससे वह जीवित रह सके। हमारे जीने की यह प्रक्रिया थी। हमारी जो श्वास लेने की प्रक्रिया। प्राण भरने की प्रक्रिया थी, उसे तो हमने भुला दिया, और केवल ऊपरी भोजन पर सारा निष्कर्ष निकाल दिया। यही कारण है कि आज धर्म के द्वारा भी जो होना चाहिए, वह नहीं हो रहा है। यदि ऐसा हो जाए हमारे जीवन का मूल धर्म बने और नियम-उपासना हमारे जीवन का गौण धर्म बने तो जीवन की सही प्रतिष्ठा हो सकती है।



राष्ट्र चिन्तन

◆ देश के पुलिसकर्मियों के अक्खड़पन स्वभाव के कारण आतंकवाद, नक्सलवाद, क्षेत्रवाद और संप्रदायवाद के कारण देश की कानून व्यवस्था की स्थिति चिंताजनक है। पुलिस सेवा के परिवीक्षार्थियों को सुनिश्चित करना चाहिए कि वे ताकतें देश की एकता और अखंडता को नुकसान न पहुंचा पाए। पुलिसकर्मियों को भारतीय संविधान और कानून के दायरे में रहकर ही अपनी जिम्मेदारियां निभानी चाहिए।

डॉ. मनमोहन सिंह
प्रधानमंत्री

◆ विधि मंत्रालय ने अपने विधायी विभाग के सचिव की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया है। समिति इस पुराने और अप्रासंगिक हो चुके कानूनों की समीक्षा करेगी और महत्वपूर्ण कानूनों के मामले में उपयुक्त संशोधन के लिए सिफारिश करेगी। जब कोड ऑफ क्रिमिनल प्रोसीजर जैसे अपेक्षाकृत नए कानून को एक झटके में बदला जा सकता है, तो इससे भी पुराने कानूनों पर विचार करना बहुत जरूरी है। इस संबंध में एक प्रारूप तैयार कर लिया गया है। जल्द ही केन्द्रीय मंत्रिमंडल की मंजूरी लेने के बाद इस प्रारूप को संसद के अगले सत्र में पेश किया जाएगा।

एम. वीरप्पा मोइली
विधि मंत्री

◆ संसद में प्रश्नकाल के दौरान सदस्य ज्यादा से ज्यादा सवाल पूछें, ताकि लोगों को शासन के बारे में ज्यादा से ज्यादा सूचनाएं मिल सकें। न्यूजीलैंड में प्रश्नकाल के दौरान 72 सवाल पूछे जाते हैं। पर हमारे देश में बमुश्किल आठ सवाल पूछे जाते हैं। केन्द्रीय मंत्री भी प्रश्नों के संक्षिप्त जवाब दें। भारत-पाक संसदीय मंच को जल्द ही पुनर्जीवित किया जाएगा।

मीरा कुमार
लोकसभा अध्यक्ष

मनुष्य काफी पहले से पर्यावरण को नुकसान पहुँचाता आया है। जयपुर के तेल भंडार में लगी आग ने जहां आर्थिक नुकसान पहुँचाया, वहीं पर्यावरण को भी बड़ी भारी क्षति पहुँचाई। इस क्षति की भरपाई करना काफी मुश्किल है और इसका असर काफी लम्बे समय तक वातावरण पर पड़ेगा, यह बात भी निश्चित है। इस प्रकार की बड़ी आग लगने की घटना देश में पहली बार हुई, इससे यह भी पता चला है कि हमारे पास इस तरह की भीषण आग को बुझाने के लिए संसाधन ही नहीं है।

जयपुर में इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन के भंडार में लगी आग ने 500 करोड़ का तेल हवा में उड़ा दिया। इस कारण न केवल आर्थिक नुकसान हुआ है बल्कि पर्यावरण की नजर से देखा जाए तो हमारे पास ऐसा कोई पैमाना ही नहीं है कि हमने धरती के वातावरण को किस हद तक प्रदूषित किया है। तेल की आग ने देश के सामने कई ऐसे सवाल खड़े किए हैं, जिनका उत्तर निकट भविष्य में हमें ढूँढना ही होगा।

आग लगने की घटनाएं दुनियाभर में रोजाना होती रहती हैं और इससे भारत भी अछूता नहीं है। आग लगने के कई कारण होते हैं और आग से हुए नुकसान का आकलन भी हम तत्काल कर लेते हैं, परंतु जयपुर की घटना अपने आप में ऐसी है, जिसने पर्यावरणविदों के अलावा देश के सुरक्षा सलाहकारों के कान खड़े कर दिए हैं।

अगर देश का 500 करोड़ का तेल कुछ दिनों में जलकर राख हो जाए तो इसका असर अर्थव्यवस्था पर जरूर पड़ेगा। पहले ही हमें तेल आयात करने के लिए काफी पैसा खर्च करना पड़ता है। ऐसे में इस प्रकार की घटनाओं के कारण अर्थव्यवस्था पर अतिरिक्त बोझ पड़ता है। जहां एक ओर विश्व के सभी देश ऊर्जा और ईंधन को प्राप्त करने के नित नये तरीके खोज रहे हैं और तेल भंडारों को संभालकर रख रहे हैं। ऐसे में इस प्रकार की घटनाएं सवाल जरूर



धुएं का गहराता खतरा

नरेन्द्र देवांगन

उठती हैं कि हम अपने तेल भंडारों को लेकर कितने संजीदा हैं?

सीतापुर से सटे सांगानेर, शिवदासपुरा, प्रताप नगर, बालावाला, बासा, किलकीपुर, वाटिका, बाड़ा पदमपुरा, मलबा, नारिहा और चाकसू इलाके में कार्बन की बरसात होने लगी थी। दो से आठ माइक्रॉन क्षमता वाले कार्बन कणों से पूरा इलाका काला हो गया। जिसके चलते आसमान से कार्बन मोनोऑक्साइड, सल्फर डाईऑक्साइड और नाइट्रोजन ऑक्साइड जैसी जहरीली गैसों की बरसात होने लगी। इस भीषण आग को देखकर वनस्पति शास्त्री ने अंदाजा लगाया कि ये जहरीली गैसों मानव, प्रकृति और जीव-जंतु सभी के लिए हानिकारक है। जहरीली गैस सल्फर डाईऑक्साइड के कण जिस भी वनस्पति पर गिरेंगे वह जहरीली हो जाएगी।

जयपुर के इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन के भंडार में लगी आग से निकलने वाला धुआं केवल जयपुर ही नहीं बल्कि आसपास के इलाकों के लिए भी मुश्किलें पैदा कर रहा है। इस धुएं से पर्यावरणविदों के माथे पर भी बल पड़ गए हैं। इस भंडार के चारों तरफ करीब

20 किलोमीटर क्षेत्र में दो से आठ माइक्रॉन क्षमता वाला यह काला जहर बरसा। ये कण इतने खतरनाक होते हैं कि इनके संपर्क में आने से आँख की झिल्ली भी क्षतिग्रस्त हो सकती है।

यह गैस आसपास के इलाके में उगाई गई सब्जियों, फलों और अनाज को जहरीला बना देगी। इतना ही नहीं, इन जहरीली वस्तुओं को खाने से मानव भी कैंसर, टीबी, अस्थमा, सारकोडोसिस और फेफड़े से जुड़ी कई बीमारियों के शिकार हो सकते हैं। तेल भंडार में आग लगने के दो दिन बाद देखने में आया कि शहर के अस्पतालों में आँखों की जलन और अस्थमा से पीड़ित मरीजों की तादाद काफी बढ़ गयी है। विशेषज्ञ मानते हैं कि आँखों की जलन के लिए तेल भंडार की आग से निकलने वाला काला धुआं काफी हद तक जिम्मेदार है। इंडियन ऑयल के भंडार के आसपास आग की चपेट में आए 11 लोगों की मौत के पीछे भी कार्बन मोनोऑक्साइड नामक जहरीली गैस को ही प्रमुख कारण माना गया।

यह गैस व्यक्ति के हिमोग्लोबिन में

कार्बन डाईऑक्साइड की मात्रा बढ़ा देती है जिसके कारण इसके संपर्क में आने वाले व्यक्ति का दम घुट जाता है। सिर्फ इंसान ही नहीं इन जहरीले कार्बन कणों से प्रकृति को भी भारी नुकसान पहुँचा है। इंडियन ऑयल भंडार के आसपास दो किलोमीटर क्षेत्र के पेड़-पौधे ठुंठ नजर आने लगे। भंडार के करीब 10 किलोमीटर क्षेत्र में एक भी परिंदा नजर नहीं आया। पर्यावरणविदों ने चिंता जताई है कि पेड़-पौधे, जीव-जंतु और वनस्पति पर अगले तीन-चार साल तक कार्बन की इस बरसात का असर नजर आएगा। कार्बन मोनोऑक्साइड गैस के कारण इस इलाके में हजारों जीव-जंतु अकाल मौत के मुंह में समा चुके हैं।

वनस्पति और परिंदों की मौत की भले ही किसी को चिंता न हो लेकिन निकट भविष्य में मनुष्यों पर इसके व्यापक दुष्परिणाम देखने को मिलेंगे। पेट्रोल, डीजल और केरोसिन के धुएं से निकलने वाली जहरीली गैस सल्फर डाईऑक्साइड अभी पेड़-पौधों और छतों पर जम जाएगी, लेकिन बरसात में पानी के साथ जब यह गैस जीव-जंतु और मनुष्यों पर गिरेगी तो इसके कारण कई खतरनाक बीमारियां पैदा होंगी। पानी के संपर्क में आने से सल्फर डाईऑक्साइड गैस तेजाब में बदल जाती है। अब इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि इस

भीषण आग ने हमारे वर्तमान ही नहीं बल्कि भविष्य को भी किस हद तक प्रभावित किया है।

वैज्ञानिकों का अनुमान है कि ग्लोबल वार्मिंग के लिए फॉसिल ईंधन के पाँच वर्ष तक जलने के बाद संपूर्ण देश जितना प्रदूषण करता उतना मात्र तीन दिनों में वातावरण में चला गया है। इसका असर जयपुर व आसपास के क्षेत्रों में होने लग गया था। जयपुर शहर का तापमान कुछ डिग्री बढ़ गया तथा आसपास के क्षेत्रों में भी हल्की ठंड लगने की बजाय गर्मी का एहसास हो रहा था। जयपुर में अगर माहौल थोड़ा भी और ठंडा होता तो तबाही और ज्यादा होती।

विश्व में इस तरह की घटनाएं होती रहती हैं, और इन हादसों से निकलने वाले धुएं से विश्व का पर्यावरण बुरी तरह प्रभावित होता आ रहा है। इराक युद्ध के दौरान इराक के सैनिकों ने कुवैत व आसपास के क्षेत्रों में सात सौ से भी ज्यादा तेल के कुओं में आग लगा दी थी। वहीं कुछ कुओं के तेल को समुद्र में छोड़ दिया था। तेल के कुओं की आग लगातार नौ महीनों तक जलती रही। जिसे अमेरिका व अन्य देशों के सहयोग से बुझाया गया था। अनुमान लगाया जा सकता है कि लगातार नौ महीने तक भारी मात्रा में निकलने वाले धुएं से पर्यावरण पर कितना कुप्रभाव पड़ा होगा। यही नहीं तेल के कुओं से आग बुझाने के

बाद भी जो तेल रेत के साथ मिल गया था उसके कारण भी पर्यावरण को काफी नुकसान पहुँचा। पूरे कुवैत देश की पाँच प्रतिशत जमीन तेल के कारण प्रदूषित हो गयी थी।

आस्ट्रेलिया के दक्षिण-पश्चिम समुद्र क्षेत्र में स्थित एक तेल कुएं में आग लग गई। इस कुएं से तेल समुद्र में बह रहा था और इंजीनियर इस रिसाव को रोकने के लिए प्रयत्न कर रहे थे। इस दौरान इसमें आग लग गई थी। इस घटना ने भी पर्यावरण को व्यापक रूप से क्षति पहुँचाई थी।

धरती को प्रदूषित करने का सिलसिला आधुनिक युग में काफी ज्यादा हो गया है, पर मनुष्य ने प्रदूषण फैलाना काफी समय से जारी रखा है। कहा जाता है कि जब से धातुओं की खोज हुई है, तभी से प्रदूषण की मात्रा में तेजी आई है। अरब के कई ऐतिहासिक दस्तावेजों में प्रदूषण का जिक्र है। 9वीं से लेकर 13वीं शताब्दी के अल्किदस, क्यूस्ता इब्न ल्यूका, इब्न अल जज्जर आदि ने हवा, पानी, मिट्टी के प्रदूषण के संबंध में भी लिखा है। यही नहीं किंग एडवर्ड प्रथम द्वारा इंग्लैंड में 1272 में सी कोल (समुद्री कोयला) के जलाने पर रोक लगाने का भी जिक्र है, क्योंकि इसके धुएं के कारण काफी परेशानी होती थी। यही नहीं, टेम्स नदी में 1858 में काफी प्रदूषण हो गया था, जिसके बाद लंदन मल व्यवस्था प्रणाली बनाने की योजना आरंभ हुई थी। अमेरिका में भी प्रदूषण की समस्या 18वीं सदी से रही है। शिकागो व सिनसिनाटी ऐसे दो अमेरिकी शहर थे, जहां पर शुद्ध हवा के लिए नियम बनाए गए थे। इसके बाद 20वीं सदी तक आते-आते लांस एंजिल्स तथा अन्य शहरों में भी नियम बनाए गए। आज जरूरत है ऐसे ही नियम बनाए जाने की, ताकि धुएं के प्रदूषण से लोग अकाल मौत के मुंह में जाने से बच जाए।

शिकागो व सिनसिनाटी ऐसे दो अमेरिकी शहर थे, जहां पर शुद्ध हवा के लिए नियम बनाए गए थे। इसके बाद 20वीं सदी तक आते-आते लांस एंजिल्स तथा अन्य शहरों में भी नियम बनाए गए। आज जरूरत है ऐसे ही नियम बनाए जाने की, ताकि धुएं के प्रदूषण से लोग अकाल मौत के मुंह में जाने से बच जाए।

नरेन्द्र फोटो कॉपी

पोस्ट : खरोरा - 493225

जिला : रायपुर (छत्तीसगढ़)

कैसे मिलें सुख, शांति आनन्द

नीना राठौड़



आनन्द तो ईश्वरीय तत्त्व है और यह प्रत्येक मानव की अंतरात्मा में व्याप्त है, जो अनुभव कर ले उसी को इसकी रसानुभूति हो जाती है। पर इस आनन्द से अनजान होकर हम सुख, साधन, सुविधाओं में ही आनन्द खोजते रहते हैं। सुख भौतिक तत्त्व है। साधन, सुविधा, धन सम्पत्ति हमें पूर्ण सुखी अर्थात् आनन्दित कर दें यह आवश्यक नहीं अपितु इनकी प्राप्ति के बावजूद भी अधिकांश ऐसे हैं जो दुखी, चिंतित एवं अशांत हैं और दिव्य आनन्द से कोसों दूर। आनन्द तृप्ति देता है, शान्ति देता है पर भोगों की तृष्णा कभी शान्त ही नहीं होती। न भोगों का अंत होता है और न हमारी चाह और तृष्णा का।

हां, अवश्य ही सुख के साधन भी आनन्द दे सकते हैं यदि हम निस्पृह भाव से उनका उपयोग करें तथा औरों के साथ बांटें। सुख बांटने से सुख का विस्तार होता है। भोगों की जिन्दगी जीने वाला उधार की जिंदगी जीता है। उसका मनोरंजन करने वाले, हंसाने, रुलाने वाले, क्रोधित करने वाले कोई और होते हैं पर अन्दर का आनन्द शाश्वत है। इसका असली मार्ग तो ईश्वर से लौ लगाने, समग्र जीव जगत से प्रेम करने और सेवा सहयोग करने में है। यह एक गहराई से समझने वाली बात है कि खाने की बजाय खिलाने और पाने की बजाय देने का अपना और ही आनन्द होता है।

स्वामी विवेकानंद के शब्दों में 'हे अमृत पुत्रों, तुम अमृत के हकदार हो, विष नहीं अमृत का पान करो। इस दुर्लभ मानव देह में परमात्मा इस अमृत

को मुफ्त लुटा रहा है। अतः जागो और इसका पान करो, अपने से निकल कर औरों का ध्यान करो, औरों को भी यह अमृत पिलाओ। इन्द्रियों की इच्छापूर्ति का अन्त नहीं है, यह जीवन का सत्य नहीं है। सत्य की ओर बढ़ो, आनन्द के अक्षय स्रोत को तलाशो जिसके मिलने पर फिर कुछ प्राप्त करना ही, शेष न रहे। अपने भीतर के परम आनन्द और दिव्य शान्ति की खोज करो।”

जीवन क्षण भंगुर है, साथ ही छोटा भी है, इसे बढ़ाना हमारे वश में नहीं। अतः ईर्ष्या वैमनस्य, संकीर्णता व लोभ की प्रवृत्ति से इस जीवन को हमें विषाक्त नहीं करना है। ईर्ष्यावाला व्यक्ति मन ही मन घुटता है, कुढ़ता है, जलता रहता है। ईर्ष्या वृत्ति का त्याग हमें देगा मंगलमय आनन्द, स्वास्थ्य लाभ, मुस्कराता चेहरा और सौम्य आकर्षण। श्री रविशंकर का कहना है हमें जीवन इस आस्था के साथ जीना

चाहिए कि हम यहां उदास व दुखी होने नहीं आये हैं, हम यहां दिखावा करने, तनाव झेलने नहीं आये हैं, हम तो मुस्कराते हुए जीने तथा औरों के अधरों को मुस्कान देने, किसी के आंसू पोंछने, किसी का दुख बांटने आये हैं और यहीं है आनन्द प्राप्ति का मार्ग।

नन्हें शिशु की भांति तहेदिल से मुस्कराते रहिये, इससे मस्तिष्क को राहत, आनन्द एवं आत्मविश्वास का एहसास होता है। आपकी क्षमताएं बढ़ती हैं, पूरे व्यक्तित्व को साहस, सक्रियता लोकप्रियता एवं आत्मविश्वास की ऊर्जा मुस्कान से मिलती है और आनन्द का प्रसार होता है। सदैव उत्साहित रहो। औरों को प्रोत्साहित करिये इसका भी एक अलग ही आनन्द है। हतोत्साहित तो किसी को भी कभी नहीं करें। आजकल घोर प्रतियोगिता के युग में माता-पिता अभिभावक अपने बच्चों पर अपनी महत्वाकांक्षा का दबाव

संसार में भौतिक सुख भी धर्म के ही प्रभाव से मिलते हैं और आत्मिक सुख भी। दुखों का बीज है पाप और सुखों का बीज है धर्म। मिट्टी के बिना घड़ा नहीं बन सकता, बीज के बिना वृक्ष नहीं, वैसे ही धर्म के बिना सुख नहीं, अतः पाप को छोड़ो, धर्म को अपनाओ। दुःख सबक सिखाने आते हैं, भटके को मार्ग दिखाने आते हैं जैसे सोने को कुंदन बनने के लिये आंच चाहिए। दुख सदैव दुष्कर्मों का ही प्रतिफल नहीं होते हैं उनका कोई ईश्वरीय उद्देश्य भी होता है तभी तो सीता, राम, सुकरात, ईसा, गाँधी सभी को कष्ट सहने पड़े बिना पाप के भी क्योंकि इनके दुःख उद्देश्यपूर्ण थे।

तू सत्य बोल

मोहन उपाध्याय

डालते हैं, बच्चे सहज नहीं रह पाते। हर वक्त माता-पिता के हतोत्साहित करने वाले तानों से सहमे रहते हैं, आत्मविश्वास कुंठित हो जाता है, वे स्वाभाविक नहीं रह पाते। बच्चों के साथ नकारात्मक दृष्टिकोण रखना घातक होता है।

ध्यान, मुस्कान, सेवा, प्रोत्साहन और प्रेम को अपनी जीवनचर्या का अंग बना लें आप सुखी, शांत और आनन्दित रहेंगे। थोड़ा समय अपने लिये भी निकालें। किसी शांत, एकांत स्थल में अपने से रूबरू होवें, केवल स्वयं का स्मरण करें ईश्वर से तादात्म्य बिठाते हुए, सृजनशीलता को सहलायें तथा अपने चारों ओर के संसार को, समग्र पर्यावरण को बेहतर बनायें। याद रखिये प्रार्थना में अनन्त शक्ति है। प्रार्थना अन्तर्मन से कीजिए, ईश्वर से आत्मसात होकर, प्रार्थना अवश्य पहुँचती है और ईश्वर ध्यान देता है, विश्वास रखिये और कर्तव्य का पालन करते रहिये।

याद रखें संसार में भौतिक सुख भी धर्म के ही प्रभाव से मिलते हैं और आत्मिक सुख भी। दुखों का बीज है पाप और सुखों का बीज है धर्म। मिट्टी के बिना घड़ा नहीं बन सकता, बीज के बिना वृक्ष नहीं, वैसे ही धर्म के बिना सुख नहीं, अतः पाप को छोड़ो, धर्म को अपनाओ। दुख सबक सिखाने आते हैं, भटके को मार्ग दिखाने आते हैं जैसे सोने को कुंदन बनने के लिये आंच चाहिए। दुख सदैव दुष्कर्मों का ही प्रतिफल नहीं होते हैं उनका कोई ईश्वरीय उद्देश्य भी होता है तभी तो सीता, राम, सुकरात, ईसा, गाँधी सभी को कष्ट सहने पड़े बिना पाप के भी क्योंकि इनके दुख उद्देश्य पूर्ण थे। एक बात और है कि क्षमा दुर्भावना को परास्त करती है, दुर्भावना समाप्त होने पर सद्भावना जागृत होती है, सद्भावना से सत्कर्म एवं सत्कर्मों से सुख की प्राप्ति होती है। सुख प्राप्ति के लिये यज्ञ, अनुष्ठान, पूजा, पाठ का सहारा लेना पर्याप्त नहीं, इससे तो चित्तवृत्ति में सुधार आ सकता है पर सच्चा सुख तो निष्पाप कर्म एवं सेवा से ही प्राप्त होगा।

हमें जीवन में निम्न बिन्दुओं को अपनी जीवनचर्या में आत्मसात् करना चाहिए

1. अन्तर्मन से ईशवन्दना, 2. सात्विक पौष्टिक आहार, 3. व्यायाम, प्राणायाम, ध्यान, योग, 4. सेवा-सहयोग- प्रेम, 5. मुस्कराते रहना एवं खुलकर हंसना, 6. प्रकृति प्रेम व प्रकृति में विचरण, 7. व्यसनमुक्त रहना, 8. प्रचुर मात्रा में जल पीना, 9. स्वस्थ मनोरंजन व आमोद-प्रमोद, 10. पर्याप्त विश्राम, 11. आत्म साक्षात्कार, 12. क्षमा भाव व सहिष्णुता, 13. लोभरहित जीवन, 14. स्वच्छ मन, स्वच्छ तन व स्वच्छ पर्यावरण, 15. प्रमादरहित परिश्रमी जीवन, 16. सकारात्मक दृष्टिकोण।

सुख, शान्ति, आनन्द व सफलता का मार्ग तो यही है, आवश्यकता है इस मार्ग पर चलने की और तभी मिलेगी मंजिल आनन्द की, चिरंतन आनन्द की।

प्राचार्य : टैगोर पब्लिक स्कूल,
मेजर शैतानसिंह कॉलोनी, शास्त्रीनगर, जयपुर – 302016

तू सत्य बोल, तू सत्य बोल।
है कौन यहां पर ऊँच नीच,
छोटा बड़ा न है यहां बीच;
सब हैं समान भाई-भाई
तू सदा प्रेम-रस धोल-धोल।

तू सत्य बोल, तू सत्य बोल।
तू चाहे ऊपर बैठा है,
तू बड़ी अकड़ में ऐंठा है;
पर थोड़े दिन ही यह चलता
फिर खुल जाती है पोल-पोल।

तू सत्य बोल, तू सत्य बोल।
क्या काम अरे! कोई छोटा?
क्या कोई धंधा है खोटा?
सब जीवन में उपयोगी हैं
तू अपने मन को अब टटोल।

तू सत्य बोल, तू सत्य बोल।
क्या नर नारी में यहां भेद?
क्या नहीं भेद पर तुझे खेद?
है पहले माँ, फिर पिता यहां
तू मन में कर यह तोल-मोल।

तू सत्य बोल, तू सत्य बोल।
क्यों एक ओर यह महल बड़ा?
क्यों एक झोंपड़ा पास खड़ा?
यह किसने भेद बना डाला
तू अब तो आँखें खोल-खोल।

तू सत्य बोल, तू सत्य बोल।
जो पितृ-देव-ऋषि-ऋण बाकी,
क्या कीमत भी तूने आंकी?
क्यों अब तक नहीं चुका पाया?
अब मन की गाँठें खोल-खोल।

तू सत्य बोल, तू सत्य बोल।
तू है स्वतंत्र, सब भी स्वतंत्र,
सबके जीवन का यही मंत्र;
तू उत्तम जीवन जी सकता
फिर खुशियों के बज उठे ढोल।

तू सत्य बोल, तू सत्य बोल।

26/117, क्रिश्चियन गंज, विकासपुरी
अजमेर – 305001 (राजस्थान)

शासकीय कार्यालयों में मुस्कान की शर्त

सत्यनारायण भटनागर

जब भी बॉस मुझे बुलाते हैं बड़ी घबराहट हो जाती है। मैं गंभीर हो जाता हूँ। आज भी बॉस ने बुलाया तो घबराहट में मैं गंभीर मुद्रा बना उनके सामने उपस्थित हुआ। उन्होंने मुझे एक समाचार पत्र दिया और कहा कि मैं एक समाचार पढ़ूँ। वास्तव में वह समाचार जापान का था। वहाँ के वैज्ञानिकों ने शोध कर कहा था कि मुस्कराता चेहरा सबको आकर्षित करता है और वह सफलता का मार्ग है। बॉस ने कहा, मैं सदा आपको गंभीर रूप में देखता हूँ। हमेशा मुस्कराइये, जो आपसे मिलने आए उसका मुस्करा कर स्वागत कीजिए। आप मुस्कराएंगे तो सामने वाला भी मुस्कराएगा। बॉस ने कहा तो मैं मुस्कराया। बॉस भी मुस्करा दिए, मैंने एक सबक सीखा।

कार्यालय से मुक्त होने पर मुझे रेलगाड़ी में यात्रा करनी थी। जल्दी-जल्दी में टिकट लिया और बैठ गया रेलगाड़ी में। मैं सोचने लगा जापानी शोध का प्रयोग कर देखना चाहिए। टिकट निरीक्षक मुझे दिखायी दिया तो मैं मुस्कराया। वह नहीं मुस्कराया। उसने मुझे गौर से देखा। उसे कुछ शंका हुई। वह मेरे पास आया। मैंने कहा, 'एक शैय्या चाहिए भाई' उसने टका सा जवाब दिया, 'शैय्या नहीं है दूसरा डिब्बा देखो' मैं चकराया। मुस्कराहट खाली गई। मैंने अपनी जेब में हाथ डाला, उसका हाथ गरमाया। वह मुस्कराने लगा, वह हंस-हंस कर बात करने लगा। उसने एक शैय्या मुझे दे दी। मैं फिर मुस्कराया, उसे धन्यवाद दिया। इस बार वह भी मुस्करा दिया। बोला, 'हम मुफ्त में नहीं मुस्कराते, हमारी

मुस्कराहट मूल्यवान है, कीमत मांगती है' मुझे लगा जापान का शोध पत्र भारत में कारगर नहीं है।

रेल यात्रा की ऊब से सरदर्द हो गया। शरीर भारी-भारी था। लगा स्वस्थ नहीं है। मैं सीधे सरकारी अस्पताल में पहुँच गया। वहाँ मरीजों की भीड़ मक्खी-मच्छर जैसी लगी थी। डॉक्टर परेशान था। कभी-कभी चिल्ला उठता था। मैं देखता रहा फिर मेरा नंबर आया। मैं मुस्कराता हुआ उसके पास गया। उसने गंभीरता से पूछा, 'क्या रोग है?' मैंने बता दिया। वह बोला, 'जब आप रोगी हैं इलाज कराने आए हैं तो मुस्कराने की क्या जरूरत थी?' मैंने कहा, 'डॉक्टर साहब आप तनावग्रस्त थे। भारी भीड़ है, आपका जी हलका करने के लिए मुस्करा दिया।' डॉक्टर गंभीर बना रहा। बोला, 'ऐसे बिना कारण मुस्कराओगे तो पागल समझे जाओगे। मुस्कराना है तो मेरे घर आकर फीस दो। वहाँ बताओ, वहाँ मैं भी मुस्कराऊँगा, आप भी मुस्कराइए। अस्पताल में मुस्कराना मना है। आप शाम को घर आइए। आपको आराम से देखूँगा।

जापानी शोध बुरी तरह असफल हो रहा था। सोचा भीड़ की परेशानी में डॉक्टर ही मरीज लग रहा था। इसलिए शायद शोध काम नहीं कर रहा। शाम को नियत समय डॉक्टर के निवास पर गया। वे पुस्तक हाथ में लिए पढ़ने का बहाना कर रहे थे। वास्तव में वे मक्खी मार रहे थे। मुझे देखा तो मुस्कराए, मुझे भी मुस्कराना पड़ा। वे हंस-हंस कर बात कर रहे थे। उनके मुस्कराने का शुल्क उनको मिल गया था। यहाँ जापानी शोध सफल दिखाई दिया।

अस्पताल जैसी जगह मुस्कराहट के

लिए उचित नहीं थी। शायद मैंने प्रयोग ही गलत जगह किया था। इसलिए सोचा इस प्रयोग को लोक प्रशासन पर अजमाया जाए। मैं कलेक्टर कार्यालय पहुँच गया। कलेक्टर महोदय कार्यालय में नहीं थे। जब बिल्ली भ्रमण पर हो तो चूहे उछलकूद मचाते ही हैं। पूरा कार्यालय आनन्द मग्न था। एक कमरे से हंसी ठहाके की आवाज आ रही थी। मैं वहाँ मुस्कराते हुए पहुँच गया। वहाँ भुजिया पार्टी चल रही थी। मेरी मुस्कराहट देख उनकी हंसी गायब हो गयी। वे शंका की निगाह से देखने लगे। एक बाबू जैसा छोकरा गुस्से से बोला 'आप क्यों मुस्करा रहे हैं। क्या यहाँ तमाशा हो रहा है, बाहर जाइए। बिना पूछे अंदर आना सभ्यता नहीं है। जाइए जाइए, बैठक हो रही है, बाद में आइए।' एक भृत्य देवता आए। हमें पकड़ कर कार्यालय से बाहर ले आए। अत्यन्त विनम्र भाव से पूछा 'क्या काम है, हमें बताओ, हम करा देंगे। उनके मुंह मत लगे।'

हमने कहा, 'भैय्या निवासी का प्रमाण पत्र चाहिए। हमें जल्दी है। कल ही हमें देना है।'

वह मुस्कराया, बोला 'आज ही मिल जाएगा, पाँच सौ लगेंगे। आप चिंता न करें।'

वह गया। फार्म ले आया। फार्म भर गया। सील ठप्पे लग गए। प्रमाण पत्र मिल गया। हम मुस्कराए, वे सब मुस्कराए। जापानी शोध सफल हुआ।

अब हम चले पुलिस स्टेशन। पुलिस महकमा आम जनता की सुरक्षा के लिए है। कोतवाल साहब तो गश्त पर थे। सोचा चलो हेड साहब से मिल लें। हेड साहब ऐनक झुकाए कुछ

लिख रहे थे। हम दरवाजे पर खड़े हुए मुस्कराए। हेड साहब ने देखा। उनकी त्योरियां चढ़ गईं। हाथ में डण्डा उठाया, टेबल पर मारा। एक गाली दी, बोले 'हम पर हंसता है तेरी यह हिम्मत।' सिपाही को आवाज दी। बोले 'पकड़ो इसे भागने न पाए। बंद कर दो हवालात में। मुस्कराना भूल जाएगा। पुलिस स्टेशन पर दिल्लीगी करने आ जाते हैं लोग। कैसा जमाना आया है। हम अच्छे-अच्छों को ठीक कर दिए हैं, समझे।' वे बोले जा रहे थे।

सिपाही ने हेड साहब को सलाम कर पूछा, 'श्रीमान किस दफा में जाएगा यह।'

हेड साहब बोले, 'अरे वही आवारा-गर्दी में डाल दो। रात के अंधेरे में पुलिस को देख छिप रहा था। आवाज दी तो भागा, पता ठिकाना नहीं बताया, लिख दो।'

मैं सुन रहा था। मैंने कहा, 'हेड साहब! मैं इंजीनियर हूँ, आप सोच लीजिए, परेशानी में पड़ जाएंगे।'

हेड साहब को ताव आ गया। डण्डा टेबल पर फटकारा, 'हमें परेशानी में डालेगा। हमारे ऑफिस में आकर हम पर हंसता है और हमें ही धोंस देता है। बन्द करो साले को।'

उनका प्रलाप चालू था। वे उम्मीद कर रहे थे कि हम कुछ झुकेंगे। जब मैं हाथ डालेंगे और उन्हें प्रसन्न कर मुक्त होने की चेष्टा करेंगे, पर हमें हंसता देख वे सतर्क हुए। उन्हें लगा हमें भेज कर किसी ने उन्हें फंसाने का कुचक्र रचा है। अन्यथा मछली जाल में फंस कर तड़फड़ाए नहीं यह कैसे हो सकता है। वे कुछ चिंता ग्रस्त हुए फिर बोले, 'आप किस कार्यालय में इंजीनियर हैं हमें बताओ।'

हमने कहा 'आप टेलीफोन दो हम एस.पी. साहब को बता देते हैं। वे हमारे जिगरी दोस्त हैं। वे आपको सब बता देंगे।'

हमारा इतना बोलना था और लगा कि हेड साहब का पेन्ट ढीला हो गया। हाथ जोड़ कर खड़े हो गये। बोले, 'साहब हम नींद के झोंके में थे। पहचाने

नहीं, माफ कर दीजिए। बाल-बच्चेदार हैं गलती हो जाती है। क्षमा कर दीजिए।'

हम मुस्कराए। वे न मुस्करा सके। हम आ गए अपने निवास पर। दूसरे दिन हम अपने कार्यालय गए। बॉस को बताया 'जापान का मुस्कराहट भरा शोध भारत में तो असफल रहा। यहां तो हर व्यक्ति मुस्कान की कीमत मांगता है। यहां मुफ्त में मुस्कराहट नहीं मिलती।'

बॉस ने सुना तो हंस दिए। बोले 'मुस्कान सरकारी दफ्तरों में नहीं चलती, वहां कुछ और चलता है। आपसे किसने कहा था कि वहां जाकर मुस्कराइए। अपने दफ्तर में मुस्कराइए और फिर देखिए असर।'

बॉस कैसा भी हो, उसका आदेश मानना पड़ता है। हम लगातार मुस्करा रहे हैं। इस आलेख को पढ़कर संपादक भी शायद मुस्कराएँ पर पाठक जरूर मुस्कराएंगे क्योंकि वे कीमत चुकाकर इसे पढ़ रहे होंगे।

2, एम.आई.जी. देवरादेव नारायण नगर, रतलाम (मध्यप्रदेश) 457001

भ्रष्टाचार

?

शिष्टाचार बन रहे नासूर भ्रष्टाचार

से जुड़े बिन्दुओं को समाहित करता अणुव्रत पाक्षिक का विशेष अंक।

रचनाकारों की तथ्यपरक रचनाएँ
पाठकों के विचार सादर आमंत्रित।

खूनी होते खून के रिश्ते

द्वारकेश भारद्वाज

तेजी के साथ परिवर्तित होते आज के सामाजिक वातावरण में रक्त संबंधों पर आधारित समाज में जिस तरह की अमानवीयता की घटनाएं घट रही हैं और संचार में जिन खबरों को सुर्खियों के साथ प्रचारित किया जा रहा है उससे सहसा ज्ञात होता है कि खून के रिश्तों में दिन-ब-दिन हिंसा का प्रवेश बढ़ोत्तरी की ओर है। भाजपा के कद्दावर नेता प्रमोद महाजन को उसके सहोदर द्वारा पिस्तौल से मारना रक्त सम्बन्धों में हिंसा का ताजा उदाहरण है। राजस्थान की राजधानी जयपुर महानगर में छः माह में दस घटनाएं ऐसी घटी हैं जिनसे उक्त सम्बन्धों में हिंसा की जानलेवा वारदातें हुई हैं। युवराज नाम के युवक को व्यवसायिक प्रतिस्पर्द्धा के चलते उसके सहोदर ने सुपारी (दस लाख की) गुण्डे को देकर सरैराह मरवा डाला। धनाढ्य के इकलौते बेटे ने अपने बाप व सौतेली माँ को घर में ही मौत के घाट उतार दिया। और तो और माँ ने अपने किशोर बेटे-बेटी को प्रेम प्रसंग उजागर हो जाने पर विष देकर मौत के आगोश में सुला दिया। ये तो मात्र उदाहरण हैं। पूरे देश में इस प्रकार की घटनाएं घटती ही रहती हैं। खून के रिश्ते खूनी होते जा रहे हैं।

सम्पूर्ण भारतीय समाज में आती गिरावट व पतन की पराकाष्ठा इसका प्रमुख कारण रही है जिसने रक्त सम्बन्धों को भी अपनी जकड़न-पकड़न में ले लिया है। सामाजिक परिवेश से निकल कर समाज के छोटे दायरों को पार कर हिंसा की घर परिवार की ईकाइयों में घुसपैठ चिंता का विषय ही नहीं नैतिक पतन की पराकाष्ठा है। आखिर इस प्रकार की घटनाओं की जड़ में ऐसी क्या बात है कि मानवीय दया, प्रेम, करुणा, सौहार्द व भावना की धार सूखती जा रही है। इन सबके पीछे

ऐसा कुछ आवश्यक है जो हमारे अंदर के संवेगों को नष्ट कर उसे हिंसा का रूप देने में लगा है। वास्तव में यह स्थिति एकाएक नहीं आई है। इसके पीछे लम्बे वक्त से चली आ रही चरित्र व व्यक्तित्व निर्माण की प्रक्रिया जिसे बदलती वैश्वीकरण की दौड़ में गौण मात्र लिया गया है, की भी निश्चित रूप से भूमिका रही है। हालांकि इसके लिए मुख्य कारक शिक्षा व्यवस्था भी है जो सम्पूर्ण जीवन का आधार है। आज की एकांकी शिक्षा व्यवस्था भारतीय शिक्षा पद्धति से निकलकर अंग्रेजी माध्यम की कान्वेन्ट शिक्षा पद्धति के अधानुकरण में फंस गई है।

भारतीय शिक्षा पद्धति जो गुरुकुलों की देन थी के द्वारा संस्कार, संवेदना, सहयोग, प्रेम, राष्ट्रहित के लिए प्रेरित किया जाता था। गुरु शिष्य परम्परा का तो नामोनिशान ही मिट गया है। आज की शिक्षा मात्र किताबी ज्ञान पर आधारित है। इसका बड़ा प्रभाव पड़ा है। प्रेम व भावना का जनाजा निकल गया। शिक्षा व्यवस्था में प्रेरणा व संस्कार निर्माण के कार्यक्रमों का कोई स्थान नहीं रहा। राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त ने लिखा है कि

*शिक्षे! तुम्हारा नाश हो तुम नौकरी के हित बनी।
लो मूर्खते जीति रहो रक्षक तुम्हारे हैं धनी।।*

वास्तव में आज शिक्षा ग्रहण करने का मायना रह गया जीवन में उच्च पद की लालसा और धन-प्राप्ति के साथ दूसरों पर रोब जमाने के लिए साधन सम्पन्न होना। आज की शिक्षा व्यवस्था ने समाज शास्त्रियों व शिक्षाविदों की इस बात को झुठला दिया है कि अच्छी शिक्षा व्यवस्था संस्कार निर्माण की कारक होती है और सुसंस्कारित नागरिकों से ही सुदृढ़ राष्ट्र का निर्माण होता है। आज की किताबी तालीम ने तो चरित्र निर्माण पर ताला ही जड़ दिया है।

रक्त संबंधों में बढ़ती हिंसा का दूसरा

अहम कारण है सांस्कृतिक पतनशीलता व नई दुनिया की दौड़ में शनैः शनैः अपनी जड़ों से विलग होते जाना। पतनशीलता में मीडिया यानि सभी संचार माध्यमों ने भी अपनी भूमिका निभाने में कसर नहीं छोड़ रखी है। चौबीसों घंटे चलने वाले देशी-विदेशी कार्यक्रम के माध्यम से हमारी सांस्कृतिक विरासत पर जोरदार व प्रभावी हमला हो चुका है। इन देशी-विदेशी चैनलों के द्वारा भारतीय संस्कृति, सभ्यता, पारिवारिक नाते रिश्तों में माँ -बाप, भाई-बहिन, पति-पत्नी, माँ -बेटे तक के सम्बन्धों को जिस ढंग से कुचला व पेश किया जा रहा है, उसने तो परिवारों में हिंसा को भड़काने में घी का काम किया है। कामुकता, क्रोध, प्रतिशोध, हिंसा के साथ भद्दे व फूहड़ दृश्य व गीत-संगीत में तो सारी लाज-शर्म की सीमाओं को लांघ दिया है। डिस्को, रेप और नारी देह का व्यवसायिक उपयोग भी हमारी गिरावट का कारक है। सिनेमा में यही सब चीजें नंगेपन और बेहूदगी के साथ नित नये रूपों में परोस रहा है। हमारी युवा पीढ़ी को कामुकता से सराबोर दृश्य बड़ी ही तेजी व प्रभावी ढंग से अपनी गिरफ्त में ले रहे हैं।

उपरोक्त तथ्यों के साथ रोजगार के अवसरों का निरंतर घटते जाना व टी. वी. के विज्ञापनों का भी समाज में बढ़ते विक्षोभ में बड़ा हाथ है जिससे आज के व्यक्ति में दीनता, हीनता और तृष्णा का ग्राफ बढ़ोत्तरी की ओर है जिसने घृणा को जन्म देकर हिंसक बनाया है। जिनके कारण उत्तेजना, तनाव और विक्षोभ का जन्म हुआ है। समय रहते समाज में बदलती व्यवस्थाओं पर मिल बैठकर विचार करना होगा अन्यथा उक्त सम्बन्धों में बढ़ता तनाव चिंताजनक स्थिति को पार कर आत्मीयता की परिभाषाओं को ही बदल देगा। घर के बुजुर्गों का दायित्व है कि वे बच्चों में क्षमाशीलता, सहिष्णुता, त्याग जैसे गुणों का विकास करें। ताकि खून के रिश्तों को खूनी होने से बचाया जा सके।

बी-68, हवेली ज्ञानद्वार,
सेठी कॉलोनी, जयपुर-302004

विवाह है या आडम्बर

भूचंद जैन

भारतीय संस्कृति में वंश (कुल) परम्परा को जीवित रखने के लिये शादी (विवाह) का आयोजन अनादिकाल से होता आ रहा है। भारतीय संस्कृति में विवाह को एक पवित्र संस्कार माना गया है जो दो आत्माओं (स्त्री-पुरुष) का मिलन है। स्नेह सूत्र के बंधन में बांधने का पवित्र रिश्ता है। जिस में भोग को विशेष प्रश्रय नहीं दिया है। यह समाज के संतुलन को बनाने का एक मार्ग है। ऐसे बंधन को हीनता से दूर रखा जाता है। विवाह संसारिक सुखों को भोग कर परिवार की रचना का एक माध्यम है। जिसका आयोजन दोनों पक्ष अर्थात् वर-वधु पक्ष अत्यन्त ही आनन्द, उल्लास, उमंग से करते हैं। उसे सामाजिक पारिवारिक रिश्तों में मजबूत करते हैं। जीवनभर पति-पत्नी अपने आत्मीय प्रेम के साथ परिवार के उत्थान, विस्तार की बागडोर संभाले हुए रहते हैं। ऐसे पवित्र बंधन विवाह के आयोजन, परिवार की मर्यादा, सामाजिक व्यवस्था के आधार पर सदियों से होते आ रहे हैं। ऐसे विवाह बंधन में जितनी सादगी संतुलन, समानता, सौहार्द रखा जाएगा उतना विवाह आनंदायक होगा। उसकी यश कीर्ति बढ़ेगी और समाज सुधार की पहल होगी। लेकिन आजकल विवाह को आडम्बर की पगडंडियों पर ऊँचा चढ़ा कर इसकी जितनी भी पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक आदि मर्यादाएं थी उसे मटियामेट कर दिया है अब तो हर समाज में धनाढ्य

व्यक्तियों ने विवाह को आडम्बर का प्रतीक बना कर कई प्रकार की आर्थिक, पारिवारिक, सामाजिक उलझने पैदा कर दी है। जिसके कारण विवाह के पवित्र बंधन की मर्यादा समाप्त होने लगी है। जैन समाज में तो विवाह अब प्रतिस्पर्धा का शिकार हो चुका है। पैसे के प्रदर्शन ने सभी मर्यादाओं को लांघ दिया है। कीमती उपहारों ने समाज के असहाय वर्ग को झखझोर कर रख दिया है। भद्दे, फुहड़, प्रदर्शनों ने जैन संस्कृति को लज्जित कर दिया है। विवाह भोज अब दिखावे की पगडंडियों पर चढ़ते हुए बहुत खर्चीला बन गया है। जैन विवाह आडम्बरों के कारण न केवल जैन समाज ने वैवाहिक व्यवस्था पर कड़ा अंकुश न लगाया तो सामाजिक व्यवस्थाएं छिन्न-भिन्न हो जाएंगी और समाज कमजोर होगा जिस पर सभी अन्य समाज हावी हो जावेंगे।

जैन समाज ने शादी-विवाह आरम्भ से अंत तक खर्चीला बना दिया है। जब

सगाई की रस्म की जाती है तो रिश्ता करने से पहले लेन-देन का सौदा अब लाखों की रकम को पार करने लग गया है। सगाई करने जाने वालों की बढ़ती खर्चीली यातायात व्यवस्था एवं समर्थियों के लिये आलीशान भोज के आयोजन ने समाज को आर्थिक दृष्टि से कमजोर वर्ग के सामने गंभीर समस्या उत्पन्न कर दी है। लड़की को गहने चढ़ाने की रस्म में होड़ लग गई है। जिसके कारण समाज को आर्थिक दृष्टि से कमजोर एवं मध्य वर्ग के सामने अपने बच्चों की सगाई की समस्या मुंह बाये खड़ी हो गई है। ऐसे में सगाई सामाजिक मर्यादाएं तोड़ती हुई अन्य समाज से जुड़ने को मजबूर होने लगी हैं जो जैन समाज की सामाजिक व्यवस्था के लिए एक प्रकार का कलंक ही है। इतना ही नहीं खर्चीला सगाई व्यवस्था ने जैन समाज के बालक-बालिकाओं को मजबूत बदनामी वाले मार्ग को अपनाने के लिए मजबूर कर दिया है।

शादी की रस्म में बारात प्रमुख स्थान रखती है। अब तो जैन समाज के धनाढ्य वर्ग ने अपने पैसे के अहम् की पूर्ति के लिये इसे अधिक आडम्बरमय बना दिया है। यदि बारात के एक स्थान अर्थात् गांव शहर से अन्य गांव शहर ले जानी होती है तो यातायात व्यवस्था के लिये अधिक से अधिक कीमती गाड़ियों की कतार लगा देते हैं। यदि रेल यातायात में उपयोग करना होता है वे बारातियों के लिये वातानुकूलित डिब्बों की व्यवस्था में अपनी

लड़का एवं लड़की वाले शादी में दिखावे के लिए वाहवाही लूटने की होड़ में फिजूल खर्चों के लिये अपनी तिजोरी के ताले खोल देते हैं। यह सब सामाजिक व्यवस्था की बखिया उधेड़ने का काम है। अर्थात्भाव से कमजोर समाज के लोगों को नीचा दिखाने की चाल है। अपने अहम के लिये धन को पानी की तरह बहाने का नाटक है, आडम्बर ही है।

शान समझते हैं। कुछ पैसे वाले तो अब बारातें हवाई मार्ग से ले जाने में अपनी शान समझने लगे हैं। बारातियों के लिये यातायात के बीच मार्ग में शानदार भोजन व्यवस्था, सौन्दर्य के लिये कीमती सामान का जुगाड़, मनोरंजन के लिये नृत्यांगनाओं के नाचगान, खर्चीले बैंडों की व्यवस्था और आलीशान होटलों आदि में ठहरने पर अंधाधुंध पैसा खर्च किया जाता है। इस पर लड़की पक्ष वाले जितना अधिक खर्च किया जाय उस होड़ में लगे रहते हैं। बारातियों को तनिक भी कष्ट न हो इसका पूरा-पूरा खयाल रखा जाता है। एक प्रकार से शादी-बारात का माहौल अत्यधिक खर्चीला बन जाता है जो समाज की मर्यादा व्यवस्थाओं को मटियामेट करती है।

बारात शहर की शहर में निकलती है या अन्य जगह पहुँचती है तो दिखावे के लिये कई खर्चीले बैण्डों की व्यवस्था, मशहूर नृत्यांगनाओं की टोलियों, हास्य मनोरंजन के विचित्र वेशभूषा के कलाकारों की कतार के साथ-साथ सजे हाथी, घोड़े, ऊँट, आदि की कतारें बारात की शोभा लिये रहती हैं। इसके अतिरिक्त दिग्गज राजनैतिक हस्तियों, सिने कलाकार प्रख्यात धनाढ्य को बाराती बनाने में अपनी शान समझी जाती है जिसके जुगाड़ के लिए पैसा पानी की तरह बहाया जाता है। वहाँ सामने वधु पक्ष भी बारात के स्वागत के लिये अब तक विभिन्न बारातों के स्वागत के लिए की गई व्यवस्था में आलीशान शामियाने के स्थान पर उससे अधिक खर्चीला शामियाना लगाने, उसमें कलात्मक बिजली रोशनी व्यवस्था, सुरीले संगीत के लिये प्रख्यात कलाकारों के दल का प्रदर्शन, खर्चीले कैमरों की व्यवस्था के साथ-साथ अत्यन्त ही सुंदर फर्नीचर की व्यवस्था करने में धन खर्च की तरफ ध्यान देते हैं। इसके अतिरिक्त बारात के भोज के लिये कई प्रकार के एक से एक बढ़कर स्वादिष्ट व्यंजनों की व्यवस्था पर अनाप-शनाप खर्च करने की आपसी

होड़ लगी रहती है। खाने की व्यवस्था में अधिक से अधिक स्टॉल लगाने की प्रतिस्पर्धा ने अपनी सारी सीमाएं लांघ दी हैं। यह सब बहुत खर्चीला ही नहीं अपितु, आडम्बर की सभी हदें पार करने की धनाढ्य वर्ग में आपसी प्रतिस्पर्धा ही है। शादी में लड़के वाले आशीर्वाद समारोह में लड़की वालों की व्यवस्था से और अधिक दिखावा करने की फिराक में रहता है। लड़के वाले बारात में फुहड़ नृत्य, भद्दे प्रदर्शन की परवाह नहीं करता हुआ अपने लाडले की बारात को शाही बनाने की फिराक में रहता है। लड़का एवं लड़की वाले शादी में दिखावे के लिए वाहवाही लूटने की होड़ में फिजूल खर्चों के लिये अपनी तिजोरी के ताले खोल देता है। यह सब सामाजिक व्यवस्था की बखिया उधेड़ने का काम है। अर्थाभाव से कमजोर समाज के लोगों को नीचा दिखाने की चाल है। अपने अहम के लिये धन को पानी की तरह बहाने का नाटक है, आडम्बर ही है। इतना ही नहीं समाज के ऐसे धनाढ्य समाज के नियमों को धता बताने, नियम तोड़ने में अपनी शान समझते हैं और पैसे के बल पर समाज को नीचा दिखाने में अपनी कीर्ति मानते हैं। यह सब समाज को कमजोर करने, तोड़ने का धनाढ्यों का असामाजिक प्रभाव है।

समाज में शादी की व्यवस्था के अतिरिक्त मामरे की, परंपरा भी अब पचास लाख के मामरे की रकम को लांघ चुकी है। इसमें भी पैसे वालों की होड़ ने समाज के कमजोर वर्ग को नीचा दिखाने के लिये अपना अहम् पूरा कर रहे हैं। विवाह में छपने वाले शादी के शानदार, सुंदर, चमकीले कार्डों की छपाई भी दिखावे की पगडंडी पर चढ़ गई है और शादी के कार्ड पर अधिक खर्च कौन करता है, इसकी होड़ लगी हुई है। यह सब समाज को कमजोर एवं पंगु बनाने का धिनौना काम है। शादी में वर-वधु को कीमती उपहार देने की होड़ में

अर्थाभाव से पीड़ितों के सामने मुसीबत खड़ी कर दी है। इतना ही नहीं अब तो धनाढ्य वर्ग ने शादी में जंवाईयों को ओढाणी एवं लड़की के मढ़ (वस्त्राभूषण) देने में एक-दूसरे से आगे बढ़ने का कीर्तिमान स्थापित करने का इन पर अहम् सवार हो गया है। कुल मिलाकर शादी दिनों-दिन पैसे वालों की गोद में बैठ कर आडम्बर बनती जा रही है।

पैसे वालों ने अपनी लड़की की शादी में दहेज के नाम पर अपनी तिजोरी के पट खोल दिये हैं। कीमती से कीमती आभूषण, भौतिक साधन, आलीशान वस्त्र आदि देने में एक-दूसरे को पछाड़ने की होड़ लग गई है कुछ ने तो अपनी लड़की को नकद धन राशि देकर इन्हें रातोंरात लखपति, करोड़पति बना दिया है। यह सब धनाढ्य वर्ग का अहम् है, दिखावा है, आपसी प्रतिस्पर्धा है, झूठी वाहवाही का नाटक है, धन का दुरुपयोग है, सामाजिक व्यवस्था को बिगड़ना है, अर्थाभाव से पीड़ित समाज के भाई-बन्धुओं को चिड़ाना है, यह आडम्बर ही है।

समाज में यदि विवाह सादगी समानता, सहिष्णुता, स्नेह, सौहार्द, संतुलन आदि को बनाये रखते हुए की जाती है तो समाज के नियमों की पालना होगी। समाज की मर्यादा बनी रहेगी। सभी की आसानी से गुजर-बसर होती रहेगी। समाज की इज्जत बढ़ेगी। यदि शादी आडम्बरों, फिजूल खर्चों, भद्दे प्रदर्शन, फूहड़ नृत्यों, शाही व्यवस्था, अंधाधुंध खर्च, शाही व्यंजनों की भरमार, उपहार की होड़, सीमा पार दहेज, मामरे की बढ़ती रकम आदि कई विवाहित खर्चों पर रोक, पाबन्दी एवं अंकुश नहीं लगाया गया तो जैन समाज में उन्माद, आतंक, अत्याचार आदि के बढ़ने की संभावना बलवती हो जायेगी जो समाज के लिये हितकर नहीं होगी। जो समाज शादी-विवाह के आडम्बरों से बचायेगा तो वह समाज संगठित एवं समृद्धशाली बन सकेगा।

जूनी चौकी का बास,
बाड़मेर (राजस्थान)



विद्वानों का मत है कि पढ़ी हुई बातों से ज्यादा सुनी हुई बातें मानव मस्तिष्क को प्रभावित करती हैं और सुनी हुई बातों से कहीं ज्यादा देखी हुई बातों का मन मस्तिष्क पर स्थायी प्रभाव रहता है। इस तर्क के आधार पर टेलीविजन मस्तिष्क और बुद्धि के विकास का एवं मन के परिष्कार का अत्युत्तम साधन है। लेकिन पाश्चात्य की ओर अंधी दौड़ तथा टेलीविजन के हर कार्यक्रमों में व्यावसायिक स्थिरता का होना इसकी मौलिक महत्ता को केवल कम ही नहीं कर रहा है बल्कि इसने वास्तविक उपयोगिता के सामने एक प्रश्न चिह्न खड़ा कर दिया है। इसकी उपयोगिता में आये बदलाव से सबसे अधिक प्रभावित हो रहे हैं हमारे मासूम बच्चे जो भविष्य के कर्णधार हैं।

टेलीविजन देखना बुरी बात नहीं लेकिन सही कार्यक्रमों का चुनाव अत्यंत ही महत्वपूर्ण है तथा इस महती जिम्मेवारी को अभिभावकों को भी भली-भाँति समझना चाहिए। इसके लिए आवश्यकतानुसार उन्हें सही रूख भी अपनाना चाहिए। उन्हें बच्चों के साथ मिल बैठकर कार्यक्रमों की रूप रेखा बना लेनी चाहिए। इसके अलावा टेलीविजन देखने की समय सीमा का निर्धारण भी

होना चाहिए। परन्तु कार्यक्रम निर्धारण में बच्चे की भावना, उसकी उम्र और रुचि का भी ख्याल अवश्य रखा जाना चाहिए।

टेलीविजन के सामने बैठा अपरिपक्व मानसिकता का बालक नायक के जीवन को आम जीवन की वास्तविकता समझता है और उसे अपना आदर्श मानकर उसका अनुसरण करने लगता है या करने की चेष्टा करता है। नायक की छवि को अपने जीवन में उतारने का प्रयास उसे नैतिक चारित्रिक पतन के अंधे कुएं में धकेल देता है।

आज टेलीविजन जिस तरह का कार्यक्रम पेश कर रहा है उसका सीधा असर हमारे अबोध बच्चों पर पड़ रहा है। टेलीविजन से प्रसारित कार्यक्रमों में हिंसा, आतंक, सैक्स, पाश्चात्य शैली को अपनाने की होड़ यही सब आज हमारे बच्चों को देखने को मिलता है। लगातार टेलीविजन देखते रहने से बच्चों के मस्तिष्क का विकास अप्राकृतिक ढंग से होने लगता है उनकी बुद्धि क्षमता कम हो जाती है। जीवन का जो ज्ञान उन्हें अनुभव व धीरे-धीरे स्वयं हर पहलू को समझने की प्रक्रिया के बाद प्राप्त होना चाहिए वह टेलीविजन के माध्यम से असमय ही अधिकचरी हालत में उनके मस्तिष्क में

पहुँच जाता है। बच्चे जैसे एक ही छलांग में बचपन की दुनिया से बड़ों की दुनिया में पहुँच जाते हैं जहाँ की हर चीज को वे देख व सुन तो सकते हैं किन्तु पूरी तरह समझ नहीं पाते हैं।

टेलीविजन की वजह से बच्चे कहानियों की पुस्तकें, पत्रिकाएं आदि भी नहीं पढ़ते क्योंकि टेलीविजन की घटनाएं उन्हें ज्यादा जीवंत लगती हैं। बच्चे अपने सभी विचारों एवं प्रेरणाओं के लिए टेलीविजन पर ही आश्रित रहने लगे हैं। जिसका प्रभाव उनके स्वास्थ्य पर भी पड़ता है। चिकित्साशास्त्रियों के अनुसार, हिंसक कार्यक्रमों को टेलीविजन पर देखने से एसीडीटी, बदहजमी, उच्च रक्तचाप, पागलपन का दौरा, नेत्रपीड़ा आदि रोग होने की संभावना बढ़ जाती है।

बच्चों पर टेलीविजन से पड़ने वाले दुष्प्रभाव के कारणों का यदि गहन अध्ययन किया जाए तो इसमें अभिभावकों की भूमिका बहुत अधिक महत्त्व रखती है। आधुनिकता की अंधी दौड़ के कारण और समयाभाव के कारण अधिकतर माता-पिता अपने बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाते जिससे पाँच-छह घंटे जो बच्चों को अपने अभिभावकों की संगति में बिताने चाहिए उन्हें वे टेलीविजन के कार्यक्रम देखकर व्यतीत करते हैं। माता-पिता भी अपनी लाचारी दिखाते हुए उन्हें टेलीविजन के सामने बैठा देते हैं और उन्हें खाना-पीना यहां तक कि होमवर्क भी उन्हें वहीं बैठे-बैठे करा देते हैं।

टेलीविजन के दुष्प्रभाव के कारण आज मानवीय रिश्तों में भी संकीर्णता आ रही है। लोग एक-दूसरे से मिलने से कतराने लगे हैं। एक-दूसरे के पास आना जाना उन्हें अपने टेलीविजन कार्यक्रमों को देखने में व्यवधान महसूस होता है। आपसी सहयोग की भावना कम होती जा रही है। लोग अपने काम में सिमटते जा रहे हैं। नई पीढ़ी पारिवारिक स्नेह, सौहार्द, सहिष्णुता व नैतिकता की भावनाओं से वंचित होती जा रही है।

क्वार्टर नं. एफ-80, पोस्ट : सिन्दरी,
जिला : धनबाद (बिहार) 828122

आज का युवक भिन्न-भिन्न प्रकार के नशों में डूबता जा रहा है। नशे की आदत के तीन स्तर होते हैं पहला घर से प्रारंभ होता है। यदि बच्चा अपने बाप, भाई, चाचा, ताऊ या रिश्तेदार को तंबाकू, हुक्का, बीड़ी, सिगरेट, चरस, शराब इत्यादि पीते हुए देखता है तो वह सोचता है यह कोई अच्छी तथा आनन्द देने वाली चीज है। वह भी धीरे-धीरे इन्हें पीने लग जाता है। कई घरों में बच्चों को हुक्का भरना सिखाया जाता है। उनसे बीड़ी सिगरेट तंबाकू आदि दुकानों से मंगवाते हैं और कहीं-कहीं तो लड़कियाँ भी अपवाद नहीं हैं। ठेकों से शराब, बीयर, सोडा भी मंगवाते हुए नहीं हिचकते। इस प्रकार प्रथम स्तर में ही बच्चा नशे की पहली दहलीज पर पैर रखता है।

दूसरे स्तर पर बचपन के बाद स्कूल व कॉलेज में मित्रों द्वारा नशे की आदत डाली जाती है। चार दोस्तों के द्वारा यारी, दोस्ती की दुहाई देकर एक कश और एक घूंट पीने की मनुहार करते हैं। तथा आधुनिक विचारों की तरफ बढ़ने की दुहाई देते हैं। सिगरेट के धुएं के छल्ले बनाकर आधुनिकता का लबादा ओढ़ते हैं।

तृतीय स्तर पर जब मनुष्य पहुँचता है और वह स्वयं अपने पैरों पर खड़ा होकर पैसे कमाने लग जाता है। वहां उसकी एक नई दुनिया बस जाती है। वहां उसे कई प्रकार के व्यक्तियों से मेल-मुलाकात करने का अवसर प्राप्त होता है। वहां पर उसे मौज-मस्ती करने वाले साथी लालच भरी बातें करके उसे उकसाते हैं और धीरे-धीरे एक ढक्कन को कोका-कोला में डालकर पीने से शुरुआत करवा देते हैं। फिर क्योंकि वह मां-बाप पर आश्रित न रहकर स्वयं कमाता है तो साधन की चिंता भी नहीं रहती। इस तीसरे चरण से जो व्यक्ति नशे के घर में प्रवेश कर चुका होता है वह उस घर से कभी नहीं निकल पाता। पत्नी, परिवार, बच्चे सब बर्बाद हो जाते हैं।



नशों की दुनिया

चुन्नीलाल बंसल

बच्चों की पढ़ाई का भविष्य अंधकार में चला जाता है। स्वयं का स्वास्थ्य खराब हो जाता है पर हम तो अंग्रेजों के जमाने के जेलर हैं हम नहीं सुधरेंगे। फिर तो कभी गम भुलाने के नाम पर और खुशी के नाम पर दौर चलता रहता है। यहां तक कि पत्नी को मारना, रात देर तक घर में आना, बाप-दादा की संपत्ति को बेचना पर पीना जरूर। यहां मुझे एक पुराना किस्सा याद आता है “एक व्यक्ति ने किसी शराबी से खांसी के इलाज के लिए पूछा। शराबी ने कहा शाम को दो घूंट पी लेना तुम्हारी खांसी चली जाएगी। उस व्यक्ति ने उसे पूछा इस चीज की क्या गारंटी है कि दो घूंट से मेरी खांसी चली जाएगी। तब शराबी ने कहा कि इस दो घूंट से तो मेरी दस एकड़ जमीन चली गई, क्या तेरी खांसी नहीं जाएगी?”

इन तीनों स्तरों से कैसे मुक्ति मिले? जी हां किसी भी स्टेज से गुजर रहे हो उसकी मुक्ति का समाधान अवश्य है। जिस प्रकार बीमारी का पता जल्दी लगने से उपचार भी जल्दी हो जाता है। उसी प्रकार नशे का भी उपचार हो जाता है और वह साधन है बिना पैसे का। वह है ध्यान लगाना। जिस समय नशे का सेवन करने की

बात मन में उठती है उसी समय ध्यान लगाकर बैठ जाओ। शुरू-शुरू में ध्यान लगाना थोड़ा कठिन होता है, उस समय में आप उस सत्संग में बैठना शुरू कर दो जहां अच्छी बातें होती हों। हमारे चारों ओर का आभामंडल अगर दूषित होगा, गलत संगत होगी तो वह गलत आदत नहीं छूट सकती और सत्संग का आभामंडल होगा तो मन के विकार अपने आप दूर होते चले जाएंगे।

पहले चरण में अक्सर भारत के ग्रामीण क्षेत्र के बच्चे संलग्न पाये जाते हैं। इसके जिम्मेवार अभिभावक हैं। जिस घर के लोग नशे का व्यसन करते हैं वे बच्चों को व्यसन करने से कैसे रोकेंगे। बच्चों को नशे के गुण-दोष का ज्ञान नहीं होता। बस शोकिया तौर पर पीने लग जाते हैं जब उन्हें नशे की दुनिया का हानि-लाभ का पता लगता है तो वे छोड़ देते हैं। क्योंकि अभी वे पूर्व प्राथमिक के चरण में होते हैं। जिस प्रकार छोटे पौधे को हम जैसा स्वरूप प्रदान करते हैं वह उसी में परिवर्तित होता जाता है।

दूसरा स्तर उनका होता है जिन्हें नशे की आदत तो पड़ गई, पर परिवार के दबाव, समाज के भय, धर्म के डर से वे इस आदत को छोड़ देते हैं।

तृतीय स्तर उनका होता है जिन्हें भली-भांति यह पता है कि नशा उनके शरीर के लिए कितना खतरनाक है परन्तु उनकी हालत उस व्यक्ति जैसी होती है जो कंबल को छोड़ना चाहता है पर कंबल उसे नहीं छोड़ता इस अवस्था को हम बड़ी दयनीय कह सकते हैं। इसे एक रोग की संज्ञा भी दी जा सकती है। एक ऐसा रोग जिसे दवा और दुआ दोनों की जरूरत होती है।

यहां मैं एक निजी संस्मरण भी लिखना चाहूंगा। मेरी माताजी बताती है कि हमारे पिताजी बीड़ी का सेवन करते थे। एक बार वे पंजाब के मानसा से रेलगाड़ी में यात्रा कर रहे थे दिन था मंगलवार, समय था शाम का। पिताजी ने एक हनुमानजी की मूर्ति बैग से निकालकर उसकी पूजा की हनुमान चालीसा का पाठ किया। फिर आरती करके हनुमानजी की मूर्ति वापिस रख दी और उसी बैग में से बीड़ी निकालकर पीने लगे। तभी सामने बैठे हुए एक साधु ने कहा सेठ जी हनुमानजी की पूजा कर ली? पिताजी ने कहा हां। साधु ने कहा झूठ तुमने कोई पूजा नहीं की क्योंकि तुम्हारा मन पूजा की बजाय बीड़ी में रमा हुआ था। पिताजी ने बीड़ी छोड़ने का प्रण लिया। साधु ने कहा छोड़ी कहां है? अभी तो बैग में ही रखी है और उसी समय बीड़ी का बंडल रेलगाड़ी से बाहर फिकवा दिया और उसके पश्चात पिताजी ने कभी बीड़ी नहीं पी और उस साधु के सत्संग के कारण उनकी बीड़ी पीने की आदत हमेशा के लिए छूट गयी।

इस पहलू का एक ओर चेहरा है वह है सरकार। आज का शासन तंत्र नशे के व्यापार को आमदनी का साधन मानता है और राज्य सरकारों में आमदनी के लिए एक होड़ लगी रहती है। शराब के, तंबाकू के, गुटके के ठेकेदारों को अधिक से अधिक छूट देने की। क्यों? सरकार का एक टैक्स का साधन है नशा के सौदागरों को लाइसेंस देने का। जो ज्यादा पैसा देगा वही उस क्षेत्र में

जायज, नाजायज नशे का व्यापार करेगा। हम उस समय भूल जाते हैं कि सरकार की समाज के प्रति भी कुछ नैतिक जिम्मेवारी है।

“किस काम का वह दरिया, जिसमें नहीं है पानी।” वह आमदनी किस काम की जो साध्य को ही खा जाए। जितनी आमदनी होती है उससे ज्यादा तो

सरकार का पैसा उन बीमारियों को ठीक करने में “स्वास्थ्य” के नाम पर बजट में लग जाता है। कानून है पीकर गाड़ी न चलाएं और हर सड़क पर पीने का इंतजाम है। “पीने के पानी की प्याऊ मिले न मिले ठेका तो मिल ही जाएगा।”

219-ए, शिव नगर कॉलोनी
भिवानी (हरियाणा)

आधुनिकाएं

(1)

मैं हूँ रिश्वत
अच्छे-अच्छे मेरे आगे होते हैं नत
जो मेरे आगे झुका
कार्य उसका नहीं कोई रुका।
जब तक हूँ दबी-छुपी
तब तक हूँ खिली-फुली
खुल-खिल कर आ जाऊँ तो
बन जाती है सब की दुर्गत।
मेरे ही इंगित पर
बिक जाता भगवान
हत्यारे मुस्काते
पाप सभी कट जाते।
मेरी ही कुटिल मुस्कान पर
अमरसिंह ने जान गंवाई
औरंगजेब ने मुँह की खाई;
जनतंत्र, राजतंत्र, कुलीनतंत्र
सबको बाँधे मेरा मंत्र।
ऊपर से तिलकधारी
यथार्थ में हैं मेरा चारी
मेरी क्यारी सींचो
जिसका चाहो कान खींचो।

(2)

मैं हूँ सिफारिश
लावारिसों की वारिस
रिश्वत की सहोदरा
कृपालु का मैं अस्त्र हूँ
असहायों का शस्त्र हूँ
अपढ़ अनगढ़ जो भी आए
मेरी बदौलत सब टिक जाय

मेरा नाम भजो
हीनता को तजो
जिसने मेरा दामन पकड़ा
चल जाता चाहे हो छकड़ा।
अंधा देखे, बहरा सुने
पंगु लांघे पर्वत
प्रामाणिक कट छंट जाते
चलती जब मेरी करवत।

(3)

मैं हूँ बेईमानी
मैंने सारी धरती छानी
मैं ही करती मिलावट
मैं ही भरती रीता घट।
जो बन जाये मेरा
सात मंजिल उसका डेरा
पलक पांवड़े मैंने बिछाए
फलो-फूलो मेरे साए।

●
रिश्वत, सिफारिश, बेईमानी
लंगड़ी-लूली और कानी
हम ही जग की कर्ता-धर्ता
सबका पेट हमसे भरता
हम विकास की अवरोधक
हम हताशा की बोधक
चेरी हैं हम सर्वनाश की
साझीदार हैं काल फांस की।

“अणुव्रत डायरी” से साभार
प्रेषक : निर्मल रांका, कोयम्बटूर

स्वस्थ जीवन और प्राणायाम संतुलन



■ मुनि किशनलाल ■

प्राणायाम शक्ति का अक्षय भंडार है। प्राण ही जीवनी शक्ति है। प्राण से ही समस्त प्राणी प्राणवान बनते हैं, नहीं तो निर्जीव हो जाते हैं। प्राण जड़ और चेतना के मध्य सेतु है। यह सेतु नहीं होता तो न जड़ क्रियाशील होती और न चेतना अपना कोई कार्य कर पाती। प्राण ऐसा शक्तिशाली तंत्र है जिसके बिना कोई भी क्रिया और अंग सक्रिय नहीं हो सकते। प्राण का जीवन में प्रथम स्थान होने से हमें प्राण और प्राणायाम को अच्छी तरह समझ कर ही उसका सम्यक् उपयोग करना चाहिए। श्वास लेना और छोड़ना प्राणायाम है। प्राणायाम को सामान्यतः ऐसा ही समझा जाता है। श्वास की गति को उच्छेद कर लेना ही प्राणायाम नहीं है, यह प्राणायाम की स्थूल प्रक्रिया की ओर मात्र संकेत है। प्राणायाम के हार्द को समझने के लिए प्राणायाम के सूक्ष्म तंत्रों एवं उसकी लयबद्ध प्रक्रिया पर ध्यान देना होगा। मानव शरीर रचना की यह एक विचित्रता है कि यह स्व-नियंत्रित है और साथ ही मस्तिष्क का मेडुला भाग श्वसन क्रिया को प्रभावित करता है। इसी तरह ईड़ा, पिंगला और सुषुम्ना का प्राणपथ भी हमारी जीवन शृंखला के

आधारभूत रहस्य हैं। श्वसन स्वतः एवं संकल्प के द्वारा नियंत्रित होता है। श्वसन में केवल श्वास लेना और छोड़ना दिखाई देता है। यह स्थूल क्रिया है। श्वास में स्वर का उदय होना अस्त होना चलता है उसका प्रारंभ होना, बदलना ऐसे क्रिया कलाप है जिसे संपादित करना टेढ़ी खीर है साथ ही इतना सूक्ष्म ज्ञान है कि बायां-दायां एवं मध्यम में प्रवाह की तरह बहने वाला एवं प्रत्येक श्वास-प्रश्वास में पाँच तत्त्व भी साथ गतिशील है। यह मात्र कल्पना नहीं है, प्राचीन ऋषियों ने स्वयं के शरीर की प्रयोगशाला में प्रयोग कर सिद्धान्तों की घोषणा की। यह बात अलग है कि इस अध्यात्म विद्या की सुरक्षा, और विकास नहीं कर पाएँ। अब भी समय है कि उस स्वरोदय विज्ञान का विश्लेषण शिक्षण-प्रशिक्षण की व्यवस्था कर अति प्राचीन विद्या को पुनः जीवित किया जा सके। यह प्राचीन विद्या की अपूर्व सेवा हो सकती है।

श्वसन में अनेक गैसों के साथ प्राण वायु भी भीतर फेफड़ों में जाती है।

वह फेफड़ों से रक्त के साथ मिलकर पूरे शरीर में संचार करती है। दूषित वायु पुनः बाहर आ जाती है यह सामान्य व्यवस्था और नियम है।

स्वरोदय विज्ञान क्या है ?

स्वरोदय भारत की प्राचीनतम विद्या है। भूत, वर्तमान और भविष्य को जानने के लिए मनुष्य में इच्छा और उत्कट आकर्षण है। उसका परिणाम जानने के लिए ऋषियों ने ज्योतिष विद्या अंक, विद्या, शुक्र विद्या, प्रश्न कुण्डली विद्या आदि अनेक विद्याओं का आविष्कार किया। उसमें एक विद्या स्वरोदय विद्या है। स्वर के उदय की विद्या।

क्या है स्वर? क्या है उदय?

यह यर्थाथ सर्वविदित है कि हम लोग श्वास के कारण जीवित हैं। श्वास का आना-जाना रुक जाये तो मनुष्य की तत्काल मृत्यु हो सकती है। श्वास-प्रश्वास प्रतिक्षण आ रहा है और वापिस लौट भी रहा, कुछ क्षण कभी रुकता है अथवा हम लोग उसे वाहर अथवा भीतर रोकने की कोशिश करें तो रुकता भी है। यह तो सामान्य आदमी जानता

है किन्तु यह बहुत कम लोगों को मालूम है कि कभी बायें नथूने से श्वास आता है तो कभी दायें नथूने से श्वास आने लगता है। कभी -कभी दोनों नथूनों से श्वास-प्रश्वास गतिशील रहता है। यह कोई आकस्मिक घटना नहीं है अपितु एक सार्वभौम नियमानुसार चलने वाली प्रक्रिया है। प्रकृति की विचित्रता है कि बड़े ही अनुशासित ढंग से यह होता है। प्रकृति ने मनुष्य में मानों यह स्वतः संचालित व्यवस्था नियोजित कर रखी है।

भारतीय स्वर ज्योतिष के अनुसार महिने के 30 दिनों की व्यवस्था है। चैत्र शुक्ल 1-2-3 को प्रातः सूर्योदय के समय चन्द्र स्वर चलेगा। चैत्र कृष्ण 1-2-3 को सूर्य स्वर चलेगा। इसी क्रम में 4-5-6 शुक्ल में सूर्य स्वर चलेगा। 4-5-6 कृष्ण पक्ष में चन्द्र स्वर चलेगा। फिर 7-8-9 शुक्ल पक्ष में चन्द्र स्वर चलेगा। कृष्ण पक्ष में 7-8-9 को सूर्य स्वर चलेगा। 10-11-12 शुक्ल पक्ष में चन्द्र स्वर चलेगा। 10-11-12 कृष्ण पक्ष में सूर्य स्वर चलेगा। 13-14-15 शुक्ल पक्ष में चन्द्र स्वर चलेगा। कृष्ण पक्ष में 13-14-15 सूर्य स्वर चलेगा। प्रसन्न विजय स्वरोदय ग्रन्थ में इस तथ्य को इस रूप में प्रस्तुत किया है -

“आदौ चन्द्रः सिते पक्षे, भास्करे तु सिते तरे।

प्रतिपत्तो दिनान्यांकं, स्त्रीणि त्रीणि चन्द्रोदये” ॥

शुक्ल पक्ष में प्रथम तीन दिन सूर्य स्वर 1-2-3 सूर्योदय के समय कृष्ण पक्ष में प्रथम तीन दिन चन्द्र स्वर सूर्योदय के समय।

कृष्ण पक्ष	स्वर	शुक्ल पक्ष	स्वर
1-2-3	चन्द्र स्वर	1-2-3	सूर्य स्वर
4-5-6	सूर्य स्वर	4-5-6	चन्द्र स्वर
7-8-9	चन्द्र स्वर	7-8-9	सूर्य स्वर
10-11-12	सूर्य स्वर	10-11-12	चन्द्र स्वर
13-14-15	चन्द्र स्वर	13-14-15	सूर्य स्वर

श्वास-प्रश्वास दीर्घ : जीवन दीर्घ

प्रत्येक व्यक्ति दीर्घ जीवन चाहता है। दीर्घ जीवन का नुस्खा स्वयं उसके पास है। हमारा जीवन श्वास-निःश्वास पर आधारित है। श्वास की मात्रा अधिक व्यय होती है जीवन शीघ्र पूरा होता है। श्वास की मात्रा अल्प खर्च होती है वो जीवन दीर्घ हो जाता है। श्वास की गति मंद और लयबद्ध होती है जीवन दीर्घ होता है।

श्वास की इस स्वाभाविक गति को घटा कर 11 अंगुल तक आने पर प्राण स्थिर होता है। श्वास की इस गति को 10 अंगुल ले आने पर आनंद की प्राप्ति होती है। श्वास की गति को 9 अंगुल ले आने पर कवित्व प्राप्त होता है। श्वास की गति को 8 अंगुल ले आने पर वाक्सिद्धि प्राप्त होती है। श्वास की इस गति को 7 अंगुल ले आने पर दूरदृष्टि प्राप्ति होती है। श्वास की इस गति को 6 अंगुल ले आने पर हल्कापन अनुभव होता है। श्वास की इस गति को 5-4-3-2 अंगुल ले आने पर नाना सिद्धियां, विभूतियां प्राप्त होती हैं। श्वास की इस गति को 1 अंगुल ले आने पर अदृश्य शक्ति प्राप्ति होती है। स्वर ज्योतिष के विद्वानों का ऐसा कथन है।

सामान्यतः मनुष्य 2 सैकण्ड में श्वास लेता है 2 सैकण्ड में छोड़ता है। एक मिनट में 15 श्वास-प्रश्वास हुए। इस तरह एक दिन में 21600 श्वास-प्रश्वास की क्रिया कर लेता है।

दूसरा एक सामान्य नियम है श्वास की गति बाहर जाते समय प्रायः 12 अंगुल तथा श्वास अन्दर आते समय है 10 अंगुल होती है। श्वास भीतर जाकर बाहर आने में 4 सैकण्ड लग जाते हैं। यदि श्वास के अन्दर से बाहर आने के समय को 4 सैकण्ड की बजाय 5 अथवा 6 कर देते हैं तो हमारा जीवन दीर्घ हो जाएगा। श्वास की गति मंद अथवा तीव्र होने के कई कारण हैं।

1. व्यक्ति गीत-संगीत गा रहा है उसकी गति 16 अंगुल हो जाती है।

2. खाना खाते समय श्वास की गति 20 अंगुल हो जाती है।

3. चलते समय श्वास की गति 24 अंगुल हो जाती है।

4. सोते समय श्वास की गति 30 अंगुल हो जाती है।

5. परिश्रम करते समय श्वास की गति 36 अंगुल से अधिक हो जाती है।

श्वास की इस स्वाभाविक गति को घटा कर 11 अंगुल तक आने पर प्राण स्थिर होता है। श्वास की इस गति को 10 अंगुल ले आने पर आनंद की प्राप्ति होती है। श्वास की गति को 9 अंगुल ले आने पर कवित्व प्राप्त होता है। श्वास की गति को 8 अंगुल ले आने पर वाक्सिद्धि प्राप्त होती है। श्वास की इस गति को 7 अंगुल ले आने पर दूरदृष्टि प्राप्ति होती है। श्वास की इस गति 6 अंगुल ले आने पर हल्कापन अनुभव होता है। श्वास की इस गति को 5-4-3-2 अंगुल ले आने पर नाना सिद्धियां, विभूतियां प्राप्त होती हैं। श्वास की इस गति को 1 अंगुल ले आने पर अदृश्य शक्ति प्राप्ति होती है। स्वर ज्योतिष के विद्वानों का ऐसा कथन है।

तरस उठी ममता

दुःखी मन दुःखी आत्मा,
 हर पल अधूरा पन-सा ।।
 न जीने की इच्छा, न मरने का गम ।
 सताता है मुझको, हर पल हर दम ।
 तरस गई आंखें, तरस गया मन ।
 कहां छुपा रखा है, आपने उसे भगवान् ।
 गोद है खाली, आँचल है सूना ।
 माँ बनने का खाब अधूरा,
 तरस उठी ममता, तरस गया दुलार ।
 कहां से लाऊं, एक बाल गोपाल ।
 मेरी फुलवारी, बिन फूलों के ।
 डाली के कांटे, मुझको हैं चुभते ।
 न भाती है मुझको हंसी,
 हंसी में ही मैं, गम को दुपाती ।
 अपना ये दुःख कह न पाऊं,
 बिन बालक के रह न पाऊं,
 उजड़ी पड़ी ममता मेरी,
 मन में चैन कहां से लाऊं,
 माँ का अर्थ ममता से है,
 उस अर्थ को कैसे समझूं,
 दूध पिलाऊं किसे मैं अपना,
 इस दूध की कीमत किसे समझाऊं,
 अकेलापन मुझको है खलता,
 जीवन में अधूरा पन-सा लगता,
 जिसके लिए तरसती हूं मैं,
 किस पे लुटा दूं अपनी ममता ।

◆ लता पारख
 द्वारा : सुमेरमल पारख
 9/26 अमान कोल स्ट्रीट,
 ब्लू स्टार होटल के पास
 वालटैक्स रोड, चेन्नई - 600003



स्वार्थ की खातिर

टाँग खींचने की कला में, हो गये सब माहिर ।
 एक-दूसरे को गिराते हैं, स्वार्थ की खातिर ।।
 पहले तो दीजिए आप भी, अपने वाले को सब्र ।
 फिर खोदे पीठ पीछे उसकी, हरदम ही कब्र ।।
 ऊपर से शरीफ लगते हैं, भीतर से बेईमान ।
 चल रही है ऐसे लोगों की, धड़ल्ले से दुकान ।।
 झुग्गी झोपड़ी तो उनकी, बसरे की है जान ।
 बसा हुआ है यहीं पर, उनका हिन्दुस्तान ।।
 वही के वही रह गये हैं, अनसुलझे ही सवाल ।
 मचता रहा है जिन पर, बार-बार बवाल ।।
 चौकीदार ही बन गये, जब घर के चोर लुटेरे ।
 फिर अपने घर के क्यों न उजड़े, सारे ही बसरे ।।
 चरमरा कर गिर गई ये, रिश्तों की दीवार ।
 रहा नहीं है अब इनमें, पहले जैसा प्यार ।।
 पतंग की तरह कटी ये, संबंधों की डोर ।
 जब प्रेम-भाई चारे का, मांझा है कमजोर ।।
 रहा नहीं बाप बेटे में, अब जरा सा भी भेद ।
 एक साथ खाते पाऊच, करते नहीं हैं भेद ।।
 बूढ़े दादाजी भी अब, यह देखकर हैरान ।
 कम कपड़ों में पोतियां भी, दिखलाती है शान ।।
 दोनों का बना है युगों से, विपरीत ही आचरण ।
 सास-बहू के झगड़े में, हुआ पति का मरण ।।

◆ रमेश मनोहरा
 शीतला गली, जावरा (म.प्र.)

संस्कृति के अक्षर पढ़े जाते नहीं

विकृति विस्तार लेती जा रही है निरन्तर,
संस्कृति के अक्षर पढ़े जाते नहीं बताओ क्या करें।

आदेश उपदेश के सब ग्रंथ वजनी-सर-चढे हैं,
जुलूस किस राह से निकले-बताओ क्या करें।

आदर्श सारे खुद ओढ़ कफन पड़े चौराहों पर,
इन्हें जलाएं या दफनाएं बताओ क्या करें।

रिश्ते रसहीन हुए अपनापन जहर भरा,
दे रहा मात पर मात सकुनी बताओ क्या करें।

चम्मच भर सच तो पचता-नहीं-रूचता नहीं,
झूठ का हलाहल पीता आदमी बताओ क्या करें।

कद्रदां इन्सानियत के नजर आते नहीं यहां,
पहले मजहब पूछता है आदमी-बताओ क्या करें।

प्रदूषण से पीड़िता माँ भारती सतत पुकारती,
न सुनते महामहिम ही न संसद-बताओ क्या करें।

लिखावट चुक गई सारी नहीं कोई कुछ भी समझ पाया,
हांसिये की आंख नम है-बताओ क्या करें।

जिया तन्हा मरूं तन्हा-तन्हा सफर सारा,
न मिला हमसफर कोई-बताओ क्या करें।

◆ बंशीलाल 'पारस'

ओशो कुंज, टी-14, बापूनगर, भीलवाड़ा - 311001

चूँकि मैं पत्थर हूँ

होनहार कारीगर जब-जब सधे हाथों से करता है चोट,
तब-तब मैं और निखर जाता हूँ चूँकि मैं पत्थर हूँ।

पहाड़ के शिखर से तेजी से लुढ़कता-लुढ़कता,
नदी में बहता-बहता गोल हो जाता हूँ, चूँकि मैं पत्थर हूँ,

मंदिर, मस्जिद, गिरिजा, गुरुद्वारा, घर हो या दफ्तर,
हर नींव का आधार बन समा गया, चूँकि मैं पत्थर हूँ।

अहंकार व ममकार से विचलित अज्ञानियों ने मुझे बदनाम कर दिया,
मुझे रास्ते का रोड़ा व झगड़े का हथियार बना दिया, चूँकि मैं पत्थर हूँ।

तुम आदमी हो, चाहे जो कहो निज स्वार्थ-वश,
मैं तो प्रतिक्रियाविहीन ही जीवन जीऊंगा, चूँकि मैं पत्थर हूँ।

मैं नहीं भूल सकता उस चैतन्य की चेतना को, संवेदना को,
जिसने मुझे सिखाया अपने अनुरूप ढलना, चूँकि मैं पत्थर हूँ।

◆ गोपाल लाल पंचोली

'महाप्रज्ञ छाया', 18 कोठी फील्ड,
सुदर्शन नगर, शाहपुरा (भीलवाड़ा)

बिच्छू बन गए साँप

भगवान दास ऐजाज़

चोर भी मांगे मुआवजा
ऐसा वक्त खराब
कौआ बैठा डाल पे
चोंच खिलौना दाब।

बाल सुअर का आंख में
सबके मुंह हराम
दो दो पैसे में बिकें
भरी कचहरी राम।

पल-पल पलता देखिये
झूठ, कपट, छल-पाप
थाने में सच बोल के
फंस जाएंगे आप?

दफ्तर थाना कोर्ट हो
या कोई फुटपाथ
तुम देखोगे हर जगह
भीख मांगते हाथ।

हमने देखी है मियां
आंख में उगती ईख
अफसर कैसे मांगता
आंख दिखा कर भीख।

उसको थानेदार ने
समझाया है ठीक

भीख मांगने का हुनर
उस्तादों से सीख।

वो भी जाए जान से
जो सिद्ध करे कसूर
कातिल बाइज्जत बरी
जज साहिब मजबूर।

बेगुनाह के खून की
ईट ईट पर छींट
खूनी मिट्टी से बना
न्यायालय की ईट।

न्यायालय में केस को
जाए लकवा मार
लोक अदालत फैसले
होते कभी-कभार।

ये कैसी बरसात है
रात रही है काँप
चींटे बिच्छू बन गए
बिच्छू बन गए साँप।

साँप के काटे की दवा,
मुमकिन हो ऐजाज़।
अगर आदमी काट ले,
मिले न चाटासाज़।।

टी-451, बलजीत नगर, नई दिल्ली-110008

छाया भाग्य है

काया से छाया है, काया है तो छाया है
छाया कितनी भी बड़ी हो जाये
काया कितनी भी छोटी हो
छाया समझने लगे स्वयं को बड़ा
भ्रमित हो भी जाये छाया
किन्तु अंधेरा हुआ नहीं कि छाया गायब
काया फिर भी कायम
भाग्य छाया है कर्म काया है
छाया को समझना होगा
कि वह मात्र प्रतिबिम्ब है काया की।

■ देवेन्द्र कुमार मिश्रा, जैन हार्ट क्लिनिक के सामने
एस.ए.एफ. क्वार्टर्स, बाबू लाईन, परासिया रोड, छिंदवाड़ा (म.प्र.)

मर कर भी जीने वाले वही होते हैं जो दूसरों के सुख के लिये जीते हैं। सुख और दुख दोनों ही जीवन के सत्य हैं उन्हें स्वीकार कर मस्ती के साथ औरों को सुखी बनाते हुए जीवन जीना ही सार्थक व प्रसन्नता-प्रदायक जीवन है।



जीवन को जीने का दिशाबोध

पी.डी. सिंह

प्रज्ञापुरुष जीवन सागर के गहन अन्वेषक हैं। उन्होंने अपना समग्र जीवन, ज्ञान, साधना सभी कुछ मानव जाति के सुख, स्वास्थ्य एवं कल्याण को ही समर्पित कर रखा था। वे कहा करते थे, “मेरे पूर्ण सुखी, स्वस्थ एवं प्रसन्न रहने का राज यही है कि मैं मानव मात्र के स्वास्थ्य, कल्याण एवं सुखी जीवन के लिये कुछ भी करके सुख एवं आत्मपरितुष्टि का अनुभव करता हूँ। सेवा करके तो देखो, कितना सुख मिलता है! निस्वार्थ सेवा तो केवल सुख ही सुख देती है जबकि स्वार्थमय सेवा अपेक्षित प्रतिदान न मिलने पर आपको निराश एवं दुखी भी कर देती है और आपके मनोभावों में विकार आ जाता है और आपका सेवाभाव आहत हो जाता है।”

जीवन ईश्वर द्वारा प्रदत्त एक सुनहला वरदान है, उपहार है। ईश्वर की ओर से मानव को यह जीवन स्वस्थ और सुखी रहने के लिये ही दिया गया है साथ ही कुछ विशेष अपेक्षा के साथ कि वह उसकी बनाई सृष्टि को सत्यम्-शिवम्-सुन्दरम् की भाव-भावना के साथ सहजीवन व सहअस्तित्व के वातावरण में उपभोग भी करे और संरक्षण भी। प्रकृति से तादात्म्य रख के ही हम सुखी हो सकते हैं।

हमें जीवन के महत्त्व को समझना है। जीवन जीने के लिये है, इसमें रुचि लेना सर्वप्रथम आवश्यकता है निराशा तो जीवन के साथ अमैत्रीभाव है। वस्तुतः जो जीवन में रुचि नहीं लेता है, प्रसन्न नहीं रहता है वह तो जिन्दगी के बोझ को

ढोने वाला एक दयनीय पशु है। धर्म, कर्म, ज्ञान, योग, भोग, त्याग सब बाद में है, सर्वोपरि तो जीवन में रुचि है। अपने जीवन को जैसा भी है स्वीकारना ही समझदारी है। अपनी परिस्थितियों को कोसकर निराशासंपूरित नरक बना लेना नासमझी है। जीवैष्णु (जीवन की इच्छा) निराशा के लिए महौषधि है। जीवन के सौंदर्य, आकर्षण एवं उपयोग को नहीं जानने, नहीं स्वीकारने वाले जीवन से ऊब जाते हैं। दूसरों से की गई आशा, अपेक्षा सुख कम, दुख अधिक देती है। जो निरपेक्ष एवं निवृत्ति भाव रखता है, वीतराग भाव रखता है उसका दुख कोई नहीं छीन सकता है।

दीन-दुखी जनों के लिये उपयोगी बनना जीवन को माधुर्य प्रदान करता है, जीवन एक मधुर संगीत बन जाता है। जीवन की सरगम पर बेसुरा राग नहीं अलापें। याद रखिये हमारे अन्तर में व्याप्त ईश्वर तत्त्व हमें सदैव सुख का रास्ता दिखाता है पर हम जान बूझ कर आँखें बन्द किये रहते हैं।

याद रखें कि हमारी निराशा, घृणा, क्रोध, द्वेष आदि मनोभावों का प्रभाव

हमारे अंग-प्रत्यंग पर पड़ता है और हमारे स्वास्थ्य व मनोदशा को, हृदय व मस्तिष्क को तथा शरीर के एक-एक कोशिक को प्रभावित करता है। रक्त व स्नायु संस्थान, पाचनक्रिया सभी पर असर पड़ता है। चिन्ता, भय और क्रोध हमारे स्नायु तंत्र में कंपन तथा रक्त में विषैला तत्त्व पैदा करते हैं। मानसिक तनाव, पेट का अल्सर, हृदयघात, कमर दर्द आदि महारोग इसी के उत्पाद हैं। सभी लोग आत्मविश्वास से ही आगे बढ़ते हैं। किसी का खोया आत्मविश्वास लौटा देना उसकी सबसे बड़ी सेवा है। हताश होना एक अपराध है स्वयं अपने प्रति तथा औरों के प्रति भी। विश्वास के प्रकाश में चिन्ता का अंधकार लुप्त हो जाता है। ईश्वर भक्ति एवं सद्ग्रन्थ विश्वास प्रदान करते हैं।

धीरे-धीरे मस्ती और मुस्कान को अपने स्वभाव का अंग बना लें। मस्त स्वभाव न होने पर आप छोटी-छोटी बातों पर बड़ी चिन्ता करने लगेंगे। एक बात सच है कि मस्ती और प्रभु के प्रति भक्ति जैसी फक्कड़ कबीर की थी जो मस्ती में गाते थे ‘मेरो मन लाग्यो राम फकीरी में’

झाँकी है हिन्दुस्तान की

वह मनुष्यों के प्रति अथाह निःस्वार्थ प्रेम जगाने से स्वयं ही आविर्भूत हो जाती है। चिढ़ाने वाला व्यक्ति दुष्ट और चिढ़ने वाला मूर्ख होता है। छोड़ें चिढ़ना और चिढ़ाना अपना लो हंसना और हंसाना। कटुता का उत्तर मृदुभाषा में देना सीख लो। हास्य और विनोद से आप स्वयं भारहीन रहेंगे। रोते रहना जीवन को बोझ बनाना है। रोते रहने वाले के पास लोग बैठना पसन्द नहीं करते।

अपमान का भय, रोग का भय, मृत्यु का भय, अनेक प्रकार के भय एवं चिंताएं हमें घेरे रहते हैं और सारा जीवन यूं ही रोते, डरते बीत जाता है। भय और चिंता समस्या का समाधान तो करते नहीं, हाँ हमारे स्वास्थ्य और सुख को खा जाते हैं। किसी तिथि, वार, संख्या, भूतप्रेत कई प्रकार की बातों को अशुभ या अपशकुन मान लेते हैं। चतुर ज्योतिषी और हस्तरेखा विशारद दुखीजन के दुख का अनुचित लाभ उठाकर भयभीत करके शोषण करते हैं। जिन्हें अपने ही भविष्य का ज्ञान नहीं वे दूसरे के भविष्य को बताते हैं। मनुष्य ईश्वरी शक्ति का ही अंश है। उसका भविष्य, हाथ की रेखाओं और ग्रहों द्वारा कदापि बांधा या नियंत्रित नहीं किया जा सकता है। मनुष्य की इच्छा शक्ति, संकल्प शक्ति और पुरुषार्थ ही उसका भविष्य बनाते हैं। परमात्मा ही सर्वसमर्थ है और हमारा पुरुषार्थ और कर्म ही जीवन के नियामक हैं। प्रारब्ध नियति और दैव अपना काम करें और हम अपना काम करें। अनिश्चित का भरोसा हमें दुर्बल बनाता है। हमारा उत्साह और पुरुषार्थ ही हमारे भाग्यनिर्माता हैं। अंध विश्वास से ग्रस्त होना बुद्धि का अपमान है।

मनुष्य में जीने की इच्छा मृत्यु की लालसा से अधिक बलवती होती है। जीवन एक उल्लास है, उमंग है। तूफानी खुशी का दूसरा नाम ही जिंदगी है। दूसरों के सुख के लिये जीने से ही सच्चा सुख मिलता है। दूसरों को सुख देने वाला कभी दुखी नहीं होता है। पावन धर्म पुस्तक गीता भी कहती है, 'न हि कल्याणकृत कश्चित्तं दुर्गतिं तात गच्छति'। किसी लेखक ने कहा है

यूँ तो जीने के लिये सब लोग जिया करते हैं,
लाभ जीवन का नहीं फिर भी लिया करते हैं।
मृत्यु से पहले भी मरते हैं हजारों लेकिन,
जिन्दगी उनकी है जो मरके जिया करते हैं।।

मर कर भी जीने वाले वही होते हैं जो दूसरों के सुख के लिये जीते हैं। सुख और दुख दोनों ही जीवन के सत्य हैं उन्हें स्वीकार कर मस्ती के साथ औरों को सुखी बनाते हुए जीवन जीना ही सार्थक व प्रसन्नता-प्रदायक जीवन है। महापुरुषों के दर्शन, चिंतन, उपदेशों को जो कुछ में समझ पाया हूँ आप पाठकों के साथ बाँटते हुए मुझे अपार प्रसन्नता होगी।

**निदेशक : टैगोर ग्रुप ऑफ इन्स्टीट्यूशन्स,
जयपुर (राजस्थान)**

● देश में पहली बार लोकसभा की तीन शीर्ष पदों पर महिलाएं आसीन हुई हैं। मीरा कुमार लोकसभा अध्यक्ष पद पर आसीन होने वाली पहली महिला हैं। सोनिया गाँधी कांग्रेस संसदीय दल की नेता हैं तथा लोकसभा में विपक्ष के नेता पद पर सुषमा स्वराज को बनाया गया है। वर्तमान लोकसभा में आजादी के बाद से सबसे ज्यादा 59 महिलाएं सांसद हैं। इनमें सबसे ज्यादा 23 महिलाएं सांसद सत्तारूढ़ कांग्रेस पार्टी की हैं। भाजपा की 13 सांसद हैं। तृणमूल कांग्रेस, समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी की चार-चार महिला सांसद हैं।

● नींद के मामले में भारत के लोग बहुत गरीब हैं। यहाँ 93 फीसदी लोग नींद की गरीबी रेखा से नीचे हैं क्योंकि उन्हें 8 घंटे की नींद नसीब नहीं होती जो स्वास्थ्य के लिए बहुत जरूरी है। नींद की कमी न सिर्फ जीवन की गुणवत्ता पर प्रभाव डालती है, बल्कि मधुमेह, मोटापा और रक्तचाप जैसी गंभीर बीमारियों का भी कारण बनती है। कम से कम 87 फीसदी भारतीयों ने माना है कि उन्हें नींद की परेशानी है। 58 फीसदी लोग काम के दौरान ऊँघते हैं और 11 फीसदी तो काम पर ही सो जाते हैं।

● भारत में तपेदिक यानी टीबी से पुरुषों में से आधे से अधिक धूम्रपान करने के कारण मृत्यु को प्राप्त करते हैं। टीबी के मरीज अगर धूम्रपान नहीं करते होते, तो उन्हें यह बीमारी नहीं होती।

● दुनिया की एक तिहाई बाल वधुएं भारत में हैं। वर्ष 2007 में लगभग 2.5 करोड़ बालिकाओं की शादी 18 वर्ष की उम्र होते-होते कर दी गई। यूनिसेफ

● भारत में गरीबी रेखा से नीचे जीवन व्यतीत करने वालों का प्रतिशत 33.14 है अर्थात् हमारे देश का हर तीसरा नागरिक गरीब है। विशेषज्ञ टीम ने विभिन्न आर्थिक व शैक्षणिक रिपोर्ट के आधार पर 33.14 प्रतिशत आबादी को बीपीएल तथा 66.86 प्रतिशत को अन्य श्रेणी के योग्य माना है।

बस चुप रहता हूँ

जसविन्दर शर्मा

महानगर में खरा दूध मिलना बहुत कठिन है। कितने ही दूध वाले बदलकर देख लिए मगर खालिस दूध कभी भी नसीब न हो पाया। एक बार एक ईमानदार दूध वाला मिल गया था मगर दो दिन उसका शुद्ध दूध पीकर हमारा सारा परिवार बीमार हो गया था। हमारे सयाने पड़ोसी ने बताया था कि मिलावट वाला दूध पीते-पीते हम शहर वाले लोग इतने अभ्यस्त हो चुके हैं कि अब शुद्ध चीजों से हमारे बीमार होने की पूरी संभावना बनी रहती है। ये चीजें उन्हीं लोगों को पच सकती हैं जो जी-तोड़ मेहनत करते हों।

खैर, सभी आज्ञाकार पतियों की तरह मैं भी छोटे-से पड़ोसी कस्बे के एक ग्वाले से खुद जा कर दूध लाने के लिए तैयार हो गया। पहले-पहल तो दो-तीन हम उम्र साथी भी मेरे साथ इस तीन किलोमीटर के सफर में हमसफर बने भी मगर धीरे-धीरे वे साथ छोड़ गए। ऐसा बंधन किसी के बस का नहीं था। हम में इतनी हिम्मत कहां कि पत्नी की बात ठुकरा सकें। रिटायर आदमी की वैसे भी घर में कोई खास कद्र नहीं रह जाती।

सुबह-सवेरे इतनी कवायद करने के बाद भी श्रीमती हमसे कभी खुश न हुई। कोई न कोई घुंडी फंसा ही देती है।

‘ये दूधवाला भी बदलना पड़ेगा’, हर हफ्ते श्रीमती ऐलान कर देती।

‘मगर आज तो उसने मेरे सामने अपनी भैंस का दूध निकाला है।’

‘तुम तो बस.... तुम्हें तो कोई भी आदमी आसानी से धोखा दे दे और फिर वो दूधवाला ठहरा। जिस दिन दूध ठीक होता है, उस दिन दूध की मात्रा कम होती है। बर्तन के ऊपर

झाग बहुत होते हैं। सारी कसर वहीं निकल जाती है।’

‘घर बैठे ही इतनी मीन-मेख निकालती हो, इतनी ही चुस्ती दिखानी है तो सुबह उठकर मेरे साथ चल पड़ा करो न। सुबह-सुबह मुझसे तो दूधवाले से झगड़ा नहीं होता। इससे पूरा दिन खराब निकलता है।’

‘ठीक है, मैं कल सुबह तुम्हारे साथ चलूंगी। दूधवाले को अच्छी डॉट लगाऊंगी। समझता क्या है वह अपने-आप को।’

श्रीमती अगली सुबह मेरे साथ सैर पर निकलती है। बाहर का मौसम उसे बहुत सुहावना लगता है। मुझसे झूठमूठ शिकवे करती है कि मैं उसे रोज क्यों नहीं उठाता। अपने सामने दूध निकलवाकर लाना तो एक बहाना मात्र है, असली मकसद तो है सुबह की ताजा हवा में सैर करना।

मुझे पता है कि श्रीमती ने आज ही आना है। रोज-रोज सुबह की प्यारी नींद कौन खराब करना चाहेगा। रात के डिनर में ही बारह बज जाते हैं, ऐसे में सुबह पांच बजे उठना बहुत बड़ी तपस्या का काम है।

दूधवाला डरता है उससे। वह जाते ही दूधवाले को आड़े हाथों लेती है। उसे डांटती है, उस पर दुनिया भर की सच्ची-झूठी तोहमतें लगती हैं, ‘कल ही श्रीमती सियाल कह रही थी कि ये शंभू महाराज का दूध कितना पतला और सिंथेटिक जैसा लगता है। चलकर उसका जुलूस निकालते हैं किसी दिन। मेरे जेठ का जवाईं सिविल सर्जन है, कहो तो दूध का नमूना भरवा दूं उसका।’

दूधवाले का दिल काला है, हेराफेरी जो करता है। दूधवाला कई तर्क देता

है, ‘बीबीजी, क्या करूं, चारा बहुत महंगा हो गया है, भूसे की बोरी का रेट पिछले एक साल में डबल हो गया है।’

उसके इन सभी तर्कों का जवाब श्रीमती के पास रेडीमेड पड़ा है। वह कहती है, ‘तो दूध का रेट भी तो तुमने दुगना कर दिया है, ऊपर से क्रीम निकालते हो, पानी मिलाते हो, कम नापते हो, झाग भर देते हो, सप्रेटा मिक्स करते हो।’

आधे घंटे की इस माथा-पच्ची में दूधवाला ‘जी बीबी जी’ कहकर अपना अपराध स्वीकार कर लेता है तथा वादा करता है कि वह आगे से कोई मिलावट व घोटाला नहीं करेगा। अगले दिन श्रीमती अलसाई हुई कहती है, ‘आज मेरी तबीयत ठीक नहीं है। तुम्ही अकेले चले जाओ दूध लाने।’

मैं दो मिनट लेट भी हो जाऊं तो दूधवाला मेरी इंतजार नहीं करता तथा फटाफट दूध दुह लेता है ताकि कोई न कोई हेराफेरी कर सके। अल-सुबह इतना अंधेरा होता है कि आवारा कुत्तों के डर से कई बार मेरी कंपकंपी छूट जाती है।

कई बार मैंने दूधवाले से कहा भी कि सूरज निकलने पर ही दूध निकाला करो मगर उसके तर्कों के सामने मैं निरुत्तर हो जाता हूँ। वह कहता है, ‘बाबूजी, सुबह मुंह-अंधेरे दूध न निकाला जाए तो रोशनी होते ही मक्खी इन जानवरों को परेशान करती हैं।’ इसलिए बिना कुछ कहे मैं दूध ले आता हूँ और श्रीमती जो कहती है सुन लेता हूँ और दूधवाले की दलील के आगे भी मौन साध लेता हूँ। मैं जानता हूँ कि बस चुप रहने में ही मेरी भलाई है।

5/2—डी, रेल विहार, मंसा देवी,
पंचकुला — 134114 (हरियाणा)

सभ्य समाज में कलंक

हिरालाल छाजेड़

प्राचीन काल में गुलामी की प्रथा चलती थी। आधुनिक युग में इसका रूप बदल गया है। नौकरी दिलवाने के बहाने कुछ ठेकेदार द्वारा अबोध बालाओं को शारीरिक शोषण के दलदल में धकेल दी जाती है। ऐसे ठेकेदार इन्हें वैश्यालयों या मसाज पार्लर में बेच देते हैं। जहां इन अबोध बालाओं को नाकरीय जीवन जीने को मजबूर होना पड़ता है जो मानवाधिकार का घोरतम उल्लंघन है। ऐसी लड़कियों का जीवन बर्बाद हो जाता है, समाज इन्हें हेय दृष्टि से देखता है। केन्द्रीय जांच ब्यूरो (सी.बी.आई.) के अनुसार नशीले पदार्थों और हथियारों की तस्करी के बाद अपराधों की दुनिया में तीसरा स्थान मानव तस्करी और संगठित अपराध ले चुका है।

बच्चों की तस्करी की काली दुनिया में उन्हें भीषण यातनाएं देना उन पर अत्याचार और यौन शोषण जैसे अपराध किये जाते हैं। सूत्रों के अनुसार एशिया विशेषकर भारत इस घिनौने अपराध के अड्डे के रूप में उभर रहा है। महिलाओं और बच्चों की खरीद फरोख्त का धंधा अरबों रुपये का है। अनुमान के अनुसार नेपाल और बंगला देश जैसे विभिन्न देशों से हर साल लगभग 25 हजार महिलाओं और बच्चों की तस्करी की जाती है। मानवीय सम्मान और अधिकारों के घोर उल्लंघन मानव तस्करी शारीरिक शोषण के अलावा बंधुवा मजदूरी या गुलामी और अंगों की बिक्री के अलावा खाड़ी देशों में ऊंट दौड़ के लिए भी बच्चों की तस्करी कर उनका शोषण किया जाता है।

मानव तस्करी का कार्य केवल गरीब और विकासशील देशों में ही नहीं इस घृणित व अनैतिक धंधे में अमेरिका जैसे अमीर व विकासशील देश भी काफी हद तक लिप्त हैं। इसके अलावा यूरोप, अफ्रीका और एशियाई देशों में भी यह अमानवीय धंधा फैला हुआ है।

संयुक्त राष्ट्र के अनुसार किसी भी व्यक्ति का शोषण के इरादे से उसे जबर्दस्ती धोखे से या लालच देकर या बहला-फुसलाकर कहीं ले जाना, रखना या नौकरी दिलवाना या उसे किसी और के वित्तीय या अन्य फायदे के लिए किसी के हवाले करना मानव तस्करी है। साफ शब्दों में आधुनिक युग की गुलामी कहा गया है। अमेरिकी सरकार द्वारा कराये गये सर्वेक्षण से पता चला है कि प्रतिवर्ष लगभग आठ से नौ लाख लोगों की तस्करी की जाती है। पीड़ितों में लगभग 80 प्रतिशत महिलाएं और बच्चियां होती हैं जिनमें से 50 प्रतिशत अवयस्क हैं। गैर सरकारी आंकड़ों के अनुसार दुनिया भर में मानव तस्करी का बाजार अरबों रुपये का है।

अंतर्राष्ट्रीय श्रम संगठन के अनुसार मजबूरी में गुलामी का जीवन जी रहे लोगों की संख्या सवा करोड़ के करीब है। हालांकि अन्य संगठन मानते हैं कि दरअसल यह संख्या पौने तीन करोड़ तक है।

इन भयावह आंकड़ों को देखते हुए मानव मात्र का सिर शर्म से झुक जाता होगा। पशुओं से बदतर जिंदगी जीने के लिए बाध्य मानव जीवन आज के युग में सभ्य समाज के ऊपर एक कलंक है। समाज, प्रशासन और कानून लागू करने वाली एजेंसियों की ढिलाई के कारण नारकीय जीवन जीने को मजबूर हैं। आज हमें इस बात का गर्व होता है कि हमारा देश गुलामी की बेड़ियों को तोड़कर स्वाधीन राष्ट्र बन गया किन्तु साठ वर्ष से ज्यादा स्वतंत्रता का सुख भोगने वाले देश में आज भी मानव तस्करी का नंगा नाच कायम है। देश के नेता चुनावों में बड़े-बड़े वादे करते हैं पर किसी का भी ध्यान इस मानव तस्करी की समस्या पर नहीं जाता। सामाजिक

संगठन मिलकर अगर इसके लिए तीव्र आंदोलन छेड़े व सरकार को बाध्य करें कि इस घृणित अपराध पर अंकुश लगाकर मानव सभ्यता पर लगने वाले धब्बे को मिटाने का पुरजोर प्रयास करें।

सरकार ने भी इस बात को माना है कि इन क्रूर अपराधों में से एक मानव तस्करी से निपटने के लिए अब तक ऐसी कार्रवाई नहीं की है जैसी करनी चाहिए थी। सरकार ने आश्वासन दिया कि अब जल्दी ही 65 करोड़ रुपये की एक महत्वाकांक्षी परियोजना लायी जायेगी जिसके तहत राज्य और जिला स्तर पर इस समस्या को जड़ से निपटने के प्रयास तेज किये जायेंगे। केन्द्रीय जांच ब्यूरो के निर्देशक ने माना कि भारत की स्थिति इस क्रूर अपराध में सबसे अजीब है। भारत इस धंधे में लिप्त गिरोह का अड्डा महिलाओं और बच्चों की खरीद-फरोख्त के बाजार तक पहुंचाने का रास्ता और गंतव्य भी है। कुल मिलाकर भारत इस काली दुनिया में अपूर्तिकर्ता और उपभोक्ता दोनों का अड्डा बना हुआ है। भारतीय श्रम संगठन की रिपोर्ट के अनुसार हर साल साठ से अस्सी लाख लोग मानव तस्करी में लिप्त होते हैं और इसमें पांच से नौ अरब डालर तक का कारोबार किया जाता है।

भारत सरकार इस क्रूरतम अपराध को रोकने के लिए कानूनों को सशक्त करके और पीड़ितों के बचाव और पुनर्वास के लिए सामाजिक संगठनों एवं गैर सरकारी संगठनों की प्रक्रिया में शामिल कर रही है। सरकारी संगठनों की प्रक्रिया में शामिल इस धंधे की दलदल से निकाले गये पीड़ितों के बचाव के बाद उनके पुनर्वास और समाज में उनकी वापसी का रूप अपनायेगी ताकि समस्या की जड़ से खत्म किया जा सके।

जयश्री टी. कंपनी, चौधरी बाजार,
नन्दीशाही, कटक-1 (उड़ीसा)

चंदनगढ़ के राजा विक्रम सत्यवादी थे। उनकी कथनी और करनी में कभी अंतर नहीं होता था। प्रजा उनको बहुत प्यार करती थी। लोग कहते थे कि राजा के सत्य बल के कारण कोई शत्रु चंदनगढ़ का अहित नहीं कर सकता। उनका दरबार प्रजा के लिए हमेशा खुला रहता था। एक दिन राजा के दरबार में रामलाल किसान आया। राजा विक्रम ने उसे घबराया हुआ देखकर उसके आने का प्रयोजन पूछा?

रामलाल ने बताया महाराज मैं यह निवेदन करने आया हूँ कि मेरा एक शत्रु मुझे बहुत परेशान कर रहा है। आप उससे मेरी रक्षा करें।

राजा ने कहा रामलाल मैं तुमको वचन देता हूँ कि मैं तुम्हारे शत्रु का विनाश करूँगा। अब तुम अपने शत्रु का कुछ अता-पता बताओ।

रामलाल के चेहरे पर कुटिल मुस्कान उभर आई। उसने राजा विक्रम से कहा महाराज, मेरा प्रचंड शत्रु का नाम है, सत्य। अब आप उसका विनाश करे क्योंकि आपने वचन दिया है।

राजा विक्रम किसान की बात सुनकर हतप्रभ रह गए। वह सत्य के उपासक होकर सत्य का विनाश कैसे कर सकते हैं। कुछ क्षण विचार करने के बाद राजा ने किसान से कहा रामलाल तुम एक सप्ताह के बाद दरबार में फिर आओ।

रामलाल ने पूछा महाराज अगर इस बीच सत्य के कारण मेरी कोई हानि या आपने अपना वचन पूरा नहीं किया तो?

राजा ने कहा अगर तुमको कोई हानि सत्य के कारण हुई और मैं वचन पूरा न कर सका तो अपना राजपद छोड़ दूँगा।

रामलाल के दरबार से चले जाने के बाद, महामंत्री चक्रपाणि ने कहा महाराज आपने किसान को वचन देने के पूर्व उसके शत्रु के बारे में पूछताछ नहीं की, इस बात से सारे सभासद चिंतित हो उठे।



किसान का सच

डॉ. रामसिंह यादव

राजकुमार देवव्रत ने कहा महाराज, अब आपको राजपद त्याग देना चाहिए। जो राजा बिना सोचे-समझे कार्य करता है, उसे राजा रहने का कोई अधिकार नहीं है।

राजा विक्रम को राजकुमार देवव्रत से ऐसी बात सुनने की आशा नहीं थी। उन्होंने महामंत्री और राजकुमार के विचार सुनने के बाद कहा सभासदों, अगर मैं किसान को दिया गया अपना वचन पूरा नहीं कर सका तो अगले सप्ताह राजपद त्याग दूँगा। लेकिन तब तक तो मुझे राजपद पर ही आसीन रहना होगा। क्योंकि किसान को मैंने राजा होने के नाते वचन दिया है। अगर मैं आज राज-पद त्याग देता हूँ तो नए राजा को मेरा दिया वचन पूरा करना होगा। यह कहकर राजा दरबार में चले गए।

राजा विक्रम बहुत चिंतित थे। उन्हें कभी इस बात की आशा नहीं थी कि किसान इतनी अटपटी बात करेगा। उनको महामंत्री और अपने इकलौते पुत्र राजकुमार देवव्रत की बातों को लेकर भी आश्चर्य था।

राजकुमारी विद्या ने पिता को चिंतित देखकर पूछा पिताश्री, मैं आपके माथे पर चिंता की रेखाएं देख रही हूँ। कृपया आप इसका कारण बताएं?

राजा ने बताया पुत्री, आज दरबार में एक किसान आया था। उसे मैंने एक ऐसा वचन दे दिया जिसे मैं कदापि पूरा नहीं कर सकता।

विद्या ने पूछा पिताश्री, मैं आपके द्वारा दिए गए वचन के बारे में जानना चाहती हूँ।

राजा ने बताया पुत्री, मैंने उस किसान को वचन दे दिया कि मैं उसके शत्रु का विनाश करूँगा। उसके बाद मैंने उससे शत्रु के बारे में पूछा तो उसने बताया कि.....

विद्या ने राजा के वाक्य को तुरंत पूरा कर दिया सत्य उसका शत्रु है।

राजा ने कहा हां पुत्री, उस किसान ने सत्य को ही अपना शत्रु बताया, अब तुम ही बताओ, मैं उसको दिए गए वचन को कैसे पूरा कर सकता हूँ?

विद्या ने कुछ पल विचार करने के बाद कहा पिताश्री, अगर आज्ञा हो तो मैं किसान को आपके द्वारा दिया गया वचन पूरा कर दूँगी।

राजा ने दुखी मन से कहा पुत्री, यह कैसे होगा?

राजकुमारी ने अपने पिता को बताया पिताश्री, राजा अपना कोई भी अधिकार नियमों के अनुसार किसी भी

सभासद को दे सकता है। आप मुझे सभासद नियुक्त करें, इसके बाद किसान को दिए गए वचन को पूरा करने का काम सौंप दे।

राजा विक्रम ने अपनी पुत्री का आग्रह स्वीकार कर लिया। राजा विक्रम को अपनी पुत्री विद्या की विद्वता और चातुर्य पर भरोसा था। पहले भी उसने कई विकट समस्याओं का समाधान करने में उनकी मदद की थी।

राजा विक्रम ने अपनी पुत्री को सभासद नियुक्त कर दिया। फिर राजाज्ञा जारी कर दी कि किसान को दिए गए वचन को, राजकुमारी विद्या पूरा करेगी।

चंदनगढ़ के घर-घर में इस बात को लेकर चर्चा होने लगी कि अब क्या होगा? भला सत्यवादी राजा सत्य के विरुद्ध कैसे लड़ेगा?

एक सप्ताह के बाद किसान राजा के दरबार में उपस्थित हुआ। उसने एक विजेता की तरह दरबार में उपस्थित लोगों की ओर गर्व से देखा। उसे यह देखकर प्रसन्नता हुई कि राजा सिंहासन पर उदास बैठे हैं लेकिन उसे यह देखकर आश्चर्य भी हुआ कि दरबार में उसके गांव का मुखिया सोमपाल और भूमि अधिकारी यशवंत भी उपस्थित हैं।

महामंत्री ने राजा विक्रम से कहा महाराज, किसान रामलाल दरबार में उपस्थित हो चुका है। आपको आज उसे दिया हुआ अपना वचन पूरा करना है।

राजकुमारी विद्या ने राजा के बोलने

से पूर्व ही कहा महामंत्री, राजा ने जो वचन किसान रामलाल को दिया है, उसे पूरा करने की जिम्मेदारी मुझे सौंपी है। यह कहकर राजकुमारी ने राजाज्ञा के प्रति महामंत्री की ओर बढ़ा दी।

महामंत्री ने राजाज्ञा को पढ़ने के बाद कहा राजकुमारी वचन न पूरा किये जाने की स्थिति में महाराज ने कहा है कि वह राजपद त्याग देंगे।

राजकुमारी ने पूरे विश्वास के साथ उत्तर दिया महामंत्री, मैं अपनी जिम्मेदारी समझती हूँ। उसके हर पहलू पर विचार कर चुकी हूँ। इस मामले में मेरे पास जो कुछ जानकारियाँ हैं, उन्हें मैं सभा में रख रही हूँ। दरबार में उपस्थित यह व्यक्ति न तो रामलाल है और न ही वह किसान है।

रामलाल राजकुमारी की बात सुनकर क्रोध में बोला राजकुमारी, आपकी बात बिलकुल गलत है। मैं रामलाल हूँ और किसान हूँ।

मुखिया सोमपाल ने भी रामलाल के पक्ष में कहा हाँ, राजकुमारी, यह व्यक्ति रामलाल ही है। भूमि अधिकारी ने भी रामलाल को जमीन जोतने वाला एक किसान बताया।

राजकुमारी ने मुस्कराते हुए कहा रामलाल, मेरे द्वारा दो असत्य सूचनाएं रखे जाने पर तुम इस प्रकार उत्तेजित हुए जैसे कोई अपने शत्रु को देखकर क्रोध में उबल उठता है। अब क्या असत्य तुम्हारा शत्रु हो गया है।

रामलाल पहले तो घबराया लेकिन

फिर अपने को संभालकर बोला राजकुमारी, मेरा शत्रु सत्य ही है।

राजकुमारी ने कहा अच्छी बात है। अब मैं सत्य के विनाश का आरंभ करती हूँ। यह कह कर उसने भूमि अधिकारी को आदेश दिया यशवंत। रामलाल की सारी जमीन उसके ही गांव के मजदूर दीनदयाल के नाम कर दी जाए, ताकि इस सत्य का विनाश हो जाए कि रामलाल एक किसान है।

रामलाल ने विरोध किया राजकुमारी, यह तो अन्याय है। राजकुमारी, ने रामलाल को डांटते हुए कहा रामलाल, सत्य तुम्हारा शत्रु है। तुमने ही राजा से प्रार्थना की थी कि उसका विनाश हो।

भूमि अधिकारी ने अपने खाते में आवश्यक उल्लेख करने के बाद कहा रामलाल को नगर के चौराहे पर ले जाकर फांसी पर लटका दो, ताकि रामलाल के होने का सत्य समाप्त हो जाए।

रामलाल रोने गिड़गिड़ाने लगा रामलाल, सत्य तुम्हारा शत्रु है और उसके विनाश के लिए तुम स्वयं राजा के पास आए थे। अब यह रोना धोना क्यों?

रामलाल ने सिर झुका कर कहा राजकुमारी, मैं दरबार में स्वयं नहीं आया था। वास्तव में महामंत्री चक्रपाणि ने अपनी पुत्री स्वर्णा को इस राज्य की रानी बनाने के लिए यह षड्यंत्र रचा था। उन्होंने ही राजकुमार को राजा के विरुद्ध भड़काया था। राजकुमार भी तुरन्त राजा बनना चाहते थे। महामंत्री ने मुझे भी सभासद बनाने का प्रलोभन दिया था। प्रलोभन में फंसकर ही मैं महामंत्री की योजना को मूर्त रूप देने राजदरबार में आया और महाराज से सत्य के विनाश का वचन लिया। मुझे क्षमा किया जाए। राजा विक्रम के आदेश से महामंत्री चक्रपाणि और राजकुमार देवव्रत को बंदी बना लिया गया।

राजकुमार भी तुरन्त राजा बनना चाहते थे। महामंत्री ने मुझे भी सभासद बनाने का प्रलोभन दिया था। प्रलोभन में फंसकर ही मैं महामंत्री की योजना को मूर्त रूप देने राजदरबार में आया और महाराज से सत्य के विनाश का वचन लिया। मुझे क्षमा किया जाए। राजा विक्रम के आदेश से महामंत्री चक्रपाणि और राजकुमार देवव्रत को बंदी बना लिया गया।



विकास के वर्तमान मापदण्डों की संरचना करने वाले अब स्वयं इनकी व्यर्थता को समझ चुके हैं। परंतु सुख का आधार तय करने के लिए सिर्फ अर्थशास्त्रियों की टोली भर काफी नहीं है। नए मापदण्डों की स्थापना एक जटिल विषय है और यह सार्थक बहस की दरकार करता है। प्रस्तुत आलेख अर्थशास्त्रियों के नए मापदण्डों की गई चूक की ओर समूह द्वारा 'सुख' के स्थापना की प्रक्रिया में इशारा कर रहा है।

विकास के नए मापदण्ड

डॉ. रामप्रताप गुप्ता

उपयुक्त विकास नीतियों की तलाश और मापदण्डों की तलाश अर्थशास्त्रियों को काफी उद्देलित करती रही है। सामान्य तौर पर विकास प्रयासों के परिणामस्वरूप हुई राष्ट्रीय आय में वृद्धि को ही विकास के मापदण्ड के रूप में प्रयुक्त किया जाता है। फ्रांस के राष्ट्रपति निकोलस सरकोजी ने नए मापदण्डों की तलाश हेतु एक आयोग की स्थापना कर इसे पुनः चर्चा का विषय बना दिया है।

विश्व में लगभग सभी राष्ट्र एवं सभी अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएं अपने विकास प्रयासों की जांच के लिए अपनी सुविधा हेतु आज भी राष्ट्रीय आय में वृद्धि की दर के मापदण्ड का ही उपयोग करते हैं। इस मापदण्ड की लोकप्रियता के बावजूद इसमें अनेक कमियां हैं, जैसे विकास के प्रयासों से उत्पन्न आय का वितरण कैसा है, उसके परिणामस्वरूप क्षेत्रीय और वैयक्तिक विषमताओं में वृद्धि तो नहीं हो रही है या हमारे जीवन के आधार प्राकृतिक संसाधनों का स्थायी विनाश तो नहीं हो रहा है?

आय में तेजी से वृद्धि के बावजूद अगर आय वितरण की क्षेत्रीय या वैयक्तिक विषमताएं बढ़ती हैं तो आम आदमियों में असंतोष बढ़ेगा। भारत और चीन की विकास दरें विश्व में सर्वाधिक होने के बावजूद वहां विकास प्रक्रिया से असंतुष्ट लोगों की संख्या बढ़ती ही जा रही है। गांधीजी उन्हीं

विकास प्रयासों को श्रेष्ठ घोषित करते थे जिनका सर्वप्रथम लाभ देश के सबसे गरीब व्यक्ति को सबसे पहले मिलता हो। विकास प्रयासों के मापदण्डों में पारिस्थितिकी प्रभावों की अनदेखी भी भारी पड़ने लगी है।

विकास के मापदण्ड के रूप में राष्ट्रीय आय में वृद्धि की दर की इन्हीं अनुपयुक्तताओं के कारण संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम या यू.एन.डी.पी. ने मानव विकास सूचकांकों का विकास किया और विकास के वैकल्पिक और बेहतर मापदण्ड होने के कारण इनका उपयोग बढ़ता जा रहा है, इनकी गणना में प्रति व्यक्ति राष्ट्रीय आय के साथ-साथ शिक्षा एवं स्वास्थ्य की बेहतरी के प्रयासों को भी शामिल किया जाता है। इन दोनों मापदण्डों के आधार पर विश्व के राष्ट्रों का क्रम भी बदल जाता है। मानव विकास सूचकांकों के प्रति व्यक्ति आय के मापदण्ड की तुलना में अधिक

व्यापक आधार वाले होने के बावजूद इनमें भी कुछ कमियां पाई जाती हैं। इन सूचकांकों के माध्यम से यह ज्ञात नहीं होता है कि इनका हमारे प्राकृतिक संसाधनों पर क्या प्रभाव हो रहा है। प्राकृतिक संसाधनों के टिकाऊ उपयोग का महत्वपूर्ण मुद्दा उपेक्षित रहता है।

पिछले दिनों विकास के उपयुक्त मापदण्डों की तलाश ने गति पकड़ी है। विकास प्रयासों के परिणामस्वरूप ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में तेज वृद्धि के कारण होने वाला जलवायु परिवर्तन विश्व के लिए बड़ा संकट बन कर सामने आया है। अनुपयुक्त विकास मापदण्डों के परिणामों को देखते हुए हमारे पड़ोसी राष्ट्र भूटान ने विकास का लक्ष्य कुल 'राष्ट्रीय सुख' को बनाया है। इसी तरह न्यू इकॉनॉमिक फाउंडेशन ने 'हेपी प्लेनेट इन्डेक्स' का उपयोग किया है। इसकी मान्यता है कि जीवन की गुणवत्ता केवल हमारे द्वारा उपयोग की जाने वाली वस्तुओं और सेवाओं की मात्रा पर ही निर्भर नहीं करती है, बल्कि हर व्यक्ति के जीवन संतुष्टि के बारे में उसके अपने दृष्टिकोण पर भी निर्भर करती है। अतः सांख्यिकी संगठनों को यह भी देखना होगा कि लोग अपने जीवन की परिस्थितियों का किस तरह मूल्यांकन करते हैं, सुखवादी अनुभवों और प्राथमिकताओं को भी अपने सर्वेक्षणों में शामिल करना पड़ेगा।

इस मापदण्ड के आधार पर किए गए सर्वेक्षण में कोस्टारिका का क्रम विश्व के राष्ट्रों में सबसे ऊपर है और सर्वाधिक आय वाले अमेरिका आदि का स्थान अपेक्षाकृत नीचा है। इस सूचकांक में विकास प्रक्रिया के पारिस्थितिकी प्रभाव को शामिल किए जाने से टिकाऊ विकास के पहलू को भी अनदेखा नहीं किया गया है। फिर भी इस नाप का आधार भी केवल मौद्रिक होने से बेहतर चिह्नित किए जा सकने वाले सूचकांक की आवश्यकता है तथा मात्र मौद्रिक सम्पोषणीयता के स्थान पर आर्थिक सम्पोषणीयता को देखा जाना आवश्यक है।

विकास के मापदण्डों पर उठाए गए अनेक प्रश्नों की पृष्ठभूमि में फ्रांस के राष्ट्रपति निकोलस सरकोजी ने गत दिनों उपयुक्त मापदण्डों के निर्धारण हेतु नोबल पुरस्कार विजेता अमरीकी अर्थशास्त्री जोसेफ स्टिग्लिट्ज की अध्यक्षता में एक आयोग की स्थापना की थी जिसके परामर्शदाता नोबल पुरस्कार विजेता अनिवासी भारतीय प्रो. अमर्त्य सेन थे तथा जीन-पाल फिटोसी उसके संयोजक थे। विश्व के अन्य 20 प्रमुख अर्थशास्त्री भी इस आयोग के सदस्य थे। इस आयोग से अपेक्षा की गई थी कि वह आर्थिक विकास के वैकल्पिक एवं व्यावहारिक मापदण्ड सुझाए तथा यह भी देखें कि इन मापदण्डों के लिए और किन सांख्यिकी सूचनाओं की आवश्यकता होगी।

इसकी रिपोर्ट में कहा गया है कि आर्थिक विकास, मुद्रास्फीति एवं बेरोजगारी के वर्तमान आकड़ों पर जनता कतई विश्वास नहीं करती है और सोचती है कि सरकार उन्हें बहलाने के लिए झूठ बोल रही है। अतः उत्पादन आधारित मापदण्डों के स्थान पर लोगों के कल्याण को विकास का मापदण्ड बनाया जाना चाहिए। वर्तमान पीढ़ी के

अलावा भावी पीढ़ी के कल्याण को भी इस मापदण्ड में समायोजित करना होगा। इसका अर्थ यह हुआ कि अब हमारे राष्ट्रीय उत्पादन को नापने के स्थान पर लोगों के कल्याण में प्रगति को आंकना होगा। हमें उत्पादन की अपेक्षा उपयोग पर ध्यान देना होगा। साथ ही उसमें गैर बाजार गतिविधियों को भी शामिल करना होगा। आज अनेक समाजों में गैर-बाजार गतिविधियां उनके उत्पादन और उपयोग का महत्वपूर्ण भाग होती हैं। परंतु इन गतिविधियों को चिह्नित करना और उनका आर्थिक मूल्य ज्ञात करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण है और इस दिशा में प्रयासों का अत्यंत अभाव है। अगर भारत और अन्य विकासशील राष्ट्रों की दृष्टि से देखें तो गैर-बाजार गतिविधियों के मूल्य को परिवार की आय में शामिल करने का अर्थ है उनकी आय में अप्रत्याशित वृद्धि बताई जाएगी इसके कारण आज गरीबी की रेखा के नीचे आने वाले परिवार गरीबी की रेखा के ऊपर आ जाएंगे और देश में गरीबी का प्रतिशत अत्यंत कम माना जाने लगेगा जो भारत में किसी को भी स्वीकार नहीं होगा।

आयोग ने मानव कल्याण को नापने के लिए कोई मापदण्ड नहीं सुझाए हैं अतः यह बाकी के सुझाव अस्पष्ट और व्यर्थ हो गए हैं। आयोग ने विकास मापदण्डों में टिकाऊपन और

पर्यावरण प्रभावों को शामिल करने की केवल बात ही कही है। रिपोर्ट के अनुसार टिकाऊ विकास के ज्ञान के लिए स्पष्ट और निर्धारित मापदण्डों की आवश्यकता है, परंतु उसने इन मापदण्डों की तलाश हेतु कोई प्रयास नहीं किए हैं। इनके मापदण्ड ऐसे होने चाहिए कि प्राकृतिक सम्पदा के भण्डारों में परिवर्तन या कमी या वृद्धि को समुचित और स्पष्ट रूप से ज्ञात कर सकें। वर्तमान में पर्यावरणवादियों के द्वारा बताई जा रही पर्यावरण में आ रही गिरावट पर कई अन्य अर्थशास्त्री प्रश्नचिह्न भी लगा रहे हैं। पर्यावरणीय सम्पोषणीयता के ज्ञान के लिए सुविचारित भौतिक मापदण्डों की आवश्यकता होती है, इनके विकास की दिशा में भी आयोग ने कोई प्रयास नहीं किया गया है।

कुल मिलाकर विश्व के चोटी के अर्थशास्त्रियों वाला यह आयोग भी विकास के वैकल्पिक मापदण्डों को सुझाने में असमर्थ रहा है। बात वर्तमान में प्रयुक्त मानव विकास मापदण्डों के आगे नहीं बढ़ सकी है। रिपोर्ट की इस असफलता के प्रति आयोग भी जागरूक है इसीलिए उसने अंत में लिखा भी है कि आयोग इस रिपोर्ट को विकास के उपयुक्त मापदण्डों के बारे में बहस की शुरुआत ही मानता है, उसका अंत नहीं। परंतु क्या एक विशेषज्ञ समिति का यह निष्कर्ष उचित है? सप्रेस

अपने द्वारा किया हुआ इन्द्रिय और मन का संयम तथा आत्म-नियंत्रण ही धर्म है।

● आचार्य तुलसी ●

संप्रसारक :

एम.जी. सरावगी फाउंडेशन

41/1-सी, झावतल्ला रोड, बालीगंज-कोलकाता-700019

● दूरभाष : 22809695

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना

अणुव्रत की आचार संहिता व्यापक आचार संहिता है। अणुव्रत का अर्थ है— नैतिकता। आज चहुँ ओर हाहाकार है। समूचा मानव समाज पीड़ित है अनैतिकता से। विधायिका, कार्यपालिका, न्यायपालिका, संचार माध्यम, शिक्षण संस्थान सभी भ्रष्टाचार, नशा और आडम्बर में लिप्त हैं। बढ़ते भ्रष्टाचार, नशा और आडम्बर ने हमारी विकास यात्रा की गति को मंद कर दिया है। समाज में व्याप्त इन बुराइयों के विरुद्ध आवाज उठाना भी आसान नहीं है क्योंकि हर डाल पर वे अपना डेरा डाले बैठे हैं। हाँ, इन बुराइयों के मूल कारणों पर प्रहार कर एक दीपक जला समाज में नैतिकता के प्रति निष्ठा को पुनः पैदा किया जा सकता है।

अणुव्रत आंदोलन ने समाज में व्याप्त बुराइयों पर अँगुली उठाई है। हमारे साधन, शक्ति सीमित हैं। अँगुली निर्देश का यह क्रम न सिर्फ गतिशील रहे वरन् लोकव्यापी बने और अणुव्रत की कार्यकर्ता शक्ति अनैतिकता के सामने प्रतिरोधक शक्ति बनकर खड़ी हो इस दृष्टि से अणुव्रत महासमिति के पास पूरे साधन हो यह भी अत्यन्त आवश्यक है।

आने वाले पाँच वर्षों में अणुव्रत की सर्व प्रवृत्तियाँ सुचारु रूप से संचालित हो और अणुव्रत के आंदोलनात्मक स्वरूप में तेजस्विता आए इस दृष्टि से अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना का वर्ष 2009-10 से प्रारंभ हुआ है। इस योजना के अन्तर्गत प्रतिवर्ष एक निश्चित अर्थ राशि विसर्जित करने वाले अर्थ प्रदाताओं के तीन वर्ग हैं—

विशिष्ट अणुव्रत योगक्षेमी

प्रतिवर्ष 51000=00 रु. का अर्थ सहयोग

विशेष अणुव्रत योगक्षेमी

प्रतिवर्ष 21000=00 रु. का अर्थ सहयोग

अणुव्रत योगक्षेमी

प्रतिवर्ष 11000=00 रु. का अर्थ सहयोग

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना के अन्तर्गत पाँच वर्षों तक नियमित रूप से अर्थ विसर्जन का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। महाप्रतापी अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी के जन्म शताब्दी वर्ष को दृष्टिगत रखते हुए अणुव्रत महासमिति की प्रवृत्तियों के सुचारु संचालन हेतु इस योजना का श्रीगणेश हुआ है। आप सभी से विनम्र अनुरोध है कि अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना से जुड़कर अणुव्रत आंदोलन के प्रचार-प्रसार में सहभागी बनें। आपका अर्थ सहयोग हमारे कार्य का आधार सम्बल बनेगा। अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना में अभी तक निम्न महानुभावों ने जुड़कर अणुव्रत के आंदोलनात्मक स्वरूप को निखारने में अपनी सहभागिता अंकित कराई है—

● विशिष्ट अणुव्रत योगक्षेमी

1. श्री जुगराज नाहर	चैन्नई	2. श्रीमती शांता नाहर	चैन्नई
3. श्री बी.सी भलावत	मुम्बई	4. श्री रमेश धाकड़	मुम्बई
5. श्री कमलेश भादानी	तिरुपुर	6. श्री मगन जैन	तुषरा

● विशेष अणुव्रत योगक्षेमी

1. श्री बाबूलाल गोलछा	दिल्ली	2. श्री सम्पत वागरेचा	वाशी
3. श्री सम्पत सामसुखा	भीलवाड़ा	4. श्री जसराज बुरड़	जसोल
5. श्री निर्मल नरेन्द्र रांका	कोयम्बतूर	6. श्री गोविन्दलाल सरावगी	कोलकाता
7. श्री ताराचंद दीपचंद ठाकरमल सेठिया	जलगांव		

● अणुव्रत योगक्षेमी

1. श्री जी.एल.नाहर	जयपुर	2. श्री विजयराज सुराणा	दिल्ली
3. श्री मीठालाल भोगर	सूरत	4. श्री बाबूलाल दूगड़	आसीन्द
5. श्री गुणसागर डॉ. महेन्द्र कर्णावट	राजसमन्द	6. श्री अंकेशभाई दोषी	सूरत
7. श्री महावीर मेड़तवाल	राजाजी का करेड़ा	8. श्री इन्द्रमल हिंगड़	भीलवाड़ा

अणुव्रत योगक्षेमी विसर्जन योजना से जुड़कर हम सभी प्रयास करें स्वस्थ समाज संरचना के सपने को धरती पर उतारने का। इस क्रम में आपका त्वरित सहयोग प्राप्त हो यही अनुरोध है। आप अपनी विसर्जन राशि बैंक ड्राफ्ट से अणुव्रत महासमिति के नाम से नई दिल्ली भिजवायें या केनरा बैंक की किसी भी स्थानीय शाखा में अणुव्रत महासमिति के खाता क्रमांक **0158101010750** में जमा करायें।

आपका सहयोग : हमारा आधार संबल

नववर्ष की मंगलवेला में मंगल पाठ सुनने उमड़ा जन सैलाब

श्रीडूंगरगढ़, 1 जनवरी। नववर्ष का नया प्रभात, नया उत्साह, नई उमंग, नया संदेश, फिजाओं में गुंजते मंगल मंत्र। अवसर था नव वर्ष के सूर्योदय पर आचार्य महाप्रज्ञ के सान्निध्य में आयोजित मंगलपाठ का। मंगल पाठ का श्रवण करने के लिए बीकानेर संभाग के विभिन्न क्षेत्रों से हजारों लोगों के पहुंचने के साथ ही देश के दूर दराज के अन्य अनेक प्रांतों से सैकड़ों लोग परिवार के साथ पहुंचे।

सभा भवन में विशाल जनमेदनी को नये वर्ष का संदेश प्रदान करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि मंगल और विकास ये दो शब्द बहुत प्रिय हैं। हर व्यक्ति मंगल चाहता है और विकास करना चाहता है। उन्होंने कहा कि संकल्प में शक्ति होती है। जब दृढ़ निश्चय होता है तो ऐसा कोई कार्य नहीं रहता जिसे किया ना जा सके। दृढ़ निश्चय से मनोबल बढ़ता है और लक्षित मंजिल प्राप्त होती है। इस अवसर पर आचार्य महाप्रज्ञ ने “आरोग्य बोहिलाभं समाहिवर मुत्तं दिंतु” एवं भगवान पार्श्व, भगवान महावीर के मंत्रों का पाठ करते हुए नव वर्ष को मंगलमय, शक्तिमय और आध्यात्ममय बनाने का आशीर्वाद प्रदान किया।

युवाचार्य महाश्रमण ने गत वर्ष का सिंहावलोकन करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि नये वर्ष के अवसर पर संकल्प करें कि आने वाले विघ्नों, बाधाओं से न घबराकर मनोबल योगबल, आत्म बल के द्वारा समाधान प्राप्त करेंगे।

अपने घर का निर्माण करें

श्रीडूंगरगढ़, 1 जनवरी। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि आज हिन्दुस्तान में हजारों लाखों घर बन रहे हैं पर वे सभी ईंट-पत्थर आदि पदार्थों से निर्मित हैं इसमें आदमी स्थाई नहीं रह सकता। स्थाई रहने के लिए अपने घर का निर्माण करें। आचार्य प्रवर सभा भवन में कल्याण मंदिर स्त्रोत पर

प्रवचन कर रहे थे। उन्होंने कहा कि आदमी का अपना घर आत्मा है। देह को अपना घर न समझें। नये वर्ष के नए दिन से अपने घर आत्मा में रहने की तैयारी प्रारंभ करें। आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि ध्यान आत्मा से परमात्मा बनने का रास्ता है। भगवान पार्श्व के ध्यान से सूक्ष्म शरीर को जलाकर परमात्म पद को प्राप्त किया जा सकता है और अपने घर में रहने की योग्यता पा सकते हैं। उन्होंने एकत्व भावना एवं अन्यत्व भावना के प्रयोग को परमात्मा बनने में योगभूत बताया। कल्याण मंदिर विचित्र स्त्रोत है। इसमें स्तुति से ज्यादा अध्यात्म के गूढ़ रहस्य समाहित किये हुए हैं। जिन रहस्यों को उजागर करना आचार्य सिद्धसेन जैसे योगी पुरुषों के ही वश की बात हो सकती है। अध्यात्म तक पहुंचने के लिए ध्यान आवश्यक है। ध्यान के बिना श्रेणी आरोहण नहीं हो सकता। युवाचार्य महाश्रमण ने गीता एवं जैनागम का तुलनात्मक विवेचन प्रस्तुत किया।

नागरिक अभिनन्दन समारोह

श्रीडूंगरगढ़, 2 जनवरी। आचार्य महाप्रज्ञ का नगरपालिका मण्डल एवं नगर की विभिन्न संस्थाओं ने स्थानीय सभा भवन में नागरिक अभिनन्दन किया गया। पालिका अध्यक्ष रामेश्वरलाल पारीक ने सर्व नागरिकों की तरफ से आचार्य महाप्रज्ञ को अभिनन्दन पत्र समर्पित किया। इस मौके पर युवाचार्य महाश्रमण भी उपस्थित थे। अभिनन्दन समारोह को संबोधित करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि अभिनन्दन व्यक्ति का नहीं अध्यात्म एवं करुणा का होना चाहिए। अध्यात्म से मानव जाति का उर्ध्वारोहण होता है और करुणा से मानवीय समस्याओं का समाधान मिलता है। हमने अहिंसा यात्रा के दौरान मानवीय समस्याओं को समझने का प्रयास किया। हमें उन

समस्याओं के समाधान में सफलता मिली इसका कारण है हम किसी राजनीतिक दल, जाति सम्प्रदाय से बंधे हुए नहीं हैं सम्प्रदाय और धर्म दोनों अलग-अलग हैं उन्होंने कहा कि धर्म सत्य है। सत्य कभी दो नहीं सकते। सत्य सभी के लिए एक है। सम्प्रदाय केवल धर्म करने का साधन है। सम्प्रदाय का अलग-अलग होना गलत नहीं है जिस तरह मकान व्यक्ति के लिए सुरक्षा का माध्यम है वैसे ही सम्प्रदाय धर्म करने का माध्यम है।

आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि प्रत्येक धर्म की नींव नैतिकता है और करुणा, संवेदनशीलता उसके स्तंभ हैं। स्तंभों के आधार पर धर्म का प्रसार बना हुआ है। आज हिन्दूस्तान में नैतिकता, करुणा और संवेदनशीलता का अभाव हो रहा है जिससे देश की छवि बिगड़ रही है। भ्रष्टाचार की अग्रिम सूची में भारत का नाम आने लग गया है, जो चिन्तनीय है। आचार्य महाप्रज्ञ ने नशा मुक्ति अभियान चलाने वाले व्यक्तियों को संबोध प्रदान करते हुए कहा कि ऐसा अभियान चलाने वाले स्वयं नशा मुक्त हो इस बात की अपेक्षा है। आज व्यक्ति सर्वप्रथम स्वयं को नहीं सुधारता, दूसरों को सुधारने की बात करता है। परन्तु जब तक व्यक्ति अपने भीतर भावुकता का जो नशा है, और क्रूरता, लोभ, मान छलकपट आदि जो भाव हैं इनको सुधारता तब तक दूसरों को सुधारने का प्रयास सार्थक नहीं होगा। उन्होंने स्वस्थ

व्यक्ति, स्वस्थ समाज एवं स्वस्थ अर्थव्यवस्था पर जोर देते हुए कहा कि व्यक्ति के सुधरने से ही समाज सुधरेगा और स्वस्थ अर्थव्यवस्था से ही राष्ट्र का निर्माण होगा।

आचार्य महाप्रज्ञ ने मानवीय समस्याओं एवं पारिवारिक समस्याओं के लिए अहिंसा प्रशिक्षण, पारिवारिक सौहार्द शिविरों की उपयोगी बताया एवं कस्बे में अपने लंबे प्रवास में ऐसे शिविरों से प्रशिक्षण लेने की प्रेरणा प्रदान की।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि भारत का भाग्य है कि आचार्य महाप्रज्ञ जैसे महान संत धरती पर विराज रहे हैं। आचार्य महाप्रज्ञ ने 79 वर्षों के संयम पर्याय में प्रेक्षाध्यान, जीवन विज्ञान, अणुव्रत और मानव उत्थान के विचारों से विश्व में पहचान बनाई है। ऐसे महापुरुष का अभिनन्दन करने से ज्यादा इनके कार्यों में सहभागी बनने का संकल्प लेना चाहिए।

नगर पालिका मंडल के अध्यक्ष रामेश्वरलाल पारीक ने सम्पूर्ण नगरवासियों की तरफ से अभिनन्दन करते हुए कहा कि मैंने अपनी जिन्दगी में कभी इतनी सफाई नहीं देखी। आपके पधारने पर शानदार व्यवस्था हुई है। सम्पूर्ण शहर का कण-कण पुलकित हो उठा है। आपके सान्निध्य में जो ऊर्जा मिली है उससे हमारा जीवन सार्थक हो जायेगा। श्याम महर्षि, रूपचंद सोनी, मोहनलाल सोनी, महावीर माली, रामगोपाल सुथार,

**शिष्टाचार बन रहे
भ्रष्टाचार के खिलाफ
आवाज उठाइये**

अणुव्रत आंदोलन

संवेदनशीलता के अभाव में बिगड़ रही है देश की छवि

रवीन्द्र गोलछा, रामकिशन उपाध्याय, देवीलाल उपाध्याय, कन्हैयालाल छाजेड़ ने भी अपने विचार व्यक्त किये। बनेचंद मालु ने आभार ज्ञापित किया। मीडिया प्रभारी तुलसी राम चौरड़ीया का विशेष योगदान रहा। संचालन सत्यदीप भोजक ने किया।

पोलिथीन का प्रयोग न हो

पालिका अध्यक्ष रामेश्वरलाल पारीख ने पर्यावरण शुद्धि के लिए संदेश देने के निवेदन पर आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि जिसके मन में गाय आदि पशुओं के प्रति करुणा है तो वह पोलिथीन का प्रयोग न करने का संकल्प ले। उन्होंने अनेक जगहों पर निरर्थक पोलिथीन गायों के द्वारा भोजन बनाये जाने की आंखों देखी घटनाओं का जिक्र किया। उन्होंने कहा कि पोलिथीन स्वास्थ्य के लिए हानिकारक सिद्ध हो रही है।

विधायक ने किये दर्शन

स्थानीय विधायक मंगलाराम गोदरा ने आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण के दर्शन कर आशीर्वाद लिया। इन्होंने इस मौके पर समसामयिक मुद्दों पर मार्गदर्शन प्राप्त किया। इस मौके पर व्यवस्था समिति के सहसंरक्षक विजयसिंह पारख, धनराज पुगलिया, भीकमचंद सेठिया, मोहनलाल सिंघी, मानिकचंद पुगलिया, प्रकाशचंद सिंघी व पूर्व पार्षद केसरदेव शर्मा आदि मौजूद थे।

बीकानेर संभाग का निवेदन

श्रीदूंगरगढ़ 3 जनवरी। गंगाशहर, बीकानेर चौखले की जोरदार अर्ज पर करुणासागर आचार्य महाप्रज्ञ ने 2011 में लाडनू स्थित जैन विश्व भारती के चातुर्मास की सम्पन्नता के बाद 2012 के छपर चातुर्मास से पहले के समय में गंगाशहर आने की घोषणा की। पूरे बीकानेर संभाग से हजारों की तादाद में उमड़ी भीड़ की मनोकामना को पूर्ण करते हुए आचार्य महाप्रज्ञ ने कहा कि आचार्य तुलसी शक्तिपीठ और मातुश्री साध्वी बालुजी की स्वर्ग भूमि के साथ वहां के लोगों की श्रद्धा भक्ति के कारण धर्मसंघ का बहुत बड़ा

आकर्षण का केन्द्र है। गंगाशहर की भूमि पर ही मातुश्री साध्वी बालु जी के लिए चैत्य पुरुष जग जाये' गीत का निर्माण हुआ था जो आज सबके लिए मंत्र बना हुआ है। आचार्य महाप्रज्ञ ने आचार्य तुलसी जन्म शताब्दी वर्ष तक निर्मित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय प्रज्ञा पीठ की परिकल्पना प्रस्तुत करते हुए कहा कि आज ऐसे केन्द्र की जरूरत है, जहां आदमी को बदलने का प्रशिक्षण मिल सके। क्रोध, अहंकार, आवेश आदि के मनो- भावों का परिष्कार करने वाला केन्द्र शक्ति पीठ बने इस ओर ध्यान देने की जरूरत है। आचार्य तुलसी शक्ति पीठ का ऐसा विकास होना चाहिए कि सम्पूर्ण विश्व के लोग शांति एवं जीवन निर्माण के लिए वहां पर आयें। हमारे प्रवास को 150 कि. मी. में सीमित करते समय गंगाशहर क्षेत्र हमारे चिंतन में था। इस क्षेत्र में बड़ा कार्य होना चाहिए इसकी पूरी योजना हमारे चिंतन में है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि जीवन में गुरु का महत्व सबसे ज्यादा होता है। सांसारिक प्राणी के लिए माँ का महत्व सबसे ज्यादा होता है। गंगाशहर में आचार्य महाप्रज्ञ की संसार पक्षीय मातुश्री साध्वी बालुजी की समाधि एवं गुरु आचार्य तुलसी की समाधि भी वहां है। इसलिए गंगाशहर का स्थान मुख्य है। उन्होंने कहा कि गंगाशहर उन क्षेत्रों में है जहां से अर्ज करने की भी जरूरत नहीं है। गंगाशहर के लिए कभी भी पधारने की घोषणा की जा सकती है।

समणी नियोजिका, समणी मधुर प्रज्ञा आदि समणीगण ने "थाने शक्ति पीठ बुलावे" गीत को स्वर दिया। गंगाशहर सभा के अध्यक्ष दुलीचंद चौपड़ा, टोडरमल ललवाणी, शांति प्रतिष्ठान के अध्यक्ष सुमेरमल दफ्तरी, अर्ज यात्रा के व्यवस्था प्रभारी हंसराज डागा, नोखा सभा के अध्यक्ष प्रेमसुख मरोठी, धनराज पुगलिया, टीकमचंद ललवाणी, मूलचंद बोथरा ने गंगाशहर बीकानेर संभाग में पधारने की अर्ज की। पत्रकार लूणकरण छाजेड़ ने कार्यक्रम का संचालन किया।

अहिंसा का सन्देश

श्रीदूंगरगढ़ 7 जनवरी।

विलक्षण प्रतिभा एवं असाम्प्रदायिक चिंतन से देश के गौरव एवं अणुव्रत करने वाले आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रदत्त अहिंसा प्रशिक्षण एवं सापेक्ष अर्थशास्त्र का नया प्रारूप विदेशी विद्वानों के बीच चर्चित हो रहा है। इसका प्रमाण है, ग्लोबल ग्रीन यूनिवर्सिटी के संस्थापक एवं इंग्लैंड के प्रमुख चिंतक डॉ. थॉमस डॉर्फन, प्रो. ग्लेन डी पेज, रेवरेण्ड लेलेण्ड। आर्क विशप डेलमेर रोबिन्सन, जेद्रिना सातियागो, डार्इने रूसो, विक्टर व्यासा जैसे विश्व प्रसिद्ध चिंतकों द्वारा प्राप्त टिप्पणियां इन विद्वानों ने आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा अहिंसा प्रशिक्षण के सुत्रों पर लिखित ट्रेनिंग इन नॉन वॉयलेंस, थ्योरी एण्ड प्रैक्टिकल को विश्व के लिए अपूर्व बताया है। उक्त जानकारी जैन दर्शन कार्यशाला में मुनि सुखलाल ने अहिंसा प्रशिक्षण पर विचार व्यक्त करते हुए प्रस्तुत लेखकों की समीक्षाओं की प्रतिलिपियां प्रदर्शित करते हुए दी।

इन समीक्षाओं में अमेरिका के आर्क विशप डेलमेर रोबिन्सन ने कहा है कि एक ईसाई पादरी के रूप में उस क्षेत्र का वर्षों तक व्यवहारिक प्रशिक्षण एवं उसके अनुप्रयोग कर अनुभव कर लेने के उपरान्त भी शांति जैसे अत्यन्त दुर्लभ विषय पर आज तक मुझे ऐसे ईश्वरीय तत्त्वयुक्त आलेख पढ़ने को नहीं मिले। उन्होंने लिखा है कि बाईबल सम्बन्धी मेरे अध्ययन से इस प्रश्न का समाधान नहीं हो पाया कि शांति क्या है? शायद यह मात्र एक शब्द है। मैं यह जानता हूँ कि उसकी अनुभूति किस प्रकार की है। आचार्य महाप्रज्ञ ने अहिंसा प्रशिक्षण अणुव्रत के जीवन मूल्यों को सम्पूर्ण रूप से प्रसिद्ध किया है। यह अपने उद्देश्य की दृढ़ता, संकल्प शक्ति एवं अनुप्रयोग में विरोचित कार्य है। ऊपर वर्णित शून्यताओं को भरने के लिए मूल्यवान परामर्शक के रूप में आचार्य महाप्रज्ञ को विश्व के बारे में एक ऐसी

दृष्टि मिली है जिसको ईश्वर स्वयं देखता है तथा उपयोग में लेता है। यह सचमुच आश्चर्यजनक है।

इंग्लैंड स्थित ग्लोबल ग्रीन यूनिवर्सिटी के संस्थापक डॉ. थॉमस डॉर्फन ने लिखा है कि यह कृति जैनों की प्राचीन शिक्षाओं पर आधारित कई सहस्राब्दियों की आध्यात्मिक साधना से उद्भूत विचारों का एक ऐसा उत्कृष्ट एवं संस्कृत ग्रंथ है। डॉ. डॉर्फन ने सम्मेलन के सभी राष्ट्राध्यक्षों तक अहिंसा के संदेश पहुंचाना जरूरी बताया है। मुनि सुखलाल एवं मुनि अक्षयप्रकाश ने सभा भवन में चल रही जैन दर्शन कार्यशाला में इस जानकारी के साथ आचार्य महाप्रज्ञ के इन प्रारूपों पर विस्तार से प्रकाश डाला एवं देश में अहिंसा प्रशिक्षण के 353 केन्द्र संचालित होने की जानकारी दी।

जन-जन में प्रेक्षाध्यान

श्रीदूंगरगढ़ 8 जनवरी। आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा 20 वर्षों तक गहन आगमिक अध्ययन एवं प्रयोगों के बाद वैज्ञानिक पुट के साथ प्रदत्त प्रेक्षाध्यान रूस के प्रत्येक व्यक्ति तक पहुंचाने को उत्सुक है वहां के प्रेक्षाध्यान प्रशिक्षक। श्रीदूंगरगढ़ में प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण लेने पहुंचे रूसी दल ने यही संकल्प व्यक्त किया।

प्रेक्षा इंटरनेशनल द्वारा आयोजित होने वाले अन्तर्राष्ट्रीय प्रेक्षाध्यान शिविरों, सेमिनारों में अब तक रूस के अनेक वैज्ञानिक, वकील, प्रोफेसर, इंजीनियर, पत्रकार, साहित्यकार हीलिंग गुरु, फिल्म जगत की हस्तियों ने प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण प्राप्त कर स्वयं प्रयोगों का अभ्यास कर रहे हैं तथा साथ ही दूसरों को भी लाभान्वित कर रहे हैं। रूस से आये 9 व्यक्तियों के दल को आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण के अलावा मुनि महेंद्रकुमार, मुनि किशनलाल, मुनि कुमारश्रमण, मुनि जयकुमार, समण सिद्धप्रज्ञ द्वारा प्रेक्षाध्यान, आसन, प्राणायाम का प्रायोगिक एवं सैद्धांतिक प्रशिक्षण दिया गया।

आचार्य तुलसी एवं अणुव्रत दर्शन की प्रासंगिकता पर राष्ट्रीय संगोष्ठी



जोधपुर, 27 दिसंबर। जनकवि गणेशीलाल व्यास 'उस्ताद' सभागार सूचना केन्द्र जोधपुर में "अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी और अणुव्रत दर्शन की प्रासंगिकता" विषयक राष्ट्रीय शब्द संस्कृति संस्थान जोधपुर तथा अणुव्रत समिति जोधपुर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित हुई।

शुभारंभ शब्द संस्कृति संस्थान के अध्यक्ष प्रो. डॉ. नंदलाल कल्ला द्वारा अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। प्रो. एन.के. माहेश्वरी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. शैलेन्द्र स्वामी ने शब्द संस्कृति संस्थान का परिचय दिया तथा डॉ. कृष्णा मोहनोत ने अणुव्रत समिति का परिचय दिया।

मुख्य वक्ता पद्मश्री मुजफ्फर हुसैन वरिष्ठ पत्रकार मुंबई ने कहा अणुव्रत एक सशक्त दार्शनिक विचारधारा है, जो मानवतावादी मूल्यों की स्थापना पर बल देती है। आज संपूर्ण विश्व में परमाणु बमों का खतरा मंडरा रहा है। ऐसी विकट परिस्थिति में आचार्य तुलसी द्वारा प्रतिपादित अणुव्रत दर्शन ही हमें प्रासंगिक लगता है। अणुव्रत हमें विध्वंस की ओर नहीं, निर्माण की ओर ले जाता है। यह मानवीय मूल्यों का रक्षक है।

विशिष्ट अतिथि डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' जयपुर ने कहा आचार्य तुलसी का अणुव्रत दर्शन संपूर्ण विश्व के लिए वंदनीय है। छोटे-छोटे संकल्प लेकर हम अणुव्रत के द्वारा मानवता के पथ पर ही अग्रसर होते हैं। धर्म के साथ नैतिकता का बंधन आवश्यक है। अणुव्रत दर्शन हमें नैतिक जीवन जीने की प्रेरणा देता है।

अणुव्रत महासमिति के अध्यक्ष निर्मल रांका ने कहा हमारे देश में अणुव्रत एक संजीवनी के रूप में जन-जन के हृदय में व्याप्त है। आचार्य तुलसी ने संपूर्ण भारत का भ्रमण कर अणुव्रत का प्रचार किया। आज हमें अणुव्रत का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार करने की आवश्यकता है।

मुख्य अतिथि समणी डॉ. मंगलप्रज्ञा (कुलपति : जैन विश्व भारती लाडनू) ने कहा आचार्य तुलसी एक व्यक्ति नहीं, बल्कि विचार थे। उनके द्वारा प्रतिपादित अणुव्रत आंदोलन निरंतर अबाध गति से आज भी गतिशील है। अणुव्रत एक विचारधारा ही नहीं, व्यावहारिक जीवन दर्शन भी है। अतः हमें अणुव्रत को अपने जीवन में अपनाकर मानवता की सेवा करनी चाहिए।

अध्यक्षीय उद्बोधन में अणुव्रत

पाक्षिक के संपादक डॉ. महेन्द्र कर्णावट ने कहा आज बचपन को रौंदा जा रहा है। नारियों की दशा दयनीय है। परिवार टूट रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में संवेदनशीलता को बनाये रखने के लिए अणुव्रत की प्रासंगिकता स्वतः सिद्ध है। अणुव्रत को अपना कर हम परिवार, समाज व देश का विकास कर सकते हैं।

बालोतरा से समागत मधुर गायक प्रकाश श्रीमाल ने आचार्य तुलसी के जीवन पर आधारित गीतिका के माध्यम से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध किया। गायक ताराचंद भंसाली ने गीतिका के द्वारा अणुव्रत प्रवर्तक आचार्य तुलसी की जीवन झांकी प्रस्तुत की।

कार्यक्रम में 'अणुव्रत सेवी'

कानराज सालेचा को अणुव्रत साधक के रूप में 'अभिनंदन पत्र' से सम्मानित किया गया। समणी डॉ. मंगलप्रज्ञा एवं पद्मश्री मुजफ्फर हुसैन को भी अभिनंदन पत्र भेंट किये गये। आशुकवि हनवंतराज मेहता ने संपूर्ण कार्यक्रम को गीतिका के रूप में समाहित कर प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन अणुव्रत समिति जोधपुर के अध्यक्ष घेवरचंद बोहरा ने किया। प्रो. डॉ. नन्दलाल कल्ला एवं शशि कुमार बिड़ला ने सभी अतिथियों को स्मृति चिह्न भेंट कर आभार व्यक्त किया। समारोह में प्रो. बी. सी. लोढ़ा, समाज सेवी विमलराज सिंघवी, मर्यादा कुमार कोठारी की विशेष उपस्थिति रही।

पर्यावरण पर विशाल सभा एवं रैली

नई दिल्ली, 12 जनवरी। भारत सरकार का जीव-जंतु कल्याण बोर्ड, पर्यावरण मंत्रालय ने सीजीओ कॉम्प्लेक्स लोधी रोड़ पर्यावरण मंत्रालय के प्रांगण में एक विशाल सभा और रैली का आयोजन किया गया। सभा में उपस्थित गणमान्य वक्ताओं ने जीव-जंतु संरक्षण एवं पर्यावरण प्रदूषण को रोकने हेतु अपने महत्वपूर्ण विचार रखे।

अणुव्रत महासमिति के उपमंत्री डॉ. बी.एन. पांडेय ने लोगों को पर्यावरण प्रदूषण की रोकथाम हेतु जागरूक रहने की बात कही। अणुव्रत महासमिति के सहायक कार्यालय प्रभारी एल.आर. भारती ने पर्यावरण शुद्धि रैली में अणुव्रत महासमिति द्वारा प्रकाशित पर्यावरण शुद्धि साहित्य एवं पेम्फलेटों का वितरण किया।

अणुव्रत द्वारा जटिल समस्याओं का समाधान

श्रीङ्गरगढ़ 9 जनवरी। जैन दर्शन कार्यशाला में भारतीय दर्शन परंपरा और समाज नीति विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए दिल्ली दूरदर्शन के पूर्व निर्देशक प्रो. मधुकर लेले ने कहा कि आधुनिक भारत के तीन ऐसे दार्शनिक महापुरुष हुए हैं जिनके जीवन दर्शन और शिक्षा ने भारतीय समाज का मार्ग दर्शन किया है। प्रथम नाम है स्वामी विवेकानन्द का जिन्होंने उन्नीसवीं सदी के अंतिम चरण में भारतीय दर्शन और जीवन पद्धति की गौरव गाथा न केवल पश्चिमी देशों में फैलाई अपितु भारत की युवा पीढ़ी को नई दार्शनिक चेतना दी और उसे स्वतंत्रता एवं सामाजिक उत्थान के लिए तैयार किया। दूसरा नाम है महात्मा गांधी का, जिन्होंने अपने पूरे सामाजिक जीवन को सत्य के प्रयोग के रूप में जीया। तीसरा

नाम है आचार्य तुलसी का, जिनका जीवन कार्य और दर्शन संप्रदाय की परिधि से बाहर निकलकर समस्त भारतीय जनमानस व पूरी मानवता को संबोधित है। वैज्ञानिक उपलब्धियों के बूते पर फलफूल रहा भोगवाद, सामाजिक भ्रष्टाचार और धार्मिक उन्माद जैसी जटिल समस्याओं का समाधान आचार्य तुलसी के अणुव्रत दर्शन से हो सकता है।

प्रो. मधुकर लेले ने कहा कि अणुव्रत आन्दोलन जीवन का संयम दर्शन है। यह जीवन चलाने की प्रक्रिया नहीं, जीवन को संयत करने की साधना है। उन्होंने कहा कि अणुव्रत दर्शन के दृष्टा आचार्य तुलसी आधुनिक युग में नैतिकता और धर्मक्रांति के पुरोधा हैं। मधुकर लेले ने अणुव्रत दर्शन पर विभिन्न दृष्टिकोणों से प्रकाश डाला।

मैना देवी नाहर का निधन

बैंगलोर, 24 दिसंबर। बैंगलोर निवासी देवराज नाहर की धर्मपत्नी मैना देवी नाहर का 56 वर्ष की उम्र में अस्वस्थता के चलते अकस्मात निधन हो गया। मैना देवी नाहर एक संघनिष्ठ एवं कर्तव्यनिष्ठ महिला थी। से संघ एवं संघपति के प्रति पूर्ण रूप से समर्पित थी। उनके निधन से बैंगलोर महिला समाज को असहनीय क्षति हुई है। मैना देवी नाहर अत्यंत सरलमना, सुहृदया, अनुशासिता एवं संयमित होने के साथ-साथ सेवाभावी महिला थी। उनका आत्मीयता भाव विरल था। संक्षेप में कहा जाय तो वह एक कुशल गृहिणी थी। धैर्य एवं गंभीरता के धनी देवराज नाहर ने अपनी धर्मपत्नी की अस्वस्थता के दौरान जो सेवा की वह बेजोड़ है। परिवारजनों ने भी सेवार्थम का कर्तव्य बखूबी निभाया है। अणुव्रत आंदोलन के प्रचार-प्रसार एवं अन्य सामाजिक संस्थानों में नाहर परिवार का योगदान स्मरणीय है। संपूर्ण परिवार मैना देवी द्वारा प्रदत्त सुसंस्कारों से ओत-प्रोत है।

उनके निधन पर अणुव्रत महासमिति के संरक्षक डॉ. महेन्द्र कर्णावट, अध्यक्ष निर्मल एम. रांका एवं उपाध्यक्ष जी.एल. नाहर ने भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनकी आत्मा के भावी आध्यात्मिक विकास की मंगल कामना की। अणुव्रत परिवार की भावभरी श्रद्धांजलि एवं आराध्य से यही अभ्यर्थना है कि नाहर परिवारजनों को इस असहनीय क्षति को समभाव से सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

व्यक्तित्व विकास के लिए जीवन विज्ञान

श्रीङ्गरगढ़, 3 जनवरी। मुनि किशनलाल ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय के छात्रों को सभा भवन में संबोधित करते हुए कहा जीवन विज्ञान जीवन के नियमों की खोज है। जीवन विज्ञान शिक्षा का नया आयाम है। जीवन विज्ञान जीने की कला है। आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा दिया हुआ बीजरूप अवदान जीवन विज्ञान है। जीवन विज्ञान से स्वभाव, आदतों में परिवर्तन होता है। जीवन विज्ञान से शिक्षा जगत में अभिनव क्रांति आ सकती है। उन्होंने कहा कि महाप्राण ध्वनि से आवेश का संतुलन होता है। वाणी मधुर होती है। स्मरण शक्ति विकसित होती है। मुम्बई के स्कूल में हुए एक शोध से बोर्ड की परीक्षा में विद्यार्थियों की अंकतालिका में 25 प्रतिशत की अंक वृद्धि हुई। जिन विद्यार्थियों को जीवन विज्ञान के प्रयोग, कायोत्सर्ग, प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा और संकल्प के प्रयोग कराये गये। उनमें यह विकास पाया गया। जिन्होंने प्रयोग नहीं किए उनके

अंक की तालिका 50 प्रतिशत ही रही, जबकि प्रयोगकर्ताओं की अंक तालिका 75 प्रतिशत रही।

मुनि किशनलाल ने आगे बताया कि जीवन विज्ञान के प्रयोग सघन और सरल है। नवमी और दसवीं कक्षा में, जीवन विज्ञान की एक इकाई 25 नम्बर की है। प्रार्थना सभा में जीवन विज्ञान के प्रयोगों से विद्यार्थियों में अनुशासन, अभय और विनम्रता का विकास होता है।

युवाचार्य महाश्रमण ने विद्यार्थियों को आशीर्वाद देते हुए कहा विद्या, विनय और विवेक द्वारा श्रेष्ठ विद्यार्थी बना जा सकता है। विद्यार्थी अनुशासन और शालीनता से श्रेष्ठ बन सकता है। जीवन विज्ञान प्रयोगों से विद्यार्थी अपना विकास कर सकते हैं।

समण सिद्धप्रज्ञ ने प्रार्थना सभा को निर्धारित प्रयोग करवाये। जीवन विज्ञान प्रशिक्षक गिरिजा शंकर दुबे ने कार्यक्रम का समायोजन किया। कार्यक्रम में अध्यापकगण भी उपस्थित थे।

आतंकवाद को आत्मवाद में बदलें

भिलाई, 31 दिसंबर। नया वर्ष हर नागरिक के लिए नव उल्लास लेकर आए इसके लिए आवश्यकता है हम हमारे जीवन में नव वर्ष का शुभ संकल्प व चिंतन शुभ विचार के साथ करना प्रारंभ करें तब ही नव वर्ष हमारे लिए तथा देश के नागरिकों के लिए मंगलमय होगा। उक्त विचार मुनि भूपेन्द्र कुमार ने संभागियों को संबोधित करते हुए व्यक्त किए।

नेहरू नगर के पोरवाल प्रेक्षा भवन में आयोजित 31 दिसंबर 09 से 1 जनवरी 2010 तक आयोजित दो दिवसीय कार्यक्रम में शामिल होने मुनिश्री भिलाई पहुंचे। इस वार्ता में मुनिश्री ने कहा अहिंसा, अनेकांत व अपरिग्रह भारतीय

संस्कृति के मूल तत्व रहे हैं। हम हमारे आदर्शों से पलायन करते जा रहे हैं। इसीलिए आज देश में अराजकता, असहिष्णुता, आतंकवाद, नक्सलवाद व माओवाद जैसी समस्याएं हमारे सामने मुंह बाए खड़ी हैं। यदि हमें को इन समस्याओं से छुटकारा पाना है, देश के भविष्य को उज्ज्वल बनाना है, हर व्यक्ति के जीवन को आनंदमय बनाना है तो हमें एकता, अनुशासन, सह-अस्तित्व व समर्पण के भावों को जागृत करना होगा।

आज पुनः देश में गांधी, विनोबा व राष्ट्रसंत आचार्य तुलसी जैसे महापुरुषों की अत्यंत अपेक्षा है।

श्रीडूंगरगढ़ में विराट अणुव्रत विद्यार्थी सम्मेलन अणुव्रत का यह सन्देश - नशामुक्त हो सारा देश



श्रीडूंगरगढ़, 9 जनवरी। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ, युवाचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में स्थानीय अणुव्रत समिति एवं आचार्य महाप्रज्ञ प्रवास व्यवस्था समिति के तत्वावधान में सभा भवन में विराट अणुव्रत विद्यार्थी सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें कस्बे के 38 विद्यालय के लगभग 5 हजार विद्यार्थियों ने भाग लिया। सभी विद्यार्थियों ने “अणुव्रत का यह संदेश - नशामुक्त हो सारा देश” का नारा गुंजायमान किया। अणुव्रत आन्दोलन द्वारा चलाये जा रहे नशा मुक्ति अभियान को उस समय बल मिला जब 5 हजार विद्यार्थियों ने संपूर्ण कस्बे में विशाल रैली द्वारा नशामुक्ति के संदेश को संपूर्ण भारत में फैलाने का जोश दिखाया। कस्बे के मार्गों में गूँजे इन अणुव्रत उद्घोषों के द्वारा व्यसनमुक्त समाज के निर्माण का संकल्प जागृत हुआ।

युवाचार्य महाश्रमण ने सम्मेलन को संबोधित करते हुए कहा बालपीढ़ी बड़े के आचरण को देखकर अपनी आदतों का निर्माण करती है। जिन क्षेत्रों में अभिभावक या आस-पास के लोग नशे में लिप्त रहते हैं तो बच्चे भी नशे की पकड़ में

आ जाते हैं। उन्होंने बालक-बालिकाओं को नशा-मुक्ति का संकल्प दिलाते हुए “रघुकुल रीत सदा चली आई - प्राण जाये पर वचन न जाई” की तर्ज पर संतों के सम्मुख लिये गये संकल्प को न तोड़ने की प्रेरणा दी। सभी बच्चों ने अपने हाथ खड़े कर नशामुक्त रहने का संकल्प लिया। युवाचार्य महाश्रमण ने भावीपीढ़ी को प्रामाणिक जीवन जीने का आह्वान करते हुए नैतिकता के लिए देश का नेतृत्व करने की योग्यता अर्जित करने की मंगलकामना की।

मुख्य अतिथि प्रारंभिक शिक्षा निदेशक श्यामसुन्दर बिस्सा ने कहा स्वयं अनुशासित रहने वाला व्यक्ति ही दूसरों को अनुशासित रख सकता है। हमारे आचरण और दर्शन में अन्तर है तो इससे बड़ी घात समाज के साथ नहीं हो सकती। बच्चों को अनितिपूर्वक आगे बढ़ाने वाले का सम्मान न हो। सत्यता का संधान करें और आचरण का ज्ञान करें तो जीवन उन्नत होगा।

अणुव्रत प्रभारी मुनि सुखलाल ने कहा अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को उज्ज्वल बना देते हैं। मुनि राकेशकुमार ने कहा नशा नाश

का द्वार है। नशे के कारण गरीबी से उबर पाना कठिन होता है। अणुव्रत समिति श्रीडूंगरगढ़ ने गत वर्ष जो अणुव्रत आंदोलन को गति दी, वह प्रशंसनीय है। समिति के मंत्री सुरेन्द्र चूरा के नेतृत्व में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया वह अति प्रशंसनीय है।

अणुव्रत समिति के मंत्री सुरेन्द्र चूरा ने विद्यार्थी अणुव्रत की चर्चा करते हुए विद्यार्थियों को अणुव्रत आंदोलन के साथ जुड़ने का आह्वान किया तथा अणुव्रती बनने पर बल दिया। उन्होंने गत वर्ष मुनि राकेशकुमार के सान्निध्य में हुए अणुव्रत कार्यों की झलक प्रस्तुत करते हुए कस्बे को

नशामुक्त बनाने का संकल्प व्यक्त किया। मुनि दिनेशकुमार ने मधुर स्वरों में गीत की प्रस्तुति देते हुए बालकों को सद्आचरण की प्रेरणा दी। विद्यार्थी समूह की ओर से छात्रा मुस्कान बरड़िया ने युवाचार्य के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए का आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि सुधाकर ने किया।

इस अवसर पर अणुव्रत महासमिति के उपाध्यक्ष जी.एल. नाहर, स्थानीय समिति के अध्यक्ष जगदीश तावणियां, सत्यनारायण स्वामी, मनोज गुंसाई, संपतराम भादाणी, लीलाधर शर्मा, डॉ. राधा किशन सोनी, प्रवास व्यवस्था समिति के संरक्षक बनेचंद मालू, कन्हैयालाल छाजेड़, हेमराज श्यामसुखा, रिद्धकरण लूणिया, विजयसिंह पारख सहित अनेक सामाजिक संस्थाओं के पदाधिकारी उपस्थित थे। सम्मेलन की सफलता में मनोज गुंसाई, सत्यनारायण स्वामी, जगदीश तावणियां का सराहनीय श्रम रहा। श्यामसुन्दर बिस्सा का साहित्य द्वारा सम्मान किया गया। जी. एल. नाहर व सुरेन्द्र चूरा ने अभिनंदन पत्र भेंट किया।

वक्त

है

भाषाचार

से

लाड़नौ का

जरूरतमंदों को साड़ी वितरण

मुंबई, 19 दिसंबर। पिछले 13 वर्षों से योग साधना के माध्यम से जन-जन की सेवा में समर्पित संस्था प्रेक्षाध्यान योग साधना केन्द्र (मुंबई) द्वारा दामोदर वाड़ी अशोक नगर कादिवली (पूर्व) मुंबई में गरीब एवं जरूरतमंद सैकड़ों महिलाओं को साड़ी एवं खाद्य सामग्री बांटी गयी। इस अवसर पर महिलाओं के लिए प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन किया गया। शुभारंभ केन्द्र की सह संचालिका विमला दूगड़, राजुल बेन व भारती बेन ने प्रेक्षाध्यान गीत के संगान से किया। प्रेक्षा प्रशिक्षक पारसमल दूगड़ एवं उनके सहयोगियों ने प्रेक्षाध्यान के प्रयोग करवाये। योग साधना के महत्व को समझाते हुए पारसमल दूगड़ ने 'पहला सुख निरोगी काया' की

उक्ति को चरितार्थ करते हुए निरोग रहने के विविध उपायों पर प्रकाश डाला।

शिविर में नरेश भाई, महेन्द्र भाई, हर्षद भाई, उपेन भाई, भरत भाई, जगजीवन भाई, दीमन भाई, अशोक भाई, हिम्मत भाई, बाबू भाई, भरत भाई जांगला, विमल पटेल, भुवनेश भाई, भावना बेन, जयंती भाई, रमणिक भाई, कल्पना बेन, पुष्पा बेन, उषा बेन, नवीन भाई जवेरी, उर्वशी बेन, मित्तल बेन, ज्योति बेन, संपत कोठारी, केशुलाल, पारस भाई, खान सा. इत्यादि कार्यकर्ताओं का विशेष सहयोग रहा। प्रमुख अतिथि आशीष सिंह, राजेश साल्वे, बिपिन शुक्ला, रविन्द्र राजभर, विनोद पापडे, संतोष तिवारी सहित अन्य लोग उपस्थित थे।

दूरस्थ शिक्षा की महती आवश्यकता

लाडनूँ। दूरस्थ शिक्षा हमारे विशाल देश के लिए वरदान साबित हो रही है। भारत में सर्वप्रथम दिल्ली विश्वविद्यालय ने इस शिक्षा की शुरुआत की थी। तब यह शिक्षा पत्राचार पाठ्यक्रम के रूप में जानी जाती थी। शिक्षाशास्त्रियों एवं भारत सरकार के चिंतन की फलश्रुति के रूप में 1985 में इन्दिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय दूरस्थ शिक्षा की दृष्टि से अस्तित्व में आया। आज यह विश्वविद्यालय सम्पूर्ण एशिया में दूरस्थ शिक्षा का आदर्श विश्वविद्यालय बन गया है। इसकी सफलता को देखते हुए अनेक प्रांतों में मुक्त विश्वविद्यालयों की स्थापना हुई है।

राजस्थान में 1987 में कोटा मुक्त विश्वविद्यालय की स्थापना हुई, जिसका कालांतर में नामकरण वर्धमान महावीर मुक्त विश्वविद्यालय रखा गया। मुक्त विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त कई ऐसे विश्वविद्यालय हैं जहाँ शिक्षा

की द्वैत पद्धति अर्थात् नियमित शिक्षा एवं दूरस्थ शिक्षा दोनों प्रभावी ढंग से चल रहे हैं। जिनमें जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय लाडनूँ, प्रमुख है। इस विश्वविद्यालय का जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान एवं योग पाठ्यक्रम अत्यन्त लोकप्रिय है। इन्दिरा गाँधी मुक्त विश्वविद्यालय का राष्ट्रीय सुरक्षा पाठ्यक्रम काफी चर्चित हो रहा है। ये विचार दूरस्थ शिक्षा निदेशालय के उपनिदेशक डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी ने जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में आयोजित शिक्षा विषयक संगोष्ठी में बोलते हुए व्यक्त किए। डॉ. त्रिपाठी ने विभिन्न विश्वविद्यालयों के उपयोगी पाठ्यक्रमों का नामोल्लेख करते हुए जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा के अधिस्नातक, स्नातक एवं प्रमाणपत्र पाठ्यक्रमों पर विस्तार से प्रकाश डाला।

वैज्ञानिक तकनीक है प्रेक्षाध्यान

टॉलीगंज, 22 दिसंबर। साध्वी कनकश्री के सान्निध्य में टॉलीगंज (कोलकाता) रीजेन्ट पार्क में प्रेक्षाध्यान शिविर का आयोजन हुआ। इसमें 90 भाई-बहनों ने भाग लेकर प्रेक्षाध्यान का सैद्धांतिक व प्रायोगिक प्रशिक्षण लिया। साध्वीश्री ने शिविरार्थियों को संबोधित करते हुए कहा आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा लम्बी साधना से खोजी गयी प्रेक्षाध्यान पद्धति से व्यक्तित्व का संपूर्ण रूपांतरण संभव है। यह एक आध्यात्मिक वैज्ञानिक आविष्कार है। प्रेक्षा स्वयं को देखने, जानने एवं स्वयं में बदलाव लाने की प्रक्रिया है। इससे चैतन्य जागरण के साथ चित्त की पवित्रता और एकाग्रता का विकास होता है। तनाव मुक्ति, रोग मुक्ति और व्यसन मुक्ति के लिए यह एक

चमत्कारिक विधि है। प्रेक्षा और अनुप्रेक्षा के नियमित प्रयोग एवं अभ्यास से वृत्तियों में बदलाव आता है। गलत आदतें सहजतया छूट जाती हैं और अच्छी आदतों का निर्माण होता है। साध्वी मधुलता ने कहा प्रेक्षाध्यान का पहला सूत्र है स्वयं के द्वारा स्वयं को देखो। दूसरा सूत्र है स्वयं सत्य को खोजो और सब के साथ मैत्री करो। साध्वीश्री ने प्रेक्षाध्यान के विभिन्न चरणों की समग्र जानकारी के साथ चैतन्य केन्द्रों के बारे में विस्तार से बताया। साध्वी मधुलेखा ने भी अपने विचार रखे। प्रशिक्षक कुलदीप मुणोत ने कायोत्सर्ग तथा जीवन विज्ञान प्रशिक्षक सुरेन्द्र कुमार सेठिया ने योगासन एवं सूक्ष्म यौगिक क्रियाओं का प्रयोग कराया। आभार ज्ञापन तिलोक चंद ने एवं संचालन पवन सुराणा ने किया।

प्रेक्षाध्यान से मन को प्रशिक्षित करें

सादुलपुर। साध्वी यशोमती के सान्निध्य में एवं साध्वी रचनाश्री के निर्देशन में महिला मंडल के तत्वावधान में राजगढ़ व सादुलपुर की कन्याओं हेतु संयुक्त शिविर का आयोजन हुआ। साध्वी जयंतयज्ञ ने कन्याओं को "स्मरण शक्ति" के लिए विविध प्रयोग बताए। साध्वी यशोमती ने अपने मर्मज्ञ विचारों को प्रस्तुत करते हुए कहा कन्याएं सुसंस्कारों की सम्पदा को प्राप्त कर अपना आध्यात्मिक विकास करें। वाणी विवेक का विकास करें। संस्कारी कन्याएं ही स्वस्थ समाज का निर्माण कर सकती हैं।

साध्वी रचनाश्री ने कहा जीवन शैली पर ध्यान देना बहुत जरूरी है। केवल बनावटी, दिखावट और सजावट का नशा न चढ़ें। जीवन में चरित्र (आचरण) जगमगाहट भी हो। कन्याएं संयम के वृक्ष पर समता त्याग वैराग्य के पुष्पों के लिए एवं सौभ को प्राप्त करें।

साध्वी यशोमती ने कहा जीवन में मिठास बनी रहे इसके लिए मधुर व्यवहार जरूरी है। जैसे मीठा खाने में प्रिय है, वैसे ही व्यवहार भी मधुर है। संबंधों में सुवास तब रहेगी जब आप वाणी का उपयोग विवेक पूर्वक करेंगे। आपको अपनी व्यस्तता में भी अपनों का समय दे सकने का एवं बुजुर्गों पर अपनापन लुटाने का चिंतन करना जरूरी है। रिश्तों में गरमाहट भरने के लिए आवश्यक है सभी के साथ सौहार्दपूर्ण वार्तालाप, प्रेमपूर्ण व्यवहार, शिकवा-शिकायत की मनोवृत्ति का त्याग हो। साध्वीश्री ने आगे कहा स्वार्थपूर्ण सम्बन्ध न हो। धनोपार्जना में धर्म। उपासना जरूरी है। भोग और त्याग, संयम और असंयम, व्रत और अव्रत में संतुलन बनाये रखें। सरोज कोचर एवं अन्य कार्यकर्ताओं का सराहनीय श्रम रहा।



शिशु स्वास्थ्य परीक्षण शिविर

कोलकाता, 2 जनवरी। साध्वी कनकश्री के सान्निध्य में सभा भवन में निःशुल्क शिशु स्वास्थ्य परीक्षण और प्रतियोगिता शिविर का आयोजन किया गया। साध्वी कनकश्री ने कहा नववर्ष के शुभारंभ में शिशु स्वास्थ्य परीक्षण और प्रतियोगिता शिविर की आयोजना रचनात्मक उपक्रम है। शारीरिक स्वास्थ्य के लिए जीवन शैली, खान-पान, शयन जागरण, इन सबका संतुलित होना आवश्यक है। श्रम की कमी, फास्ट फूड और कोल्ड ड्रिंक ये स्वास्थ्य के शत्रु हैं। अधिक टी.वी. देखना भी हानिकारक है। बच्चों के मानसिक, भावनात्मक और आध्यात्मिक स्वास्थ्य के लिए कई महत्वपूर्ण गुर बताते हुए कहा इष्ट मंत्र का जाप, योगासन और प्राणायाम से आंतरिक शक्तियां जागती हैं। अच्छी आदतों का निर्माण होता है। साध्वीश्री ने संपूर्ण स्वास्थ्य की दृष्टि से 'आई क्यू' के साथ 'ई क्यू' और 'एस क्यू' के विकास पर भी ध्यान केन्द्रित करने पर

बल दिया। डॉ. बाबूलाल विनायकिया अपने विशेषज्ञ दल के साथ उपस्थित थे। सुन्दर देवी हिरावत विशेष अतिथि थीं।

दक्षिण सभा के अध्यक्ष सुरेन्द्र दूगड़ ने स्वागत भाषण में सभी सम्मानित अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. बाबूलाल ने शिविर की जानकारी देते हुए बताया कि इसमें 2 साल से 12 साल के बच्चों का आंख, दांत व सामान्य स्वास्थ्य की जांच होगी। इस अवसर पर अदान, बच्छावत, एवं नारायण ने महावीर की अहिंसा, के मूल में है आत्मतुला का सिद्धांत, इसके लिए आवश्यक है प्राणी मात्र के प्रति करुणा और संवेदनशीलता का विकास हो।

अनु विधावन आहार विद् ने बच्चों को आरोग्यदायी खान-पान की जानकारी दी। प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। शिविर में बच्चों को कॉपी-पेन व बिस्कुट वितरित किए गए। धन्यवाद ज्ञापन जतन देवी ने किया। संयोजन वीणा शामसुखा ने किया।

मंगल भावना स्नेह भोज का आयोजन

दिल्ली, 1 जनवरी। अणुव्रत आंदोलन के मुख्यालय अणुव्रत भवन दिल्ली में अ.भा. अणुव्रत न्यास द्वारा नववर्ष 2010 के उपलक्ष्य में शुभकामना एवं मंगल मिलन संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में अणुव्रत भवन में स्थित धर्मसंघ की केन्द्रीय संस्थाओं के पदाधिकारियों के अतिरिक्त अणुव्रत भवन में चल रही संस्थाओं के कर्मचारियों व अणुव्रत कार्यकर्ताओं ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

संगोष्ठी में अ.भा. अणुव्रत न्यास के प्रबंध न्यासी धनराज बोधरा, न्यास मंडल के न्यासीगण, कन्हैयालाल जैन, शांतिकुमार जैन, के.सी. जैन, गोविन्द बाफना,

पन्नालाल बैद, डॉ. सूरज सुराणा, अणुव्रत न्यास के पूर्व संयुक्त प्रबंध न्यासी सम्पतमल नाहटा, विकास परिषद् के महामंत्री डालमचंद बैद, दिल्ली सभा के अध्यक्ष विमल सुराणा, धनपत लूणिया, युवक परिषद् के अध्यक्ष राजेश बरडिया, अणुव्रत महासमिति के महामंत्री विजयराज सुराणा, दिल्ली प्रदेश अणुव्रत समिति के अध्यक्ष बाबूलाल दूगड़, मंत्री प्रकाश भंसाली, नरपत मालू एवं प्रमोद घोड़ावत इत्यादि उपस्थित थे। सभी ने एक-दूसरे को नववर्ष की शुभकामनाएं दीं एवं सुखी-समृद्ध जीवन की कामनाओं के साथ आचार्य महाप्रज्ञ के दिखाए रास्ते व आदर्शों पर चलने का संकल्प लिया।

पाठकों के स्वर

- ◆ अणुव्रत निरंतर मिल रहा है, आभारी हूं। 16-31 दिसंबर 2009 में आचार्य महाप्रज्ञ का आलेख "अविश्वास का हेतु है असत्य" ज्ञानवर्द्धक लगा। इसके अलावा मुनि किशनलाल का "सहयोग से बनता है समाज", कुसुम जैन का "नैतिकता की दिशाएं", भूरचंद जैन का "बढ़ता उपभोक्तावाद : प्रगति का सूचक" और स्वामी वाहिद काज़मी का "आधुनिक सभ्यता का अंधापन" आलेख अच्छे लगे। उनकी यह टिप्पणी कि हजारों पशु-पक्षियों का कत्ल, पैसा खर्च करके बीमारियां खरीदने का व्यापार सटीक है। रजनीकांत शुक्ल का लेख "कमजोर समझने की भूल" साहसी बच्ची मेहर की सच्ची कहानी बहुत अच्छी लगी। उसके घर का नौकर छोटू दो हत्याएं करने के बाद उसका भी कत्ल कर देना चाहता था। मेहर ने उसका डट कर मुकाबला किया, अपनी जान बचाई और उसे पुलिस के हाथों पकड़वाने में मदद की..... उसे वीरता पुरस्कार के लिए चुना गया। बच्चे वीर बनें वह एक मिशाल बनी। संपादकीय के दस वचन मूलमंत्र हैं। जो इस पर चले वही आगे बढ़े।

■ भगवान दास ऐजाज़

टी-451, बलजीत नगर, नई दिल्ली-110008

- ◆ लोकतंत्र की अस्मिता की रक्षार्थ प्रतिबद्धताबोधक एवं चिंतनपरक सिंहनाद जैसे संपादकीय (अणुव्रत 1-15 दिसंबर 2009) ने मुझे भी कुछ लिखने को प्रेरित-प्रवृत्त किया और परिणाम स्वरूप 'राष्ट्रीय अस्मिता को खतरा' शीर्षक से अपने विचार संप्रेषित किए। आपके प्रखर संपादकीय के संदर्भ में यह एक दोहरान पाठ होगा।

■ रूपनारायण काबरा

ए-438, किशोर कुटीर, वैशाली नगर, जयपुर - 302021 (राजस्थान)

- ◆ 'अणुव्रत' पाक्षिक का नया साल का नया रूप-रंग देखकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई। निखरा स्वरूप, आकर्षक कलेवर और सुंदर रचनाएं, इस पत्रिका को देशव्यापी पहचान दिलाती है। पूरी संपादकीय टीम बधाई की पात्र है। देशभर के चर्चित रचनाकार इस पत्रिका में एक साथ देखे जा सकते हैं। पत्रिका निरन्तर प्रगति पथ पर गतिमान रहे, यही मंगलकामनाएं।

■ सत्यनारायण 'सत्य'

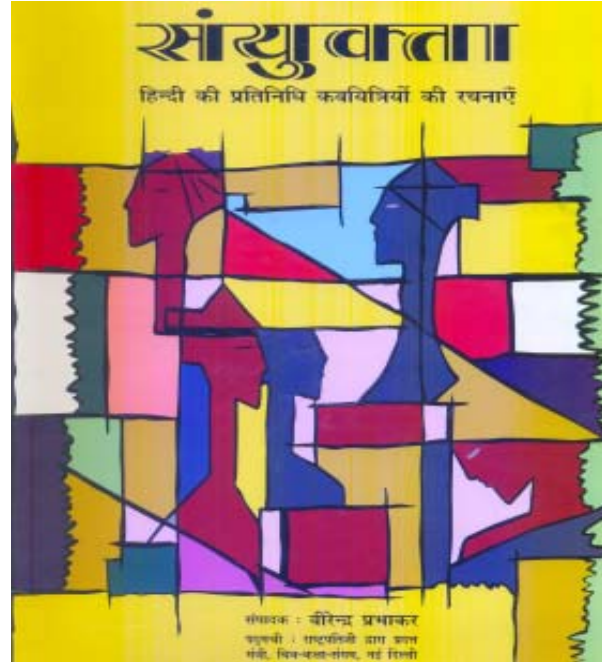
समता भवन के पास,

रायपुर (भीलवाड़ा-राजस्थान) 311803

चित्र-कला-संगम साहित्य, संगीत, नृत्य और विविध कलाओं के विकास एवं जनसाधारण में इनके प्रचार-प्रसार तथा नवोदित रचनाकारों और कलाकारों को प्रोत्साहित करने के क्षेत्र में अपनी सक्रियता बनाए हुए है।

चित्र-कला-संगम की अध्यक्ष विद्या बेन शाह, मंत्री पदमश्री वीरेन्द्र प्रभाकर एवं यशपाल जैन स्मृति की अध्यक्ष डॉ. मधुपंत का संयुक्त प्रयास साहित्य प्रेमियों एवं विविध कलाओं के कलाकारों को अवसर देकर एक सराहनीय एवं प्रशंसनीय कार्य कर रहा है। चित्र-कला-संगम जो अपने आप में एक सार्थक अर्थ लिए हुए है, इस स्वयंसेवी सांस्कृतिक-कला संस्था ने देश की नामचीन और प्रसिद्ध कवयित्रियों की रचनाओं का संकलन किया है 'संयुक्ता' के प्रकाशन द्वारा। गीत, नवगीत, मुक्त छंद, गजल, दोहे विभिन्न शैलियों की रचनाओं को संयुक्ता में समावेश कर प्रस्तुत पुस्तक को प्रकाशित कर हिन्दी साहित्य के विकास में आयोजकों ने इसके रूप को अपेक्षाकृत और व्यापक बनाते हुए एक महत्त्वपूर्ण कार्य किया है।

प्रस्तुत कृति में कवयित्रियों का संक्षिप्त परिचय एवं फोटो भी दिया है, जिनसे पाठकों को उनका सहज परिचय हो जाएगा। हिन्दी के साथ ही संस्कृत, सिंधी, पंजाबी और उर्दू की कवयित्रियां भी इस कृति में शामिल की गयी हैं। संयुक्ता निःसंदेह काव्य के विभिन्न पुष्पों का एक ऐसा सुंदर गुलदस्ता है जो अपनी मनमोहक महक से पाठकों को अवश्य रिझाएगा। सम्मिलित कवयित्रियों की रचनाएं वर्तमान महिला काव्य-मेधा का परिचायक है, जिन्होंने मानव के मनोभावों एवं विभिन्न विधाओं की प्रस्तुति का सूक्ष्म चित्रण प्रभावी ढंग से किया है। प्रत्येक रचना भाव-भाषा, संवाद सम्प्रेषण की दृष्टि से सुघड़ है। पुस्तक में ऐसी कविताएं भी हैं जिसमें जीवन के सकारात्मक पहलू छोटे-छोटे काव्य पद मनोहारी रूप में प्रस्तुत किये गए हैं। इसमें अनेक रचनाएं अपने आप



संयुक्ता

एल.आर. भारती

में स्वतंत्र चिंतन का बिन्दु हैं जिसको पाठक स्वतः ही ग्रहण करने में सक्षम होगा, जैसे-जैसे वह इनके कोमल स्पर्श का अनुभव करेगा। कविता और गीत, गजल, दोहे अंतर्मन की आकुलता और वेदना की अर्हता से प्रभावी बनते हैं जो इनसे अनुभव होता है। कविता केवल भावावेश ही नहीं होती, उसकी सार्थकता और समर्थता मन की विराट अस्मिता में रहती हैं, जहाँ से वह किसी विशेष क्षण में मन को मुक्त कर भावनाओं का संयोजन करती है। इस दृष्टि से 'संयुक्ता' की प्रत्येक रचना स्वबोध और आत्म-साक्षात्कार का परिचायक है।

संयुक्ता की रचनाएं आज के परिवेश की सामाजिक, सांस्कृतिक व राजनीतिक विसंगतियों पर खुलकर चोट करती दिखती हैं। रचनाओं में सामाजिक सरोकारों की सनसनाहट उजागर होती है।

यही नहीं, जीवन के विविध आयामों को छूकर रचनाकारों ने विभिन्न संभावनों, समस्याओं और उनका हल जिस संवेदना

के साथ किया है उससे रचनाकार प्रगति, प्रकृति और जनजीवन के साथ अपने को जुड़ा पाता है। मानवीय जीवन मूल्यों को उजागर करते हुए अनेक रचनाओं का कलेवर निःसंदेह प्रशंसनीय है।

आशा है कि संयुक्ता का यह प्रयास और कृति समस्त पाठकों को पढ़ने के लिए विवश एवं प्रेरित करेगी। पुस्तक की छपाई साफ-सुथरी एवं दोषरहित है। प्रत्येक कविता के साथ किया गया रेखांकन एवं फूल-पत्तियों का चित्रण कलात्मक है। पुस्तक का मुख पृष्ठ सुंदर और आकर्षक है। कवयित्रियों को साधुवाद एवं शुभकामनाएं। संपादक की संयोजन कला एवं प्रयत्न स्तुत्य है।

पुस्तक : संयुक्ता
संपादक : वीरेन्द्र प्रभाकर
पृष्ठ : 200
पता : 29-30 नार्थ एंड कॉम्प्लैक्स,
रामाकृष्ण आश्रम मार्ग,
नई दिल्ली-110001

रोशनारा रोड, सब्जी मंडी, दिल्ली-7